अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि

(लघुकथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-42-6

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.-
९५७२४५०४०५,
९९३१६५४७४२

"Ardhangani.. Sarojani.. Subhadra.. Bhaik Sineh ityadi" *: A collection of maithili short stories by Jagdish Prasad Mandal.*

ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: "अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि"

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-कविता-नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ ई अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहलाह अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ व्याख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीवनक यथार्थकेँ यथावत् चित्रित कए मानवीय संवेदनाकेँ उद्बुद्ध करब हिनक रचना सबहक प्रधान विशिष्टता रहलनि अछि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास ऐ तीनू कारकसँ सम्बलित हिनक रचनावलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तकर समाधानक दिशा भेटैत अछि। वर्त्तमान जीवनमे होइत नित्य नूतन परिवर्त्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करब हिनक कथाक विषय-वस्तु रहलनि अछि जकरा ई सहज रीतियें प्रस्तुत करैत रहल छथि।

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा थिक। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा-निराशा, सुख-दु:ख, हर्ष-उल्लास आ जीवन-संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक ओ राजनीतिक जीवनमे होइत परिवर्त्तन सभकेँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा ई अपन कथा सभकेँ प्रवाहमयता, रोचकता ओ विश्वसनीयताक संग प्रस्तुत करबामे सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह अछि।

हिनक कथासंग्रह अर्द्धांगिनी बीस गोट कथाक समुच्चय थिक। ऐ कथा सभमे नोकरिहाराक जीवनक संत्रास, परिश्रमी कृषकक उल्लास, सांस्कृतिक पावनि-तिहारमे पैसल अन्धविश्वासक प्रति जुगुप्सा, ग्राम्य जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्व, क्रमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्या आदिक सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक लोकमंगलक कामना देखि पड़ैत अछि। युगीन समस्या ओ समस्याक कारण एवं तकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता हिनक वस्तु-विन्यासकेँ प्रेरक-प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जइमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।

ऐ संग्रहक पहिल कथा थिक दोहरी मारि। ऐ कथामे पुरुष पात्र गुलाबक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि। अवकाश प्राप्त प्रोफेसर गुलाब कतोक वर्षसँ डाइबीटीज ओ ब्लड-प्रेसर सदृश बेमारी सभसँ ग्रसत् छथि। गामक घर-घराड़ी पर्यन्त बेचि शहरमे बनाओल मकानमे पति-पत्नी एकाकी रहैत छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहैत छन्हि तँए हिनकालोकन्हि सुधि लेनिहार कियो नै छन्हि। नागर जीवनक चाकचिक्यसँ सम्मोहित भऽ ई शहरी जीवनमे बसि तँ गेल छथि, मुदा चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गंदगी आदि समस्यासँ ग्रस्त शहरी ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण वातावरणक प्रति आकर्षण जगैत छन्हि। हद तँ तखन भऽ जाइत अछि जखन पुत्र द्वारा ई समाद भेटैत छन्हि जे पौत्रक मूड़न घरपर नै भऽ कऽ वैष्णो देवीमे होएतनि, जइ लेल हुनकोलोकनिकँ ओहीठाम एबाक आमंत्रण भेटैत छन्हि आ ओ अपनाकँ अशक्य बूझैत छथि।

ऐ कथाक माध्यमे मण्डलजी साम्प्रतिक जीवनमे उपकल विस्थापनक समस्याक कारणे अवस्था दोषग्रस्त बुजुर्ग पीढ़ीक व्यथाकँ अभिव्यक्ति प्रदान कएलनि अछि। ऐ समस्याक कारणे नोकरी-चाकरी भेला उत्तर लोक शहरमे बसि ग्राम्यजीवनक सौहार्दसँ तँ वञ्चित होइते छथि संगहि वृद्धावस्थामे जखन परिवारोक लोक हुनक संग छोड़ि दैत छथिन तँ अपनाकँ वंचित अनुभव करए लगैत छथि।

एही समस्याकँ संग्रहक दोसर कथा "केना जीब" मे सेहो उठाओल गेल अछि। एकर पुरूष पात्र सेहो अवकाशप्राप्त प्रोफेसर छथि। ई बेटाकँ पढ़ा-लिखा कऽ विदेश पठयबामे सफल तँ होइत छथि मुदा बेटा विदेशी सभ्यता ओ संस्कृतिक रंगमे रमि जाइत छन्हि आ हिनकालोकन्हि खोजो-पुछारि नै कऽ पबैत छन्हि। परिणामत: दुनू परानी एकाकी जीवन बितएबाक हेतु बाध्य होइत छथि। एहन स्थितिमे हिनकालोकन्हि लग एकमात्र अवलम्ब बचि जाइत छन्हि- जिजीविषा ओ संघर्ष। यएह जिजीविषा ओ संघर्ष करबाक मानसिकता ऐ कथाक युग जीवनक अनुकूल संदेश थिक जे एकरा पूर्व कथासँ भिन्न आ स्तरीय बनबैत अछि। ऐ कथाक वृद्ध दम्पत्ति कखनो हताश आ न्िराश नै देखि पड़ैत छथि।

संग्रहक तेसर कथा ग्राम्य जीवनक परिश्रमी कृषकक गाथा थिक जे अपन परिश्रमक बलेँ अपन भाग्यविधाता बनल अछि। नवान शीर्षक ऐ कथामे मिथिलाक लोक जीवनक विभिन्न खण्डचित्र उपस्थित कएल गेल अछि यथा

वृक्ष-लतादिक पहिल फड़ देवताकेँ चढ़ायब, गाए बिआएलापर महाद्वेवकेँ दूधसँ अभिषेक करब आदि। ग्राम्य जीवनमे पसरैत जातीय ओ साम्प्रदायिक विद्वेष दिस सेहो ऐमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा ऐ कथामे मिथिलाक लोकजीवनक आर्थिक स्थितिकेँ बदहाल करएबला जइ समस्यापर विशेष दृष्टिनिक्षेप कएल गेल अछि, से थिक बाढ़िक समस्या। ऐ समस्याक कारणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त भऽ जाइत अछि। तथापि ऐ कथाक नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नव किस्मक धान उगबय लगैत अछि, तीमन-तरकारीक नगदी फसिल उपजाबय लगैत अछि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीवनकेँ खुशहाल बना लैत अछि, वस्तुत: ऐ वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक कृषक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उद्देश्य छन्हि।

संग्रहक चारिम कथा थिक ‘‘तिलासंक्रान्तिक लाइ’’ ऐ कथामे ग्राम्यजीवनमे पसरल अन्धविश्वासपर प्रहार कएल गेल अछि। तिलासंक्रान्तिक एकटा एहन पर्व थिक जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनाओल जाइत अछि। ऐ दिनसँ सूर्य उत्तरायण भऽ जाइत छथि आ क्रमश: शीत ॠतु वसन्त आ गृष्म दिस बढ़य लगैत अछि। मिथिलाक प्रशस्त भोजन चूड़ा-दही ऐ दिन गरीबो-गुरबा धरि खाइते अछि। चूड़ा ओ मुरहीक लाइ, तिलबा आदि देवताकेँ चढ़ाय प्रासाद रूपेमे ग्रहण करब ऐ पावनिक कृत्य होइत छैक। शीत ॠतु रहलाक बादो मिथिलाक ग्राम्यजीवन ऐ पर्वक ओरिआओनमे मास दिन पूर्वहिसँ लागि जाइत अछि। मुदा ऐ पर्वक प्रसाद ग्रहण करबाक हेतु प्रात: स्नान जरूरी बूझल जाइत छैक। मिथिलामे ई अपवाद सेहो पसरल छैक जे ऐ दिन जे कियो भोरे नदी वा पोखरिमे डूब दैत छथि हुनका नदी-देवता तत्काले लाइ धरा दैत छथिन। एही अपवादपर विश्वास कऽ गोपाल नामक एकटा नेना बारहे बजे रातिमे नदीमे डूब देबए चल जाइत अछि आ ठंढसँ ग्रस्त भऽ जाइत अछि। ग्राम्यजीवनक अन्धविश्वासी समाजकेँ ऐ कथाक माध्यमसँ ई संदेश देल गेल अछि जे वस्तुत: ई पावनि प्रकृति-परिवर्त्तनपर आधारित्ति अछि आ ऐमे बिनु पाखंड कएने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समैपर स्नान करबाक चाही, नै कि अन्धविष्वासमे पड़ि रोगग्रस्त भऽ जएबाक चाही। हरड़ीवालीक उक्ति- ‘‘अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब’’ अन्धविष्वासक प्रति बेस प्रहार कएलक अछि। कथामे ऐ पावन्कि तैयारीमे जुटल लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि।

पाँचम कथा ‘‘भाइक सिनेह’’ भाइ-भैयारीक आपसी कलह ओ आर्त्यानक प्रेमक कथा थिक। शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू भँइ एक दोसराक प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति ओ बन्धुत्वक भाव रखैत छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारमे भिन्न-भिनाउज भऽ जाइत छन्हि। भिन्न-भिनाउजक मूलमे अर्थसत्तापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भाव जगैत छन्हि तँ दुनू एकदोसराक दु:ख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। ऐ कथामे कृषक जीवनमे पारस्परिक सहयोग, सद्भाव ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन देखि पड़ैछ।

संग्रहक छठम कथा ‘‘प्रेमी’’ वस्तुत: प्रेमकथाक रूपमे लिखल गेल अछि मुदा ऐ कथामे रचनाकारक उद्देश्य समाजिक जीवनमे व्याप्त दहेज प्रथाक कुरीतिकेँ समाप्त करबाक संदेश सएह अभिव्यक्त भेल अछि। पक्षधर आ ज्ञानचन्द दू गामक छथि। दुनूमे प्रगाढ़ दोस्ती छन्हि। ज्ञानचन्दक पौत्र परीक्षा देबाक हेतु पक्षधरक गाम अबैत छथिन जतए परीक्षावधि धरि ज्ञानचन्दक पौत्र लोचन आ पक्षधरक पौत्री सुकन्याक बीच संवाद होइत छन्हि आ दुनू परस्परानुरक्त भऽ जाइत छथि। लोचनकेँ विदा करबाक क्रममे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घर धरि चलि जाइत अछि जे ओहि गाममे गुलझरक वस्तु भऽ जाइत छैक। विजातीय रहलाक बादो पक्षधर आ ज्ञानचन्द पारस्परिक मैत्रीकेँ सम्बन्धमे बदलि एकटा आदर्शक स्थापना करैत छथि। पक्षधरक उक्ति- ‘‘जइ समाजमे मनुक्खक खरीद-बिकरी गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए ओइ समाजकेँ पञ्च तत्तवक बनल मनुक्ख कहल जा सकैत अछि? जँ से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो अगुँरी देखाओत तँ ओकर अगुँरी काटि लेबै।’’ मे दहेज प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-विवाह, विजातीय विवाहक अवरोधक तत्वपर प्रहार कएल गेलैक अछि।

संग्रहक सातम कथा ‘‘बपौती सम्पत्ति’’ कृषक जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्तवक अवधारणापर आधारित अछि। सम्प्रति कृषक-मजदूरक पलायनसँ जे गामक अर्थ-व्यवस्था चरमरा गेल अछि तकरा सुधारबाक हेतु ऐ कथामे चिन्तनक एकटा दिशा भेटैत अछि। कथानायक गुलटेन अपन पिताक सिखाओल व्यवसायसँ नीक जकाँ परिवारक परिपालन करबामे सक्षम अछि। तँए कथाकारक उद्देश्य ग्राम्य स्वावलम्बनकेँ पुन: स्थापित करबाक हेतु मार्गदर्शन करब बुझना जाइत अछि।

आठम कथा ‘‘डंका’’ लोकजीवनक अवमूल्यनकेँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य पात्र भैयाकाका गामक रक्षा करबाक संकल्प लऽ अपनो गाममे अखड़ाहाक प्रचलन शुरू करैत छथि जइसँ पास-पड़ोसक गाम किंवा जमीन्दारक पहलमान हुनकालोकन्हिकेँ अबल बूझि प्रताड़्ति नै कऽ सकनि। ऐ तरहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका व्यग्रता छन्हि मुदा साम्प्रतिक जीवनमे स्वार्थक प्रवेशसँ ओ ई जानि विचलित भऽ जाइत छथि जे आब गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ दूर, लोक अपनो सर-सम्बन्धीक खोज-पुछारि करबासँ कतरयबाक मूल्यरहित संस्कार पालय लागल अछि। हिनक उक्ति- ‘‘माए-बाप, भाए-बहिन सबहक संबंध आ शिष्टाचार ऐ रूपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधनाभूमिकेँ मरूभूमि बनब अन्हिार्य छै’’ मे समस्त कथासार अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

नवम कथा ‘‘संगी’’ शिक्षा जगतमे भेल अद्य:पतनक कथा थिक जइमे स्कूल-कओलेजमे शिक्षाक व्यवसायीकरणक फलस्वरूप सामान्य जनसँ छीनल जाइत शिक्षाक समस्यापर विमर्श भेल अछि, जकर समाधानक हेतु दूटा संगी पारस्परिक परिणयपूर्वक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ैत छथि। कथाक घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जाइछ, जे प्रभावान्वतिकेँ कमजोर करैत अछि।

ठकहरबा पूर्णत: राजनीतिक कथा थिक। ऐमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे पुलिस ओ नेतालोकन्हिक भ्रष्ट चरित्र, मतदानमे गड़बड़ी आदिक चित्रण करैत लोकजगतमे क्रमश: पसरैत भ्रष्टाचारक अतिरेकक चित्रण भेल अछि जइसँ कोनो वस्तुक विश्वासनीयतापर प्रश्नचिन्ह लागि गेल अछि। ई कथा लोकतंत्रमे लोक आ तंत्र दुनूक स्खलनपर सोचबाक हेतु विवश करैत अछि।

‘‘अतहतह’’मे मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे बरियाती पक्ष द्वारा सरियाती पक्षकेँ देखार करबाक हेतु खाद्य वस्तुपर जोर देबाक परिष्कारक रूपमे सरियाती पक्ष द्वारा तकर बदला लेबाक कथा कहल गेल अछि। ऐ कथामे बरियाती पक्षकेँ पानिक संग दबाइ पिआय ओकरा सभकेँ देखार करबाक प्रयास कएल गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल होएबाक कारणे प्रतीयमान नै भऽ सकल अछि। अवश्ये ऐमे वर पक्षमे शराब पीबि कऽ बरियाती जएबाक आधुनिक प्रचलनक विरुद्ध आक्रोशक अभव्यक्ति भेल अछि। मण्डलजीक ई

कथा कन्यादान-वरदानमे दुहू पक्षक सम्मान रक्षाक पारस्परिक दायित्वक प्रति कान्तासम्मित उपदेश दैत अछि।

बारहम कथा ''अर्द्धांगिनी'' ऐ पोथीक नामकरणक आधार बनल अछि। ऐ कथामे अवकाशप्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण भेल अछि। अपन कमाइक बलें ओ आजीवन अपन पत्नीक दासीसँ आगू बुझबाक हेतु तैयार नै होइत छथि मुदा जखन नोकरी समाप्त भऽ जाइत छन्हि तखन पत्नीक आवयकतापर धियान जाइत छन्हि आ अर्द्धांगिनीक महत्तव बूझि पबैत छथि। लेखक नारीक सेविका स्वरूपकँ मर्यादित कए ओकरा पुरुषक समानान्तर मूल्य प्रदान करबाक पक्षपाती छथि, जकर अभिव्यक्ति ऐ कथाक लक्ष्य बुझना जाइत अछि।

तेरहम कथा थिक ''ऑपरेशन'' ऐ कथामे मइटुग्गर नेनाक सामाजिक स्थितिपर विमर्श कएल गेल अछि। जखन कोनो नेनाक माय असमए कालकवलित भऽ जाइत छैक, तँ समाज ओकरा अलच्छ कऽ कऽ बूझय लगैत छैक आ ककरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक वकासक चिन्ता नै रहैत छैक। मुदा जँ ओहि बच्चाक पिता दोसर विवाह कऽ ओकर प्रतिपालनक हेतु, स्थानापन्न माताक व्यवस्था करैत छथि तँ वएह समाज बेर-बेर ई जनबाक प्रयास करैत अछि जे सतमाय ओकर पालन नीक जकाँ कऽ रहल छैक वा नै। समाजक ई व्यवहार ओकर क्रूर मानसिकताक परिचय दैत अछि जइसँ नेना आ ओकर पिता आहत होएबाक लेल बाध्य होइत छथि। लेखक समाजक ऐ विरूपित मानसिकतापर व्यंग्य करब ऐ कथाक उद्देश्य रखलनि अछि। एही माध्यमसँ अस्पतालक दुर्व्यवस्था तथा प्राइवेट प्रैक्टिसक कारणपर सेहो विमर्श कएल गेल अछि।

चौदहम कथा ''धर्मनाथ'' ढहैत जमींदार परिवारक गाथा थिक। ऐमे दहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक जागरण कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत अछि। एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ पिताक अमलदारीमे धरि हुनक परिवार देहेजक संतोषक रहल अछि आ खेत बेचि-बेचि कन्यादान करैत अपन कुलाभिमानक रक्षा करैत रहल अछि। मुदा ई मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ क्षत-विक्षत भऽ गेल छैक आ धर्मनाथ ऐ स्थितिमे नै रहि पबैत छथि जे पुत्रीक विवाह जमीन्दारे परिवारमे करबाक हेतु धन जुटा पाबथि। अन्तत: ओ प्रो. रामरतन सन दहेजविरोधी व्यक्तिक सहायतासँ एकटा कर्मयोगी बालकसँ अपन बेटीक विवाह ठीक कऽ लैत

छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ चुनौती दैत छथि। परिणामत: हुनक पिता अपन कुलाभिमानपर प्रहार होइत देखि मृत्युकेँ प्रात्र कऽ लैत छथि। धिया-पुताक थपड़ी बजा-बजा ई कहब जे- ''बाबा मुइलाह- पूरी-जिलेबीक भोज खायब..'' वस्तुत: परम्परा आ अन्धविश्वासँ जकड़ल सामाजिक व्यवस्थाक विनाशक प्रति उत्सव थिक जे दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ सकेतित करैत ई ईंगित करैत अछि जे जँ लोक मिथ्याभिमानक त्याग नै करताह आ दहेज देब-लेबकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक मानदंड बनौने रहताह तँ अद्य: पतन अवश्यम्भावी अछि।

''सरोजिनी'' प्रेमविवाहपर आधारित्त कथा थिक। नायिका सरोजिनी जमीन्दार घरक कन्या छथि। हिनक भाय हृदयनारायण बिलैतिन कन्यासँ प्रेमविवाह कऽ लेने छथिन। इहो अपन बालसखा रमेशक संग विवाह कऽ लैत छथि। रमेश हिनके नोकर घूरनक शिक्षित पुत्र छथि। आर्थिक ओ सामाजिक दुनू स्तरपर असमान लोकक विजातीय विवाहक समर्थनक ई आधार जे ''अपन मालिक हम स्वयं छी। अखन धरि जातिक पहाड़ जे अपना समाजमे बनल अछि, ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ ने पेट भरैत अछि, ने नाङटकेँ वस्त्र दैत अछि, ने बेघरकेँ घरे। एतए धरि जे मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैत अछि, लूटैत इज्जतकेँ बचा नै सकैत अछि, ओहि समाजकेँ विरोध करबाक कोन अधिकार?''
उपदेशात्मक ओ असहज तथा सिने जगतक वस्तु जकाँ असहजतासँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। तथापि कथाकार जातीय व्यवस्थापर आधारित्त वैवाहिक पद्धतिकेँ गुण ओ प्रेमपर आधारित करबाक समर्थन कऽ ऐ प्रथामे युगानुरूप परिवर्त्तनक आकांक्षी बुझना जाइत छथि। विश्रृंखलित होइत वैवाहिक व्यवस्थाक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करब ऐ कथाक उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

संग्रहक सोलहम कथा सुभद्रा विधवा विवाहक समस्यापर आधारित्त अछि। दैवयोगसँ सुभद्राक पतिक देहान्त हवाइ दुर्घटनासँ भऽ जाइत छन्हि। ओ अभिशप्त जीवन बितएबाक हेतु बाध्य भऽ जाइत छथि। एकर कारण ई अछि जे ओ जइ जातिसँ अबैत छथि तइमे विधबा विवाहकेँ मान्यता नै छैक। कथाकार रूपलाल बाबा नामक एक गोट गाँधीवादी चरित्रक अवतारणा करैत छथि जे नारी समुत्थानक प्रति समर्पित छथि। हिनक मान्यता छन्हि जे जहिना पत्नीक मुइला उत्तर पतिकेँ दोसर विवाह करबाक अधिकार छैक तहिना पतिक मुइला उत्तर पत्नीयोकेँ दोसर विवाहक अधिकार

भेटबाक चाही। रूपलाल बाबा सुभद्राक पिताकेँ मानाय सुशील नामक युवकसँ ओकर विवाह सम्पन्न करबैत छथि। ऐ तरहेँ समाजमे विधवाकेँ मान्यता भेटैत छैक। आदर्शवादी संकल्पनापर आधारित ई कथा वस्तुत: ऐ सामाजिक समस्याक प्रति कथाकारक प्रगतिवादी मूल्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

''सोनमा काका'' ऐ संग्रहक सतरहम कथा थिक। ई कथा मानव धर्मपर आधारित्त अछि। एकर प्रधान पात्र सोनमा काका स्वयं पत्नीक बीमारीसँ त्रस्त छथि। ओकर इलाज करा जखन गाम घूमैत छथि तँ रामकिसुन नामक एकटा बिगड़ैल व्यक्तिक मृत्युक समाचार भेटैत छन्हि। ओ व्यसनक चक्रमे पड़ि ततेक निर्धन भऽ गेल छल जे ओकरा कफनो धरिक उपाय नै छलैक। सोनमा काका समाजक सहायतासँ ओकर संस्कार करबैत छथि आ ओकर अनाथ बालककेँ अपन बेटीक संग विवाह कराय ओकर जीवनकेँ सामान्य बनेबाक प्रयत्न करैत छथि। कथाकार ऐ आदर्श पुरूषक स्थापना कए ई सिद्ध' करए चाहैत छथि जे जँ समाज चाहय तँ केहनो पैघ समस्याक न्दिान भऽ सकैत छैक।

अठारहम कथा ''दोती बियाह'' परित्यक्ताक पुनर्विवाहपर आधारित्त अछि। एकर प्रमुख पुरुष पात्र उमाकान्त छथि जे पचास वर्षक आयुमे पत्नीक देहावसानक कारणे एकाकी जीवन जीबाक हेतु बाध्य छथि। जीवन संगिनीक अभावमे हिनक दिन काटब पहाड़ भऽ गेल छन्हि। दोसर दिस यशोदिया नामक एकटा युवती छथि जनिक पति दिल्लीमे नोकरी करैत छलथिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यिक्त कऽ कतहु पड़ा जाइत छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घूरि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोट सम्भ्रान्त व्यक्तिक आश्रममे रहि जीवन-यापन करए लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग विवाह करा दैत छथिन जइसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटैत छन्हि आ दूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। ऐ कथाक माध्यमे कथाकारक ई उद्देश्य स्पष्ट होइत छन्हि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित रखबाक हेतु पति-पत्नीमे कियो जँ एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक व्यथामे पड़ल रहैत अछि जकर निदानक हेतु समतूल युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उनैसम कथा ''पड़ाइन'' ग्राम्य जीवने पसरल अराजकताक कथा थिक जकरा कारणे बलगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटयबापर

लागल रहैत अछि। ऐ कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बेइमानी-शैतानी, चोरि, बलपूर्वक दोसरक जताति नष्ट करब आ माय-बहिनिक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतय परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पत्तिशाली बनि नीक जकाँ गुजर करऽ लगैत अछि। ऐ कथामे कथाकारक उद्देश्य ग्राम जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि मुदा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे ऐमे स्वाभाविकताक अभाव बुझना जाइत अछि।

"कतौ ने" कथा संग्रहक अन्तिम कथा थिक जे वस्तुत: यात्रा-वृत्तान्त थिक। ऐमे जनकपुर यात्राक वर्णन आएल अछि। गामक एकटा टोली जनकपुरमे विवाह पंचमीक मेला देखबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि मुदा विवाह पंचमी दिन ई लोकनि धनुषा दर्शन करबाक हेतु जाइत छथि आ ओतए गाड़ी खराब भऽ जएबाक कारणे विवाह पंचमीक रातिमे पुन: जनकपुर घुमि नै पबैत छथि जइसँ हुनकालोकनिकेँ जनकपुरक कार्यक्रम देखबाक अवसर नै भेटि पबैत छन्हि। अन्तत: हारि-थाकि कऽ सभ सोचैत छथि जे कतए एलौं तँ कत्तौ ने। दुर्योगवशात् मनोरथपूर्त्तिमे बाधा होएबाक ऐ कथामे वस्तुत: जनकपुर यात्राक एक गोट मनोरम वृत्तान्त भेटैत अछि।

ऐ तरहेँ अर्द्धांगिनी कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य जीवनक विभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तकर समाधान सबहक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी व्याख्या थिक।

ऐ संग्रहक कथा सभ वर्णन-प्रधान देखि पड़ैत अछि। कथाकारक शैली एहन छन्हि जे ओ कोनो घटनाकेँ प्रस्तुत करबासँ पूर्व ओकर पूर्ववीठिकाकेँ ततेक सघन कऽ दैत छथि जे पाठक तइमे तल्लीन भऽ जाइत छथि। ऐ प्रकारक वर्णन-विन्यास हिनक औपन्यासिक वृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि जइमे वर्णनक हेतु पयाप्त अवसर रहैत छैक।

मनोविश्लेषण मण्डलजीक कथा सबहक अन्यतम विशिष्टता थिकनि। ई जइ कोनो पात्रकेँ प्रस्तुत करैत छथि तकर अन्तस्तलमे प्रवेश कए ओकर भावराशिकेँ अभिव्यक्त कऽ दैत छथि जइसँ पात्रक चरित्र स्वत: स्फुट होमय लगैत अछि। उदाहरणार्थ "बपौती सम्पत्ति" कथामे गुलटेनक मानसिक स्थितिकेँ अभिव्यक्त करैत ई पाँती द्रष्टव्य अछि- "मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ पखिारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठाम फाटल

सीने दोसरठाम मसकि जाइत अछि, तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुँहेँ नै ससरि रुकि गेलै। चिन्ताक अँटकिते मनमे खुशी भेलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवी-देवताकेँ होइत छन्हि ओकरा हम मायाजाल किअए बुझैत छी। ई दुनियाँ ककरा लेल छै? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत। ई दुनियाँ उपयोग करैक छैक नै कि उपभोग करैक।''

मण्डलजी कथाक भाषामे मैथिलीक गमैया बोली-वाणीक सहज स्वरूप अभिव्यक्त भेल अछि। ई पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग कएलनि अछि जइसँ प्रत्येक पात्रक बौद्धिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट होइत चल जाइत अछि। हिनक कथा सभमे कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक भाषाहिक अनुगमन करैत अछि जइमे सहजता अछि। कनेको कृत्रिम प्रयोगसँ ई बचैत रहल छथि। हिनक भाषामे तद्भव ओ देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक रहलनि अछि। उदाहरणक हेतु माल-जाल, लेब-देब, दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, बाल-बोध, बेटा-पुतोहु, भोज-काज, अन्हर-बिहाड़ि, दार-मदार, सुक-पाक, भुखल-दुखल, चीज-बौस, घुसका-फुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ई अन्यतम विशिष्टता थिक जे ई कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिव्यक्त करबाक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करैत छथि जइसँ वस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाइत अछि यथा- ''जहिना खढ़ाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ैत छैक तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाएल रूप देखलक। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाय मिलैत अछि तहिना ने टटघरक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत।'' आदि।

एतावता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णनक दृष्टिञे मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थवादी चित्र, घटनाक दृष्टिञे आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मनोविश्लेषणक प्रति प्रतिबद्ध तथा उद्देश्यक दृष्टिञे लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुन्कि कथा लेखन हिनक रचना सभसँ सम्बलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्व सभ अनन्त काल धरि मिथिलाक लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत।

योगानन्द झा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
(बिहार)

अनुक्रम-

१. दोहरी मारि

२. केना जीब?

३. नवान

४. तिलासंक्रान्तिक लाइ

५. भाइक सिनेह

६ प्रेमी

७ बपौती सम्पति

८ डंका

९ संगी

१० ठकहरबा

११ अतहतह

१२ अर्द्धांगिनी

१३ ऑपरेशन

१४ धर्मनाथ

१५ सरोजिनी

१६ सुभद्रा

१७ सोनमा काका

१८ दोती बिआह

१९ पड़ाइन

२० कतौ नै

१. दोहरी मारि

दस सालसँ डायबीटीज आ साढ़े-सात सालसँ ब्लड-पेसरक शिकार सरसठिम सालक प्रोफेसर गुलाब पाँच साल पहिने कओलेजसँ सेवा-न्विृत्त भेल छलाह। सूर्यास्तक समए, सोफापर ओंगठि पाँचो आलमारीक पोथीपर नजरि खिड़बैत रहथि। पत्नी -लालमनि- चाह नेने कोठरीक मुँह टपिते छेलीह आकि भुक दऽ मड़कड़ी बड़ि उठल। ओना अन्हारक आक्रमण तइ रूपे नै भेल छलैक मुदा कीड़ी-फतिंगीक आवाहन बाहरसँ घर (कोठरी) दिस हुअए लगल छलैक। टुटल अगिला दाँतक मुँहसँ मुस्की दैत लालमनि पति दिस कप बढ़बैत बजलीह- ‘‘कॉफी सधि गेल छलए। पहिलुके चाह पत्ती घरमे छलै सएह बनेलौं। मुदा चाहक गंध केनादन लागल।’’

पत्नीक बात सुनि गुलाबक मन अमता गेलनि। मुदा जहिना पाकल अमतीक खट-मधुर सुआद होइत अछि तहिना प्रोफेसर गुलाब अपन चौहु टुटल मुँहसँ मुस्किया देलनि। मुदा मन कलपि उठलनि। एहेन समए भऽ गेल जे एक कप चाहोपर.....। ठीके बूढ़-बुढ़ानुसक कहब छन्हि- ‘‘करनी देखब मरनी बेर।’’ पत्नीक हाथसँ कप पकड़ि मुँहमे लगौलनि। मुँहमे चाह अबिते ठोर बिजैक गेलनि। हाँइ-हाँइ कऽ चाह तँ घोंटि गेलाह मुदा जाकरी पत्तीक सुआद मनकेँ हौंड़ देलकनि। चाहक कप टेबुलपर रखि उठि कऽ ठाढ़ होइते रहथि आकि बूझि पड़लनि जे उल्टी हएत। दुनू हाथसँ छाती दाबि पुन: सोफापर बैस गेलाह।
चौसठि वर्षीय लालमनि गैस्टिकसँ आक्रान्त। पेटक गैससँ मन अस-बिस करैत। जोरसँ ढकार भेलनि। मन हल्लुक होइते पतिक पीठ ससारए लगलीह। रसे-रसे प्रोफेसर गुलाबक मन खनहन हुअए लगलनि। मन खनहन होइते पत्नीकेँ पुछलखिन- ‘‘मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि।’’
दुनियाँक रागसँ ऊपर उठि लालमनि चहकि उठलीह- ‘‘की गड़बड़ आ की नीक, कोनो की तेहैया बोखार छी जे तीन दिन जाइते चलि जाएत। निरकटौबलि भऽ कऽ छुटि जाएत। गोटीक चाह करैए। जाइ छी एकटा गोटी खा लेब, ठीक भऽ जाएत।’’ से कहि लालमनि दोसर कोठरीक रस्ता धेलनि। प्रोफेसर गुलाबक नजरि चाहक कपपर गेलनि। मुदा चाहक कपपर

नजरि नै अटकि पोथीक आलमारीपर पहुँचि गेलनि। अखनुक जे जिनगी अछि से आइ धरि किअए ने बुझलौं? जँ अपने नै बुझलौं तँ जिनगी भरि पढ़ौलिऐ की? आकि दिमक बनि पोथीकेँ माटि बनौलिऐ? तइ बीच ब्लड-पेसरक जोर पबिते गरजलाह- "एकटा गोटी खाइमे कत्ते देरी लगैए।"

पतिक बात सुनि लालमनि बूझि गेलीह जे ब्लड पेसरक झोंक छियनि। धड़फड़ाइते कोठरीमे आबि मुस्की दैत आलमारीसँ गोटी निकालए बढ़लीह। गोटी न्किालि, गिलासमे जगसँ पानि लऽ पतिक हाथमे दैते रहथि आकि सिरमाक बगलमे मोबाइल टनटनाएल। गुलाब हाँइ-हाँइ कऽ गोटी मुँहमे लैत पानि गुलगुलबैत मोबाइलपर हाथ बढ़ौलनि। मोबाइल उठा नम्बर देखलनि। लीलाकान्तक (बेटाक) देखि पत्नी दिस मोबाइल बढ़बैत बजलाह- "ननुगर बेटाक फोन छी। लिअ....।"
कहि प्रोफेसर गुलाब अपनाकेँ बेटा रूपमे देखलनि। मन पड़लनि माए-बाप। की जिनगी छल की आइ अछि। जा धरि पिता जीबैत छलाह परोपट्टाक किसानक समाज रूपी समुद्रमे बसल छलाह। माल-जालसँ लऽ कऽ बीआ-बालि धरिक कारोबार छलनि। लेब-देब छलनि। सोझे लेब-लेब नै छलनि। लेब-लेबसँ बेसी देब-देब छलनि। खीरा-झिंगुनी आकि नव कोनो अन्न, फल-फलहरी होय, बीआक मूल्य कहाँ लइ छेलखिन। मुदा हमरा कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे एक तँ कओलेजक नोकरी भेटल तइपर सँ पिताक देल घर-घराड़ी धरि उजाड़ि देलौं। की हम दरमाहाक पाइसँ जीवन नै चला सकै छलौं। तरे-तर अपन पछिला विचारपर सेवा-निवृत्त प्रोफेसर गुलाब गरमा गेलाह। मुदा जहिना खढ़-पातक धधरा धुधुआ कऽ उठैत आ लगले पझा कऽ तेहन छाउर बनि जाइत जेकरा हवाक सिहकीयो उड़िया दैत, तहिना लगले मन खढ़क झोली जकाँ ठंढा गेलनि। मन घुरलनि, किछु मजबुरियो भेल। एक तँ परोपट्टामे बहरबैया जमीनपर लड़ाइ सुनगि गेल, दोसर अपन पितियौत कारी भायकेँ बटाइ खेत करए कहलियनि तँ कहलनि जे एक बाबाक अरजल सम्पति (जमीन) छी, सेहो कीनल नै दान देल, तइ जमीनक उपजा बाँटि बटेदार बनब। अहाँ कियो आन छी? जहिना सभ दिनसँ एक परिवार बनल रहल अछि तहिना रहत। जखने हम बाँटि कऽ देब तखने बटेदार भऽ जाएब। किसान जँ बटेदार भऽ जाए तँ ओकर प्रतिष्ठा बँचलै केना? पावनि-तिहारसँ लऽ कऽ काज-उद्यम (परिवारिक यज्ञ काज) धरि जहिया गाममे रहब अपन परिवारक समांग जकाँ रहब। मौका-मुसीबत (कोट-कचहरी, कओलेज, अस्पताल)मे दरभंगा जाएब तँ अपन घर जकाँ हमहूँ रहब। कहलनि तँ विचारणीय बात मुदा से उचित भेल? बाजारक

चमक-दमक देखि अपनो मन उधिआएल। महग बूझि घराड़ियो बेचि मकान बना शेष बैंकमे रखि लेलौं। फेर मन घुरलनि, की आजुक बाजारवादक नींव हमहीं सभ ने तँ देलौं। आइ की देखै छी, भरि मन चाहो नै पीब सकलौं। हुनके (पत्नियेे) कि दोख देबनि, तीन दिनसँ बाजारमे करफू लागल अछि। दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी सभ बन्न अछि। सौंसे बाजार भकोभन लगैए। बंदूकधारी पुलिस आ पुलिसक गाड़ी छोड़ि सड़कपर अछिये की? पनरहे दिन मेहतरक हड़ताल भेल, गंदगीसँ बाजार भरि गेल। बेमारीक प्रकोप बढ़ि गेल। तहिना पानिक अछि। ताड़ी-दारू, चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण तँ आम भऽ गेल अछि। एक दिस गाम छोड़लौं, दोसर दिस बेटा-पुतोहु राँचियेमे सभ बेवस्था कऽ लेलक। दुनू परानी रोगसँ अथबल बनल छी, केना दिन कटत? की अछैते औरूदे परान तियागि ली? हे भगवान जनिहह तूँ?

जहिना पूसक ओस सदति काल प्रकृतिकेँ ठंढ़ बनौने रहैए तहिना हृदए शीतल भऽ गेलनि। पत्नी दिस आँखि उठा कऽ देखलनि तँ बूझि पड़लनि जे जहिना हमर मन जिनगीसँ निराश भऽ कानि रहल अछि तहिना हुनकर (पत्नीक) मन बेटाक फोन सुनैले कोढ़ी सदृश बिहुँसि रहल छन्हि। मन आरो व्यथित भऽ गेलनि। जहिना श्मशानक बरियातीक मन खाएब-पीबसँ हटि मृत्यूक घाटपर बैस गंगा (नदी, सरोवर) मे डूब दऽ पवित्र होइले कछमछाइत तहिना प्रोफेसर गुलाबबाबूक मन जिनगीक घाटपर बौआ गेलनि। पुष्कर (राजस्थान) जकाँ अनेको घाट। उन्मत्त मन आलमारीक पोथी दिस पड़लनि। सतरहम शताब्दी धरि अर्थशास्त्र-राजनीतिशास्त्र सह्मिया भाए छल। संगे-संग जीवन-यापन करैत छल। से भीन भऽ गेल। हम सभ खुट्टा गाड़ि राजनीतिशास्त्रकेँ धेलौं। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिकेँ अधिकार-कर्तव्य सिखबै छिऐ मुदा जइ अबस्थामे अखन दुनू परानी जीब रहल छी ओ कोन अधिकार-कर्तव्य छी? की बारह बजे रातिमे डॉक्टर ऐठाम जा सकै छी? जँ से नै हएत तँ की रोग (बेमारी) हमरा मुकदमाक तारीक जकाँ भरि रातिक मोहलत दऽ देत?

जिनगीक काँट-कूश फानि लालमनि मोबाइल कान्मे सटौने पतिसँ फूट भऽ सुनैक विचार केलनि। मुदा मुँहसँ निकलि गेलनि- “बौआ, नूनू।”

“हँ, हँ। पाँचम दिन बौआ- कल्पनाथक मूड़न छी।”

टावर हटने लाइन कटि गेलनि। मुदा लालमनि से नै बूझि सकलीह। बूझि पड़नि जे कम जोरसँ बजने नै सुनैत अछि। छातीसँ जोर लगा जोर-जोरसँ बाजए लगली- “सभ प्राणी नीके छह कि ने?”

प्राणीक नाओं सुनि कोठीक चाउर जकाँ गुलाबबाबूक मन गुमसरए लगलनि। जहिना सड़ल आ नीकक बीच अपन-अपन सेनाक बीच रणभूमिक दृश्य होइत अछि तहिना गुलाबो बाबूकेँ भेलनि। मुदा जहिना बेटा-पुतोहुपर खौंझ उठल तहिना पत्नीक अनभिज्ञता (मोबाइल नै बुझब) पर हँसी सेहो लगलनि। पत्नीक हॅसी दौगल आबि हृदैकेँ सुतल आदमी जकाँ डोलबए लगलनि। मुँहसँ निकललनि- ‘‘सभ प्राणीक कुशलमे अपनो लगा कऽ कहलियनि आकि अपनाकेँ छोड़ि कऽ।’’

बाजि तँ गेलाह मुदा लगले मन धिक्कारए लगलनि। पत्नी अज्ञानी रहि गेलीह, तइमे हमर कोनो दोख नै? दिनमे डेरासँ बाहर रहै छी मुदा बाकी समए....।

अपने कएल लोककेँ काज अबै छै। जते अपना दिस देखथि तते ओझरी लगए लगलनि। एक कालखंडक पढ़ल-लिखल कर्त्ता (परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि) रहितो आइ धरि एकरा (ऐ विषयकेँ) बुझैक कोन बात, जे मनोमे नै उठलनि। मन कानए लगलनि।

अपने रोपल गाछी भुताहि भऽ गेलनि। दलकैत मनमे भाव उठलनि- गाछी तँ फूल-फलसँ लऽ कऽ बगुर धरिक होइत अछि मुदा कहबैत तँ सभ गाछिये अछि। तहिना तँ जिन्गीयो अछि। भदबरिया अन्हार जकाँ इजोत कतौ देखबे ने करथि। तइ बीच पत्नी मोबाइल बढ़बैत कहलखिन- ‘‘देखियौ ते, की भऽ गेलै। बजबे ने करैए।’’

पत्नीक बात सुनि पुन: गुलाब बाबूक मनमे आशा जगलनि। हाथमे मोबाइल लऽ कहलखिन- ‘‘टाबर चलि गेल। तँए नै आबाज अबैए। फेर टाबर आओत तँ अवाजो आओत।’’

लालमनि टाबर बुझबे ने करथि। बजलीह तँ किछु नै मुदा जहिना दोकानसँ कोनो वस्तु झोरामे अनैत काल, झोरा मसकि गेलासँ वस्तु गिरए लगैत तहिना मनसँ पतिपर भेल आक्रोश ससरए लगलनि। गुलाब बाबूक मनमे एलनि, पाँचम दिन पोता- कल्पनाथक मूड़न छी। मूड़न की छी संस्कार छी। संस्कार तँ समाजमे भेटैत छै, देल जाइ छै। राँची समाज आ मिथिला समाज तँ एक नै छी। तहूमे शहरक समाज तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि। पुन: मोबाइलमे रिंग भेल। रिंग होइते पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘आबि गेल टाबर। लिअ।’’

‘‘पाँचम दिन कल्पनाथक मूड़न बैष्णो देवी स्थान (कश्मीर)मे रखने छी। अहाँ दुनू गोटे (माता-पिता) भोरुके गाड़ी पकड़ि चलि आउ। परसूक्का टिकट बनबा देने छी।’’

बेटाक फोन सुनि प्रोफेसर गुलाबक छाती छहोछित्त भऽ गेलनि। मुँह मलिन, नोरसँ ढबकल आँखि, देहक पानि उतरल, मन्हुआएल स्वरमे लालमनिकेँ कहलखिन- ‘‘कनी मोबाइल लाउ।’’

मोबाइल दइसँ पहिने लालमनि बेटाकेँ कहलनि- ‘‘बाउ, बाबूसँ गप्प करह।’’

‘‘बौआ।’’

‘‘हँ बाबू। अपने असिरवाद देबै.....।’’

पोताकेँ असिरवाद देबाक बात सुनि गुलाब बाबूकेँ वकार नै फूटलनि। हिचुकिक अबाज सुनि लीलाधर पुछलकनि- ‘‘अपने कनइ किअए.......।’’

खखसैत गुलाब बाबू बजलाह- ‘‘मोबाइल छोड़ि असिरवादो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बाजारमे करफ्यू लागल अछि। सिपाहीसँ सड़क भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना निकलब।’’

‘‘कओलेजोमे छुट्टी लऽ नेने छी। टिकटो कटा नेने छी तहन.....?’’

:::::::::

२. केना जीब?

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल माने पड़ल छलाह। दुनू बेकतीक मन खटाएल। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छलाह जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़कि अस्पतालक सीटपर चिकड़ि-चिकड़ि कानि रहल छथिन। सत्तरि बर्खक अबस्थामे संगी अपने दौड़-धूप कऽ रहल छथि। मुदा अस्पतालक डॉक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लागल छथिन। तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नै छलनि आ दोसर पहुँचो नीके। संगिनीक घटनाकेँ तँ सरस्वती लगसँ नै देखने छेलीह मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेलीह। करेज तेना दहलि गेल छलनि जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी तेज भऽ गेल छलनि। नस-नसमे भयक भूत समाए गेल छलनि। अन्हारक वाण जकाँ चारू कातसँ मृत्यूक तीर बेधए लगल छलनि। जहिना बैरागी रागसँ डरैत, जोगी भोगसँ डरैत तहिना सरस्वती मृत्यूक भयसँ।

पाँच सए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रो. शंकर कुमारकेँ बेअसर बूझि पड़लनि। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक तीरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै नै देनि। कछ-मछ करैत पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘चाह पीबू।’’
सरस्वतीक मन चाह पीबैसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझनि। अपन अज्ञाक उल्लंघन होइत देखि शंकरक मन महुराए लगलनि। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत, तहिन। डेग भरि पाछू घुसुकि मुस्की दैत दोहरा कऽ कहलखिन- ‘‘चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि। अहाँ देखा-देखा देब।’’

जिनगीक अंतिम अबस्थामे पतिपर जीत देखि ढेंग सन देहकेँ उठा कीचेन दिस बढ़लीह।

चाह बना कीचेने मे पीबए लगलथि। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको नै करनि। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे आबै ने देनि। जहिना घी नै अरघनिहारकेँ थारीमे देखिते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जीह माने मन पचपचाए लगनि। चाह पीब दुनू गोटे कोठरीमे आबि पुनः

सोफापर पड़ि रहलाह। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइत छथि तहिना दुनू गोटे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगलाह।

सरस्वतीक नजरि पाँच बर्खक अबस्थापर पहुँचलनि। की छलए माए-बापक राज? खेनाइ, खेलेनाइ, पढ़नाइक संग पावनिमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ। बस। यएह छलए जिनगी। मनमे सुख-दुखक जनमो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए लेल नोकरनी आएल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कोनो अभाव सासुरोमे नहिये रहए। नोकरे पानियो भरैत छल आ भानसो करैत रहए। अपनो प्रोफेसरे छलाह। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छलाह। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छलाह। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलनि। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि तइसँ इमानदार कमेनिहारक धियापुताक लेल शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहिये मुदा पिताक देल सम्पतिसँ तँ एत्ते जरूर केलनि। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलनि। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अबस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लागत। ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत आ देह भारी बूझि पड़ैत अछि। तइपर परिवारक सभ काज? ऐ उमेरमे बूढ़ि-कनियाँ बनि जीब रहल छी। तरे-तर पसेना चलए लगलनि। अनायास मुँहसँ निकललनि- ‘‘ऐ जीवनसँ मरब नीक।’’

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलनि। अखन धरि हिनकर चेतनाहीन भेल मन देखैत छलनि अपन पछिला जिनगी। गामक स्कूल। कत्ते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती माताक जय’ कहि आंगनसँ निकलि सरस्वतीक मंदिरमे लऽ गेलाह। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नै। डेरामे गाड़ल देवता तँ नै अछि मुदा देबालमे टांगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनाओल मुरती तँ अछिये। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नै मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छियनि। धुमन-सरड़क धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़बिते छियनि। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलियनि। जतेक पिताजी हमरा पढ़ौलनि, एक सीमा धरि पहुँचा देलनि, तहिना तँ हमहूँ केलियनि। नोकरी भेलापर ताधरि पत्नी गाममे रहलीह जा धरि बाबू-माए जीबैत रहलाह। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहथि। संगे तँ नै खाइ एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ

जहियेसँ कनभेंटमे नाओं लिखेलौं तहियेसँ एके शहरमे रहनौं फूट-फूट रहए लगलौं। समैक संग शिक्षो बदलल। एकाएक नजरि आगू बढ़ि जिनगीक अबस्थापर गेलनि। चारिम अबस्था। जइ अबस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ, अभावकेँ निर्मूल माने नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइत छै। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुखक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसराकेँ नीक-अधलाह, सुख-दुखमे संग दैत अछि। एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खाइत अछि, दसगरदा उत्सवो हॅसी-खुशीसँ मनबैत अछि, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैत अछि, जूरशीतलमे इनार-पोखरि उड़ाहबो करैत अछि, शिव-पार्वती बना बाजाक संग गामो घुमैत अछि।

बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसरि गेल। आइ जँ हम अमेरिका जाए रहए लगी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ कतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यू छोड़ि हमरा लेल किछु शेष नै बचल अछि। निराश मनमे एलनि 'करनी देखिहह मरनी बेर।' जिनगीमे कतऽ चूक भेल? जँ चूक नै भेल तँ ऐ अबस्थामे पहुँचि केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि धड़फड़ा कऽ उठि बजलाह-
''अखन सुतैक बेर अछि जे सुति रहलौं?''

- ''सुतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।''

- ''तँ की भुखले रहब।'' शंकर कुमार बाजि तँ गेलाह मुदा मन पाछू घुरि कऽ तकलकनि। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहन रोग भेल जाइत छन्हि जे भुखले मरब। रातिमे खाएब नै तँ नीन केना होएत? जँ नीन नै होएत तँ जीब कतेक दिन?

पत्नी- ''कता दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?''

नोकर सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेलाह। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नै। मनमे जोर मारलकनि जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु -दुनू इन्जिनियर- अनके नोकरी करैत अछि आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करैत छलौं बेसी तलब उठबै छलौं, तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छलए जे पत्नी थेहगर छेलीह। बेटा-पुतोहुक आशो छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेलखिन जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर कत्ते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छथिन। तकलीफ हेतनि तँ बजबे करतीह। भलहिं हमरा बुते पुराओल हुअए वा नै।

पहिले जकाँ पाँच रुपैया दस रुपैयामे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कओलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतै। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे तँ नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तहूमे तेहेन समए आबि गेल जे कहीं सम्पतिये ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए। जानपर नजरि पड़िते आँखि ढबढबा गेलनि। जाने नै तँ जहान की? जहिना वीणाक तार टुटलापर आबाज खनखना कऽ निकलैत छैक तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार पत्नीकँ कहलखिन- ''अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै जोकर टभका लइ छी।''
मने-मन सरस्वती बजलीह- ''केना जीब?''

:::::::::

३. नवान

बाध दिससँ भोरे बड़का काका आबि नादिमे कुट्टी-सानी लगा, गाए बाहर कऽ केटली नेने कलपर पहुँचलाह। जइ कलपर आन समए (जाड़-बरसात) हेँक-हेँक भेल रहैत छल ओ रुक्ख बूझि पड़लनि। समैक गरमियोमे अंतर बूझि पड़लनि। जाड़क मासमे दस बजे दिनक समए पाँचे बजे भोरेमे बूझि पड़लनि। सोहनगर समए बूझि वसन्तपर नजरि गेलनि। वसन्त आमक मंजरक महमही फल रूपमे महमहा रहल अछि। मनमे उठलनि जे वसन्त ॠतु बर्खक पहिल ॠतु (चैत-बैशाख) होइतो शरद-शिशिर सन ॠतु केना आगू अबैत? हाँइ-हाँइ कऽ केटली धोय लोटामे पानि नेने चूल्हि लग आबि, चाह बनबए लगलथि। केतलीमे चाहकेँ खौलैत देखि मनमे उठलनि जे अहिना समुद्रोमे लहरिक ज्वार-भाँटा उठैत अछि। एते गहींर समुद्र जइमे करोड़ो-अरबो पानिक तह रहैत अछि तइ ऊपरमे किएक एत्ते जोरसँ लहरि अबैत अछि? मन औनाइते रहनि कि चाहक गंध लगलनि। गिलासमे चीनी दऽ चाह छनलनि। केटली अखारि कऽ रखि चाहक गिलास नेने दरवज्जाक चौकीपर बैस पीबए लगलथि। मन औनाइत रहनि जइसँ चाहो नीक-नहाँति नहिये पीबैत रहथि। तखने हहाएल-फुहाएल रविया कने फड़िक्केसँ बाजल- ‘‘गोड़ लगै छी कक्का।’’
आसिरवाद दैत बड़का काका कहलखिन- ‘‘कनिये पहिने अबितह रबी, तँ चाहो पीऐबतियह, आब तँ हूसि गेलह।’’

- ‘‘नै काका, हुसलौं नै, नीके भेल। एक चुटकी विष्णु भगवानकेँ चढ़ाइये कऽ मुँहमे पानि लेब।’’
विष्णु भगवानक नाओं दिस धियान नै गेलनि। कहलखिन- ‘‘तूँ तँ अनेरे बौआइबला आदमी नै छह। तहन.......?’’
- ‘‘काजे एलौंहेँ।’’
- ‘‘भोरे कोन काज बजरि गेलह?’’
- ‘‘न्योंत दइले एलौं।’’

न्योंत सुनि बड़का काका तारतम्य करए लगलाह जे अखन तँ, ने बिआह-मूड़नक दिन अछि आ ने केशे कटौल देखै छिऐ जे बरखीयो-तरखीयो करैत। मुदा चौलो तँ कहियो नै केलक जे आइ करत। सभ दिन शिष्ट

बूझि श्रद्धाक नजरिसँ देखैत अछि। मन पाड़लनि- जेठ मास परीब तिथि। आमो पाकब नहिये शुरू भेल अछि जे अमइयो भोज करैत। पनरह दिनक पछाइते अमइया भोज चलत। तहूमे नवको गाछी-कलम तँ कतौ नहिये नजरिपर अबैत अछि। तीन दिन रोहिणियोकेँ चढ़ैमे बाँकिये अछि। खिच्चा आम पाकि कऽ केहेन हएत? धिया-पुता ने चोकर-मोकर खाइए। भोज-काज ओइसँ केना हएत? भोज-काजक लेल तँ नीक आम चाही। मन आगू बढ़लनि। तीमन-तरकारीक तँ भोज नै होइत अछि। ओ तँ ओहिना पहिल फड़ महादेवो स्थानमे चढ़बैत अछि आ हितो-अपेक्षितकेँ देल जाइत अछि। ओना लोक कटहरोक भोज करैत अछि मुदा ओ तँ आमो-सँ-पाछाँ होइत अछि। भऽ सकैत अछि जे गाए बिआएल होइ। गाइक दूध तँ छाँकी देल जाइत अछि। कियो-कियो रक्तमाला स्थानमे चढ़बैत अछि। पाल खेलापर राजाजीकेँ गाँजा चढ़बैत अछि आ बियेलापर कुशेश्वर स्थानमे घी चढ़बैत अछि। हमरा किएक न्योंत देत। पुछबो केना करबै? दही-दूधक चर्च तँ खाधुर लोक करैत अछि। हँ-निहसक बीचमे पड़ल बड़का काका सोचलनि जे हमहीं सवाल पुछिऐ आ वएह ने किअए जवाव देत जे अनेरे अपसियाँत होइ छी। मुस्की दैत पुछलखिन- "आरो के सभ न्योंतिहारी रहथुन?"
बड़का काकाक प्रश्न समाप्तो नै भेल छलनि तइ बिच्चेमे रविया बाजि उठल- "अहींटा छिऐ काका। पहिल नवान छी कत्ते गोटेकेँ न्योंत देबनि। कोनो कि उपनएन छी जे गिनती पुरबए पड़त।"

नवान सुनि बड़का काका आरो ओझरा गेलाह। केना ने ओझरैतथि। किछु दिन पूर्व धरि तँ वएह सभसँ पहिने नवानक चर्च करै छेलखिन। जहियासँ बाढ़ि आबि-आबि अगहने उसारि देलक तहियासँ कहब छोड़ि देलखिन। अमती काँट जकाँ एकटा डारि छोड़बथि तँ दोसर लगि जाइन। मिरचाइक घोँदा जकाँ ओझरी देखि बड़का काकाक मन असोथकित भऽ गेलनि। आँखि बन्न भऽ गेलनि। आँखि बन्न होइते रविया कहलकनि- "काका, ओरियान-पाती करबाक अछि। अखन जाइ छी।"
रविया विदा भऽ गेल, मुदा काकाक आँखि बन्ने रहनि। मनमे उपकलनि, भने पतरो कीनब छोड़ि देलौं। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक पतरा समाजमे (गाममे) आबए लगल अछि। सेहो जँ भिन्न-भिन्न लेखक जकाँ एक्के ढंगसँ बुझाओल जाएत तँ बड़बढ़िया। मुदा सेहो नै। सभ पतरा कीनि अपनेसँ निर्णए करैक ज्ञाने नै अछि। मनमे खुशी उपकलनि। जे पावनि क्षण-पल गनि निर्धारित होइत अछि ओ तीनदिना हुअए लगल। एकदिना पावनि दुदिना भऽ गेल आ दुदिना तीनदिना। तहूमे तेहन-तेहन अगिमुत्तू छुछुनरि सभ गामे-

गाम फड़ि गेल अछि जे एक डांरिए समाजकेँ थोड़े चलए देत। समाजो तेहने गड़िखच्चर अछि जे अपन वर्चस्वक दुआरे उचित-अनुचितक (जायज-नाजायजक) विचारे ने करत। कियो जातिक सिपाही तँ कियो सम्प्रदायक सिपाही बनि मोछ टेढ़ करैत रहैत अछि। ककर के सुनत? एहेन परिस्थितिमे चुप्पे रहब नीक। फेर मनमे उठलनि जे एते ओझरीमे ओझराइक कोन जरूरति अछि। जहन रविया न्योंत दइये गेल अछि तहन किएक ने स्नान कए ओकरे ओइठाम जा बूझि ली। सएह केलनि।

चारिम सालक बाढ़ि रविया दुनू बेकतीक जिनगी मोड़ि देलक। एहेन विकराल बाढ़ि जिनगीक पहिल बाढ़ि छलैक। पाँच बीघा जमीनबला रविया पुरान ढर्राक जिनगी (किसानी जिनगी) बदलैत रहए। लगभग चारि आना बदलि गेल छलै। उन्नति किस्मक तरकारी आ फल-फलहरीक खेती अपनाए नेने रहए। अन्नक खेतीमे कोनो सुधार नै कऽ सकल रहए। मालो-जाल तहिना (पूर्ववते) रहैक। बाधक सभ जजात दहा गेलै। गाछीक बड़का आम-जामुनक गाछ छोड़ि सभ सुखि गेलै। अंगूर, अनारस, नेबो, लताम, धात्री, अनरनेवा इत्यादि सभ नष्ट भऽ गेलै, घरोक सभ समान नष्ट भऽ गेलै। बाढ़िये दिनसँ रविया दुनू परानीक मन टुटए लगलै। जेना-जेना पानि सटकैत जाइ तेना-तेना सुक्खल गाछ आ घरक सड़ल समान सभ देखि-देखि दुनूक मन टुटब बढ़ितहि गेलै। मुदा जिनगीक आशा दुनूकेँ अन्हारसँ इजोत दिस धकेलि देलक। नव उत्साहक संग दुनू परानी आँखि उठा आगू देखि डेग बढ़बए लगल।

सबेरे स्नान कए बड़का काका रविया ऐठाम पहुँचलाह। आँगन नीपि बुधनी नहाइ-ले गेलि कि बड़का काकाकेँ देखलक। हाँइ-हाँइ कऽ गोबराएल हाथ धोय धड़फड़ा कऽ आंगन आबि ओसारपर कम्मल बिछा पतिकेँ कहलक- “काका एलखिन।”
दरबज्जापर आबि बड़का काका कनडेरिऐ आँखिए हिया-हिया कऽ आंगन, दरबज्जा, बाड़ी देखए लगलखिन। आँखिपर सँ मनक बिसबास उठए लगलनि जे सत्ते देखै छी कि फूसि। जइ जेठमे पियाससँ धरतीमे दराड़ि फाटि जाइत अछि, हाथ-हाथ भरि जीह बाहर करैत माल-जाल अधसुक्खू भऽ जाइत अछि। ठेहुन भरि मोट गाछक सुखाएल पातक पथार लगि जाइत अछि तइठाम वसन्तक-बहार देखि रहल छी। मनमे ई सभ नचिते रहनि कि पानक खिल्ली सिक्कीक चंगेरीमे सरिया कऽ ओसारक चक्कापर

रखि रविया आगू आबि कहलकनि- ‘‘अंगने चलू ने कक्का। अनठिया जकाँ डेढ़ियापर किएक ठाढ़ छी।’’

रवियाकेँ मनमे अपन सेहवाल गाए आ दस कट्ठा गरमा धानक बोझ देखेबाक इच्छा रहैक। मुदा काकाक मनमे एलनि जे आंगन तँ औरतक होइत छैक, पुरुखक नै। पुरुख तँ केबल खेबा काल आ कोनो काजक काल जाइत अछि। मुदा बुधनीयो तँ अंगनेक ओसारपर कम्मल बिछौलक। ओ एना उट-पटांग किएक केलक? ओसारक एक भागमे बुधनी दू कसतारा दही, दु-चंगेरा आम, एक चंगेरा चूड़ा, स्टीलक अढ़ियामे तरकारी इत्यादि भोज्य-पदार्थ रखने रहए। एकरे सभकेँ देखबैक इच्छा पेटमे रहैक। सभ गोटे अपन-अपन विचारमे मगन आ काजोमे लगल। अगहन जकाँ लड़ती-चड़ती देखि बड़का काकाक मन असथिर होइत रहनि। अस्सीयो बर्खक ओ औरत जनिका पति छन्हि अपनाकेँ कत्ते सुन्दर बुझै छथि मुदा सोलह बर्खक विधवा अपनाकेँ की बुझै छथि? जे जेठ गरमीक विराट मास छी से वसन्ती हवा केना बहा रहल अछि। सालक एक्को दिन ओहन अछि जइ दिन अनेक ऋृतु नै भ्रमण करैत हुअए। चुप-चाप आँखि नचबैत बड़का काकाकेँ रविया पुन: कहलकनि- ‘‘काका, जहिना पाँच अंग उठलासँ शरीरक वसन्त अबैत अछि तहिना ने वसन्त पंचमीसँ वसन्त ऋृतुक आगमन होइत अछि। आगू-आगू चलू, सभ किछु देखा दइ छी।’’
रवियाक बात सुनि बड़का काकाकेँ खुशी भेलनि मुदा मनकेँ ‘नवान’ शब्द घुरियाइत रहनि। मन नचैत रहनि अगहनक नवानपर। बजलाह- ‘‘पतरा देखब छोड़ि देलौं तँए सभ बात नजरिपर नै अबैत अछि। कनी-मनी मन अछि जे नवान तँ अगहन माने कातिक इजोरिया पखसँ लऽ कऽ आधा पूसे धरिमे होइत छलैक।’’
काकाक बात सुनि रवियाक मनमे खुशी नै भेल, पुछलकनि- ‘‘कक्का नवान की?’’
- ‘‘नव अन्नक ग्रहण।’’
- ‘‘सएह छी काका।’’
- ‘‘चलह कने देखा दए।’’

धान देखबैत रविया कहलकनि- ‘‘चौरीमे एक बीघा खेत अछि। सत-सत, अठ-अठ बर्खपर हँसुआ खेत पहुँचैत छल। सेहो दूध महक डाढ़ीए होइत छल। गोटे साल आध-मनक कट्ठा तँ गोटे बेर तीन पसेरी कट्ठा धान होइत छलए। तहूमे तते चिलमिल, कोढ़िला, आ करमी लत्ती भऽ जाइत छलए जे

ऊपरका खेतीसँ दोबर खर्च होइत छलए। उपजा देखि मनमे उठैत छलए जे बेचिये लेब नीक होएत। मुदा लेबालो नै। के अनेरे पूजी दूरि करितए। सबहक एक्के गति। गामक आधा हिस्सा जमीन एहने अछि। बर्ख दसम मनमे उठल जे चौथाइ खेतमे डबरा खुनि माछ पोसब। नवका-नवका माछक थर सभ हेचरीमे बिकाइत अछि। ओकरे पोसब। सदिकाल रेडियोओसँ आ अखबारो, पत्रिका सभमे माछ पोसैक लाभ देखाओल जाइत छै। खूब लाभकारी अछि। सएह केलौं। दू कट्ठा ऊपरका खेत बेचि डबरा खुनेलौं। हेचरीसँ थर आनि देलिऐ। ले बलैया, कोसी नहरिमे पानि एलै। फाटकक खुजले मुँह छोड़ि देलक। भरि मुँहखर पानि चौड़ीमे पसरि गेलै। बीच बाधमे खेत अछि। डबराक महारोपर जाएब कठिन भऽ गेल। एक दिन नहाइ बेरमे केरा थम्हक बेरही बना कऽ गेलौं तँ देखिलिऐ जे सौंसे चौरीक सलाढ़ लगल अछि। एक्कोटा थरक दर्शन नै भेल।"

- "देखि कऽ बड़ दुख भेल हेतह?"

- "एँह, काका की कहब, अपनेटा होइत तहन ने, तेहने तँ सौंसे बाधे झलकैत रहए।"

- "तब तँ निचला खेतक संग दू कट्ठा ऊपरको चलि गेलह।"

- "ओतबे गेल। साले-साल मलगुजारियो भरए पड़ैत अछि। तेहेन पाहीपट्टीक पट्टी छी जे अग्गहसँ बिग्गह भरए पड़ैत अछि। गामक खेतक कोनो एक्के रंग मलगुजारी अछि। अन्हरा राज छै। जइ खेतमे उपजा नै होइत अछि ओकरे मलगुजारी बेसी अछि। हँ, तँ कहै छलौं जे ओइ एक बीघा चौरी खेतमे डबरा भरा देलापर तेसराँ आ पौरुकाँ पच्चीस क्वीन्टल आ सत्ताइस क्वीन्टल धान भेल। उपजबैक ढंगो नै छल। थोड़े-थोड़े आब सीखने जा रहल छी। ऐ बेर दुनू सालसँ नीक धान अछि। अखन काटि-काटि अनितहि छी। तैयार पछाति करब। चलू, गाएकेँ देखिऔ।"

सेहवाल गाए। ललौन-कारी। कतौ-कतौ चितकाबर। पतरकी नाङरि। साढ़े चारि फूट खड़ा आ आठ फूट नमती। निच्चासँ ऊपर धरि काका तजबीज केलनि मुदा नजरिपर चढ़बे ने करनि जे कोन किस्मक गाए छी। थने कहै छै जे भरि बाल्टी खुआउ आ भरि बालटीन दुहि कऽ लऽ जाउ। गाम दिस नजरि दौड़ेलनि। कहाँ कतौ ऐ कटिंगक गाए छै। कियो-कियो जे अनबो केलनि तँ महींसक खाँढ़क जरसी छन्हि। सेहो तँ गनले-गूथल अछि। पहिलुका गाए सभ जे अछि ओकर खाँढ़े बिगड़ि गेलै। तेहन-तेहन दानी सभ साँढ़ दान केलनि जे टाएरक बड़दक वंश कोल्हुक रास्ता धेलक।

रविया - "काका, की सभ देखै छिऐ?"

बड़का काका- ‘‘हौ, कोन चीज नै देखैबला अछि। कतएसँ अनलह?’’
- ‘‘चारिम साल जे बाढ़ि आएल से मालो-जालकेँ नष्ट कऽ देलक। खूँटेपर बान्हल गाए-बड़द मरि गेल। धिया-पुता मात्रिकमे रहए तँए बँचि गेल। बाढ़िक बाद सासु भेँट करैले समाद पठौलनि। हमर मन नै मानलक। ओकरे -पत्नीकेँ- कहलिऐ जाइले। एक तँ नैहर दोसर धियो-पूताकेँ देखना साल भरि भऽ गेल छलैक। गेल। ओतै एकटा गाए आ खेती करैले बड़दो आ मन तीनियेक अन्न देलखिन। किछुए दिनक पछाति गाए उठल....।
मुस्की दैत पुन: बाजल- ‘‘जहिना बाढ़ि एने मूस पतरा गेल तहिना अनेरुआ साँढ़ो सभ। मन भेल जे साँढ़ लग लऽ जाइऐक। मुदा मनमे भेल, अनेर खाइत-खाइत तँ बुधियारो लोक सनकि जाइत अछि, साँढ़-पारा तँ जानियेकऽ पशु छी। साँढ़ लग नै लऽ जा डाक्टरकेँ बजा अनलियनि। वएह पाल (सिम) देलखिन तकरे बच्चा छी। गाए तेहन दुधगरि जे अपन जीह दागि बच्चाकेँ पोसलौं। वएह गाए छी। पाँचम दिन बिआएलहेँ।’’

पाँचम दिन सुनिते बड़का काकाक मन फेर ओझरा गेलनि। मनमे नाचए लगलनि जे गाए तँ नओ दिनपर शुद्ध होइत अछि। अशुद्ध दूधक दही खुऔत कि ककरोसँ दूध आनि पौरने अछि। पुछबो केना करबै? ओहन खाधुर थोड़े छी जे खाइसँ पहिने पता लगा लेब। शुद्ध-अशुद्धक विचार मनमे संघर्ष करए लगलनि। एक दिस देखैत छथि जइ गाइक दूध, गोंत, गोबर सभ शुद्ध होइत अछि, एते तक जे दूधक लाटमे छुतहर घैलो शुद्ध भऽ जाइत अछि, दूध तँ अमृतोसँ पैघ होइत अछि। दोसर दिस देखैत छथि जे सभ अशुद्ध गाइक दूधसँ परहेजो करैत अछि। ओना देस-देसक आ कोस-कोसक चलनि सेहो एक-दोसराक विपरीतो चलैत अछि। विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देखि निर्णए केलनि जे पुछनहि शुद्ध-अशुद्ध। जँ बुझले नै रहत तहन शुद्ध-अशुद्ध की होएत। मनमे खुशी एलनि, पुछलखिन- ‘‘दूध कत्ते होइ छह?’’

दूधक नाओं सुनि रवियाक मन, फुलक पहिल सुगंध जकाँ महकि उठल। बाजल- ‘‘कक्का, की कहू! दुहैत-दुहैत आङुर भरा जाइए। बेराबेरी दुनू बेकती दुहै छी। ओना अखन पाँचे दिन भेल अछि। तहूमे दू दिन अधे-छिधे दूहलौं। पहिलौठ रहने थनमे गुदगुदी चलते हरपटाए लगए। मुदा परसूसँ दूधो फाटब बन्न भऽ गेल अछि आ गायो असथिरो भऽ गेलि।’’
- ‘‘दूध बेचबो करै छह?’’
- ‘‘अखन तक तँ नै बेचलौंहेँ मुदा एते दूध दुइये गोटे बुते केना सठत।’’ कहि आगू बढ़ल। आमक कलम। चारू कातक हत्तापर लताम, दाड़िम,

नेबो, शरीफा रोपल। गाछक बीचमे अनारस, हरदी-आदी सेहो रोपल देखि खुशीसँ गद्-गद् होइत बड़का काका बजलाह- ''रवि, तेहन वृन्दावन सजौने छह जे एत्तएसँ जाइक मने नै होइए।''

काकाक खुशी देखि रविया हँसैत कहए लगलनि- ''कक्का, बाढ़िक नोकसानसँ मन टूटि गेल। आगू नाथ ने पाछू पगहा देखि मनमे आबि गेल जे सभ खेत-पथार बेचि गामसँ चलि जाइ। मुदा फेर मनमे आएल जे गामसँ कतऽ जाएब। गाम-घर बाढ़िमे दहाइत अछि, रौदीमे जरैत अछि। मुदा शहरो-बाजारक दशा तँ सएह देखै छी। दिन-दहाड़े डकैती, हत्या, अपहरण, सदिकाल होइते रहैत अछि। ततबे नै कतौ भाषाक तँ कतौ सम्प्रदायक जहर वायुमंडलकेँ दुषित केने अछि।''
रविक बात सुनि मूड़ी डोलबैत काका कहलखिन- ''हँ, ई तँ लाख रुपैयाक बात कहलह। हम तँ बुढ़ा गेलौं। दू-चारि सालक मेहमान छी। भने भगवान आँखिक इजोत लए लेलनि। ने किछु देखब आ ने दुख हएत। छोड़ह दुनियाँदारीकेँ, अपन कहह।''

बड़का काकाक जिज्ञासा देखि रविया बाजल- ''कक्का, घर-सँ-बाहर धरि एक्के रंग बूझि पड़ल। की करी की नै करी! मनमे एबे नै करए। बड़ी कालक बाद मन पड़ल अपन देश आ पूर्वज। जहियेसँ मनुख ऐ धरतीपर अछि तहियेसँ ने हमर-अहाँक वंश सेहो छथि। जँ से नै रहितथि तँ अखन केना रहितो। तहिना तँ अपन देशो (मिथिला) अछि। अदौएसँ मिथिलाक चर्च बेद-पुरानमे अछि। तइ बीच लाखो भूमकम, अन्हर-बिहाड़ि, पानि-पाथर, बाढ़ि आएल होएत। केना अपन पूर्वज सहलनि? की अपनो सभमे ओइ वंशक खून नै अछि? मनमे उत्साह जगल।''
बड़का काका- ''वाह! अच्छा, ऐ बगीचाक विषयमे कहह?''
रविया- ''कक्का, तेसर साल मद्रासी बेपारी ट्रकपर फल-फलहरीक गाछ बेचैले आएल। हमहूँ पनहरटा गाछ कीनि कऽ रोपलौं। वएह छी। परुँकों-तेसरों मोजरल रहै मुदा मोजर तोड़ि देलिऐ। एकटा-दूटा आम फड़ैत मुदा गाछक सेखिए चलि जाइत छलैक। बड़हनमो खूब अछि। तीन्हिये सालक गाछ छैक, सए-सवा-सए कऽ फड़ल अछि। अपने ऐठामक गुलाबखास जकाँ अछि मुदा पकैत अछि ओइसँ पहिने। यएह आम खुआएब। आब आगू चलू तरकारीक खेत दिस।''

खेतक आड़िपर अबिते कक्काक नजरि चोन्हरा गेलनि। तरहत्थीसँ आँखि पोछि देखलनि तँ मनमे शंका भेलनि। जइ जेठमे धार-पोखरि-इनार सूखि जाइत अछि, बाध-बोनमे लू चलैत रहैत अछि, खेतसँ धधड़ा जकाँ ताव उठैत रहैत अछि ओइ खेतकेँ हरिअर वस्त्र पहिरा गहना-जेवरसँ सजा नायिका जकाँ मलड़बैत अछि, ई नान्हिटा काज नै अछि। मुदा काजो ओहन अछि जे सोझे स्वर्ग बनबैत अछि। जिज्ञासा भरल नजरिसँ काका पुछलखिन- "रबी, की सभ लगौने छह?"

रविया- "कत्ते कहब काका, एक बेर घूमिये कऽ देखि लियौ। सुरुजो बारहसँ निच्चाँ उतरैपर छथि। चलू भोजन कऽ लिअ।"

- "मन भरि गेल। खाइक छुधा मेटा गेल। होइए जे जहिना कृष्ण वृन्दावनमे रहथि तहिना हमहूँ एतै रहि जाइ।"

:::::::::

४. तिलासंक्रान्तिक लाइ

धानक लड़ती-चड़ती पतराइते गमैया विद्यालयमे तिलासंक्रान्तिक पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। विद्यालयक लेल ने जगहक कमी आ ने पढ़ौनिहारक। इनार-पोखरिक घाट सन पवित्र स्थान आ बिनु आरक्षणवाली महिला शिक्षिका। शिक्षिको सभ इमानदार। ने ट्यूशन फीस लैत आ ने दरमाहा। पढ़बैक लेल एते उताहुल जे खेनाइयो-पिनाइक चिन्ता नै। छोट दिन होइतो भानस-भातक कौड़ियो भरि ढकार नै। पावनिक विषय नम्हर तँए पूरा विषयक शिक्षक तँ नै मुदा टुकड़ी-टुकड़ी कए कऽ अपना-अपना ढंगसँ अपन हिस्साक विषय पढ़बए लगलीह।

पाँच दिन पहिनहि केदार कलकत्तासँ गाम आबि गेल। ओना ओ दुर्गोपूजामे सभ साल एबे करै छथि, तिलोसंक्रान्ति सेहो नहिये छोड़ै छथि। केना छोड़ताह? आब कि कलकत्ता ओ कलकत्ता रहल जे तीन-तीन दिन गाड़ीमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकड़ि जाएत। आब तँ छअ घंटाक रस्ता अछि। तहूमे केदार अपन गाड़ी रखने छथि, चाह-नास्ता कलकत्ताक डेरामे करै छथि आ कलौ गाममे। हुनके सबहक तँ ई दुनियाँ आ देश छी। एक तँ बैंकक मैनेजरक दरमाहा दोसर कुरसीक कमीशन आ तइपर सँ अपनो बैंकक शाखा खोलनहि छथि। कमीशने बेतन तँए स्टाफोक कमी नै। शहरे कलकत्ता सन जइठाम भीखमंगो करोड़पति अछि।

"गाममे जँ कियो मरद छथि तँ केदारे छथि। गाममे आँखि उठा कऽ हुनका दिस के तकतनि। तिलासंक्रान्तिमे अखनो सतरहटा अँचार, बीकानेरक पापड़ केदार छोड़ि के खाइत अछि? विधिपूर्वक जँ पावनि करैत अछि तँ केदार छोड़ि दोसर के?" - पोखरिक घाटपर दतमनि करैत जगदरवाली कछुबीवालीकेँ कहलखिन।

साड़ी-साया रखि कछुबीवाली घाटपर बैस झुटकासँ पएर मजैत छेलीह। मन चिन्तामे बाझल छलनि। काल्हिये पावनि छी। ने चूड़ा कुटलौंहेँ आ ने मुरही भुजलौं। जाबे चूड़ा-मुरही नै हएत ताबे लाइ कथीक बनाएब। गलती अपनो भेल जे अगते-ओरियान नै केलौं। फेर मनमे उठलनि- एक दिनक पावनि लेल महीना दिन पहिनेसँ ओरियान करए लागब। एतबे काज अछि? काजक दुआरे एको दिन ने समैपर नहाइ छी आ ने खाइ छी। जेकरा काज नै छै

सालो भरि पावनिये करए। कोनो की हम जनै छेलिऐ जे पनरह दिन पहिनेसँ शीतलहरी लाधि देतै? चूड़ा-मुरहीक ताड़ल धान भारलो ने जाएत? जइ देवताकेँ पावनि करबनि हुनका एतबो बुत्ता नै छन्हि जे अपनो पावनिक ओरियानक चिन्ता करतथि। फेर मनमे एलनि जे चूड़ा-मुरही तँ दोकानो-दौरीमे बिकाइत अछि। कीनि लेब। मुदा लाइ केना हएत? चूड़ा-मुरही तँ अखड़ा होइत अछि। अमैनियाक जरूरति नै अछि। मुदा लाइ? केहन-कहाँ हाथे, केहेन-कहाँ बरतनमे बनौने हएत? तहूमे आइ-काल्हिक बनियाँ सभ तेहन गैखोर भऽ गेल अछि जे गुड़क बदला छुएमे बना पाइ टलिया लैत अछि। दिनेमे मुरही-चूड़ा लऽ आनब आ रातिमे खएला-पीलाक बाद बना लेब। मन असथिर होइत रहनि कि जगदरवालीक बात मन पड़लनि। क्रोध फेर आपसी रस्तासँ घुरि गेलनि। तुरुछ भऽ उत्तर देलखिन- ''सतरह रंगक आकि पचासे रंगक अँचार जे केदरबा खएत तइमे कछुबीवालीक जीहोक पानि मेटेतै?''

श्यामा काकी चुपचाप नहा कऽ घर दिसक रस्ता धेलीह। अपना धुनिमे श्यामाकाकी। ने समाजसँ कोनो मतलब आ ने समाजक काजसँ। समाजक काजे बेढंग अछि। ककरो कोनो ठेकान नै। की बाजत आ की करत तेकर कोन ठेकान। एक्के मुँह जत्ते लोकसँ गप करत, एक्के गपकेँ तते रंगसँ बाजत। लगले किछु लगले किछु। तहूमे आब तेहन-तेहन अगिमुत्तू सभ भेलहेँ जे, जूरशीतलक मुइल नढ़ियाकेँ जहिना कुत्ता सभ अपना-अपना दिस दाँतसँ पकड़ि-पकड़ि घिचैत अछि, तेहिना भऽ गेल अछि नै तँ कतौ एना हुअए जे एक्के गाममे एक्के पावनि दूदिना, तीनदिना दुनू होय। तहन तँ जेकरा जे मन फुड़ै छै से करैए। सभ करत अपना मने आ हम करब लोकक मने। अपन जिनगी अछि अपन दुख-सुख अछि। अपनासँ पलखति हएत तँ दोसरो बच्चा दिस देखब। नै तँ अपन के सम्हारि देत? यएह विचार सभ श्यामा काकीक मनमे नचैत रहनि। चूड़ो-मुरहीक लाइ भइये गेल। तिलबो बनाइये लेलौं। कुरथियो-तेबखाक दालि ऐछिये। लोको सभ जीहक चसकी दुआरे कियो खेरही तँ कियो राहड़ि तँ कियो बदामक दालिक खिच्चड़ि बनबैत अछि। एते बात मनमे उठिते काकीक विचार रुकि गेलनि। कुरथीक तुलना राहड़ि, खेरहीसँ करए लगलीह। पूसक संक्रान्तिक दिन पावनि होइत अछि। राहड़ि चैत-बैशाखमे जहनकि बदाम फागुन आ खेरही जेठ-अखाढ़मे होइत अछि, तइ हिसाबे कुरथिये ने नवकी कनियाँ बनि घर एलीह। ई बात मनमे अबिते काकीक मन आगू बढ़लनि। हमरा सन दही ककर हेतै? कियो लोहा महींसक दूध पौरने हएत तँ कियो पोखरिक पानिक। मुँहसँ हँसी

निकललनि। जेहने लोक सभ ठक भऽ गेल अछि तहने देवियो-देवता सभ। अनदिना कियो दूधमे पानि फेँटि कऽ बेचैए तँ बेचैए, पावनिमे जे हुनको सभकेँ खुअबै छन्हि से ओ नै बुझै छथिन। किएक ने हड़हरी बज्जर खसा दइ छथिन। एते दिन हुनको सभकेँ शक्ति छलनि आब ओहो सभ डलडाक मधुर खा पेट बिगाड़ि लेलन्हि अछि। फेर मन अपना दिस घुड़लनि। खिच्चड़िमे जम्बीरी नेबो नीक आकि घीउ। मुदा ऐ प्रश्नपर मन नै अँटकलनि। खाइ बेरमे बुझल जाएत। फेर मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत आँखि उठा कऽ तकलनि तँ दिनकरपर नजरि पड़लनि। मने-मन प्रणाम कए कहए लगलखिन- "एहनो जाड़मे अहाँ चास-वासकेँ भरि देने छिऐ। अपना लेल कोठी माल-जाल लेल टाल, खेतक-खेत तरकारी, बाधक-बाध गहूम, दलिहन-तेलहनसँ सजल खेत। हे दिनकर बहुत जाड़ सहि जीब रहल छी, कल्लह फेरू।"
आँखि निच्चाँ होइते मनमे एलनि। आइये ने सीमापर (मकर रेखा) जेताह। काल्हिसँ तँ तिले-तिल बढ़बे करताह।

पावनिक छुट्टीमे ज्योतिषी काका गाम नै एला कि काकीकेँ आफद भऽ गेलखिन। ओना साल भरिसँ काकियोक मन बदलि रहल छन्हि। काकी जत्ते बुधियार भेल जाइ छथिन तते काकासँ मन-भेद भेल जाइ छन्हि। ज्योतिषी काकाकेँ काकीक ओइ किरदानीसँ हृदैमे चोट लगलनि। जइ दिन काकी काकाक कमाएल रुपैया चोरा कऽ बुइधिक सर्टिफिकेट कीनि लेलखिन, ओही दिनसँ काकीक आफद कक्का आ काकाक आफद काकी भऽ गेलखिन। विद्यालयसँ अबैतखिन बाटेमे पावनिपर नजरि गेलनि। कने काल गुम्म भऽ उत्तर-दछिनक सीमापर आँखि रोपलनि। आँखि रोपितहि हृदैमे हँसी उठलनि। जे लोक दक्षिणायणमे मरैत अछि तँ नर्क जाइत अछि आ उत्तरायणमे मुइलापर स्वर्ग। स्वर्ग तँ मनुख निर्मित छी जहन कि मकर संक्रान्ति ग्रह-नक्षत्रक प्रक्रिया छी। दुनू एकठाम केना भऽ गेल। बाटेसँ ज्योतिषी काकाक मनकेँ हौंड़ने रहनि। आंगनमे पएर रखिते काकी टोकि देलखिन- "तलब भेटल कि नै? अखन धरि कोनो ओरियान नै भेल अछि।"
काकीक बात सुनि काकाक मन लहरि गेलनि। आँखि गुड़ेरि काकीकेँ देखि ओसारक चौकीपर झोरा रखि हाथ-पएर धोअए कल दिस बढ़लाह। काका मने-मन सोचथि जे सभ काजक बेर फँड़बन्ही करतीह आ टाका बेरमे काका मन पड़ै छन्हि। काका अप्पन धुनिमे आ काकी पावनिक धुनिमे। तिलासंक्रान्ति सन पावनि दंगलक अखाड़ापर उतरैबला अछि, ओइ लेल

अखन धरि हाथपर हाथ जोड़ि बैसलि छी.....। मुदा पहिलुके नजरि काकीकेँ डोला देलकनि। करेज काँपि गेलनि। मन निर्णए कऽ लेलकनि जे परिवारक गारजन पुरुख होइत छथि, मान-अपमान पुरुखक कपारपर चढ़त। हम तँ अनेरे तबाह छी। जे आनि कऽ देता ओ बना कऽ आगूमे धऽ देबनि।

कलपर पानि पीब, आंगन आबि ज्योतिषी काका चौकीपर बैस तमाकुल चुनबए लगलाह। अपन भलाइ सोचि काकी बाड़ी दिस टहलि गेलीह। मुँहमे तमाकुल लैत काका आँखि घुमा कऽ पत्नी दिस देखलखिन। मन खुट-खुट करनि जे फेर ने किम्हरोसँ आबि किछु फरमा देथि। मुदा सोझमे नै देखि मन असथिर भेलनि। मनमे उठलनि, काल्हि मकर संक्रान्ति छी। जइठामसँ सूर्ज दछिन मुँहे नै बढ़ि उत्तर मुँहे घुमताह। सूर्जकेँ उत्तरायण होइते जीव-जन्तुमे सूर्जक प्रकाश नव स्फूर्ति पैदा करैत अछि। मौसमक बदलाव हुअए लगैत अछि। ऐसँ परिवर्त्तनक रूप देखि पड़ैत अछि मुदा लोकमे परिवर्त्तन की आओत? जे दछिनपंथी विचार बेवहारिक रूपमे पर्वत सदृश अपन रूप बनौने अछि से चूड़ा-लाइ खेने भेट जाएत?

संक्रान्तिक पहिल संध्या अबैत-अबैत भोरमे नहेबाक कार्यक्रम तैयार भऽ गेल। ऐ प्रश्नपर विद्यालयक सभ शिक्षिका एकमत भऽ गेलीह। ऐ कार्यक्रममे एकटा फनिगा आबि गेल। फनिगाक गंधसँ वातावरणमे गंध आबि गेल। गंध ई जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी (कमलेश्वरी) महरानी चुड़लाइक छिट्टा रखने छथिन। जे पहिने नहाइले जाएत ओकरा देथिन।
टेल्हुक धिया-पुतासँ लऽ कऽ ढेरबा धरि अपन दावा ठोकए लगल जे पहिने हम नहाएब आ कमलेसरी महरानीक चुड़-लाइक छिट्टा आनब। अपन-अपन शक्तिकेँ जगबैत संकल्पित सभ हुअए लगल।

जारनि तोड़ि कऽ अबैत काल अझप्पे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरीक चुड़लाइक छिट्टा गोपला सुनलक। मुदा किछु दोहरा कऽ नै बुझए चाहलक। माथपर ठहुरीक बोझ रहैक। मुदा भार मनसँ हटि चूड़ा-लाइक छिट्टापर पड़लै। बड़का छिट्टा, जेहन भत-भोजमे भातझकैक लेल होइत छै। भरिये दिन ने पावनि छै। कत्ते खाएब। मनमे खुशीक अंकुरा उगलै। घरपर आबि जरनाक बोझ रखि मने-मन संकल्प केलक जे सभसँ पहिने हम घाटपर जाएब। गहींर गोपला, विचारकेँ गोपनीय रखलक। माइयो-बापकेँ नै कहलक।

बारह बजे रातिमे नीन टूटिते गोपला माए-बापकेँ बिनु किछु कहनहि पोखरि दिस विदा भेल। माए बुझलनि जे लघी-तघी करए निकलल। बुद्धू (पिता) नीनभेड़ि, तँए बुझबे ने केलनि। जहिना प्रेमीकेँ अपन प्रिय छोड़ि दुनियाँमे किछु नै देखि पड़ैत छै, तहिना लाइक छिट्टा छोड़ि गोपला किछु नै देखैत। दुलकी मारैत पोखरि दिस बढ़वो करै आ आँखि-कान उठा-उठा आगुओ ताकै जे क्यो दोसर ने तँ बढ़ि गेल। ने कानसँ कोनो भनक बूझि पड़ै आ ने अन्हारमे किछु देखए। किछु काल देखि माए बान्हपर आबि तकलक तँ गोपलाकेँ नै देखलक। मनमे टराटक लगए लगलै, जे एते अन्हारमे कतऽ चलि गेल। भरिसक भकुआएलमे किम्हरो चलि ने तँ गेल। मुदा अन्हारमे देखबे कत्ते दूर करब। ओह! से नै तँ हुनको (पति) उठा दुनू गोटे चोरबत्तीक हाथे तकबै। सएह कैलक।

पनरह-बीस दिनसँ शीतलहरी चलैत। लागल-लागल पछियो संग दैत। घूरक आगियो मैलमुँह भेल। गोपलाकेँ ने रस्ता अन्हार बूझि पड़ै आ ने पोखरि दूर, ने जाड़ बूझि पड़ै आ ने पोखरिमे पानि। साक्षत् ब्रह्ममे लीन भक्त जकाँ गोपलो लाइमे लीन भऽ गेल। पोखरि पहुँचि घाटक तरमे गोपला हथोरिया दिअ लगल। जा धरि लाइक आशा मनमे रहै ताधरि खूब हथोड़लक। हथुरैत-हथुरैत देह बर्फ जकाँ जमि गेलै। जाड़ बूझि पड़ए लगलै। सौंसे देह थरथर कँपैत रहए। गोपालक मन मानि गेलै जे मरि जाएब। पोखरिसँ ऊपर भऽ घर दिसक रास्ता धेलक। ताधरि चोरबत्तीक हाथे आगू-आगू माए आ दू लग्गा पाछू पिता पेना नेने अबैत छेलखिन। फड़िक्केसँ माए थर-थर कँपैत गोपलाकेँ पुछलक- “गोपाल।”
गोपाल सुनि बुधबाकेँ खौंझ उठलै। बाजल- “मिरगी उठल छलौ जे पोखरि आएल छेलेँ?”

थरथराइत गोपलाकेँ माए अपन आँचरसँ देह पोछए लगली। बेटाक दशा देखि पिताक मन पघिलए लगलनि। जहिना गंगा स्नानक बाद नीक विचार मनमे उपकैत अछि तहिना बुद्धूक मनमे उपकलै। सोचए लगल, आइ जँ मरि जाइत तँ दिनमे केकरा तिल-चाउर दितिऐक, के तिल बहैत? दछिनबारि टोलमे सबहक बेटा-पुतोहु बाप-माएकेँ छोड़ि परदेश चलि गेल अछि। बुढ़ियाँ सभ नवकी कनियाँ जकाँ अपनेसँ तिलकोर तड़ै जाइ छथि। तिलकोरक तरुआ केहेन होइ छै ई तँ बुढ़िये कनियाँ सभ बुझै छथिन। जिबठ बान्हि

बुधबा गोपलाकेँ पजिया कऽ पकड़ि कोरामे लए डेगगरसँ आंगन दिस बढ़ए लगल। आंगन आबि पुआर धधकौलक।

जहिना गोपलाक देह भीजल तहिना देहमे सटल गंजी-पेन्टो। मुदा कपड़ा बदलैक साहस नै भेलै। देह कठुआएल, हाथ बिधुआएल, आँगरी ठिठुरल। मुदा कनियेँ कालक बाद टनकल। दुनू परानी बुधबो जाड़सँ ठिठुरल रहए। तीनू टनगर भेल। टनगर होइते गोपाल माएकेँ कहलक- ''आंडी-पेंट आनि दे।''

गोपाल पेंट-शर्ट पहीरए लगल। तीनूक सिरसिराएल देह आगिक गरमी पाबि वसन्ती हवामे टहलए लगल। बुधबा पत्नी दिस देखि हाथ पकड़ि, पहुँचल फकीर जकाँ बाजल- ''आइ, गोपला हाथसँ चलि जाइत। सबहक अंगनामे पावनिक उत्साह रहितै आ अपना दुनू गोटे बेटाक सोगमे कनैत दिन बितबितौं।''

पिताक बात सुनि आशा चौंकि गेलि। जेना भूमकमक धक्का धरतीकेँ लगैत तहिना आशाक हृदैमे धक्का लगल। धड़फड़ा कऽ उठि कोठीपर राखल मुजेलासँ दूटा गोल-गोल लाइ लेने गोपलाक हाथमे देलक। हाथमे चूड़ाक लाइ अबिते गोपाल हबक मारलक। मुदा तेहन सक्कत जे ठोर चँछा गेलै, मगर दाँतसँ लाइ नै कटलै। माएकेँ कहलक- ''लाइ कहाँ टुटैए।''

बेटाक बात सुनि आशाक मनमे खुशी उपकल। अपन कारीगरीकेँ परीक्षामे पास देखि मुस्की दैत पति दिस देखि बाजलि- ''तेहेन पाकमे लाइ बनौने छी जे बिना सिलौट-लोढ़ीसँ सुनत?''

बेटाकेँ बुद्धू पुछलक- ''आइ तँ कतौ नाचो-ताँच ने होइ छै तखन किअए तूँ रातिमे एते दूर चलि गेलेँ।''
बिच्चेमे आशा बाजलि- ''लघी-तघी करैले उठल हेतै, भकुआएलमे बौआ गेल हेतै।''
हाँइ-हाँइ गोपाल मुँहक लाइकेँ चिबा कऽ घोंटि माए दिस देखि बाजल- ''लोक सभ साँझमे बजै छेलै जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी लाइ रखै छथिन। उहए अनैले गेल रहौं।''
गोपलाक बात सुनि बुद्धुक मन महुरा गेलै। मने-मन बाजल जे अपना कमेने नै हएत ओ भोला बाबा बड़दक.......। मुदा क्रोधकेँ ऐ दुआरे मनमे दबने

रहल जे गामक लीला सभ आँखिक सोझमे नाचए लगल रहै। जे सभ जुआनीमे, मद-मस्त भोम्हरा जकाँ जिनगी बितौलनि, बेटा-पुतोहुक अछैत मुँहसँ धुँआएल चूल्हि फूकए पड़ैत छन्हि, जइसँ दुनू आँखिमे नोर टघरैत रहैत छन्हि। मुदा ओ सभ तेकरा हृदैक बेथा नै, धुँआ लागब बुझै छथि। बुद्धूक हृदए पसीज गेलै। मुरखो अछि तैयो तँ बेटे छी। बरखे ने चौदहटा भऽ गेलै मुदा भरि दिन तँ असकरे लग्गी लऽ कऽ बोनाएल रहैए। ने खाइक ठेकान रहै छै आ ने नहाइक। तहन बुद्धिसँ भेँट केना हेतै?

बेटाक बात सुनि माएक मन उमड़ि गेलनि। बुझबैत बजलीह- ‘‘रौ बौआ! अपना की कोनो चीजक कमी अछि। जते रंगक धान गिरहतकेँ होइ छै तते अपनो ने होइए। सतरियाक चूड़ा कुटने छी, लाइ बनौने छी आ ओकरे खिच्चड़ियो रान्हब।’’

पछुआरक रस्तापर गल्ल-गुल्ल सुनि आशा घरसँ निकलि डेढ़ियापर पहुँचलीह कि महरैलवालीक बाजब सुनलनि। डेढ़ियेपर ठाढ़ भऽ सुनए लगलीह। महरैलवाली हड़ड़ीवालीकेँ कहलखिन- ‘‘हम तँ आध पहर रातिये नहेलौं। अखन धरि अहाँ पछुअएले छी।’’
हड़ड़ीवाली- ‘‘अहाँ जकाँ रातिमे कुकुड़ घिसिऔने छलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब।’’

दुनू गोटेक गपकेँ दबैत तमोरियावाली जोर-जोरसँ पुतोहुकेँ कहैत रहथिन- ‘‘तीन दिनसँ बोखार छेलह तहन एहन समैमे भोरे किअए नहेलह?’’

मुदा पुतोहु उत्तर नै देलकनि। आशाकेँ मन पड़लनि जाड़सँ कँपैत गोपाल।

:::::::::

५. भाइक सिनेह

बारहसँ बेसी राति ढहि चुकल मुदा एक नै बाजल छलैक। अगहन मासक अन्हरियाक चतुर्दशी। एक तँ डम्हाएल अन्हार तइपर झक्सी जकाँ ओस खसैत। आँखिक रोशनी एते दुबरा गेल जे अपनो देह भरि नै देखि पबैत छलौं। जाड़क राति, तँए लोक सबेरे सीरक सरिया कऽ ओछाइन पकड़ि लैत छल। पहिल नीन पूड़ि कऽ टूटिते शिष्टदेवक मन छोट भाए विचारनाथपर पहुँचल। सभ तरहेँ श्रेष्ठ रहितो आँखिक सोझेमे परिवार टूटि गेल। जिनगी तँ ओहन जाल नै, जइमे ओझराएब अनिवार्य अछि। विधाता तँ सभ किछु दए मनुखकेँ पठबैत छथिन तहन किअए लोक मकड़ा जकाँ अपने करनीसँ ओझरा जाइत अछि। विवेकमे केना भूर भऽ जाइ छै जे हंस नै बनि कऽ कार-कौआ बनि जाइत अछि। परिवार भलहिं फूट भऽ गेल हुअए मुदा विचारनाथ तँ छोटे भाए छथि। पितातुल्य छिऐ। कियो बुझै वा नै बुझै, अपने तँ जरूर बुझै छी। अखन धरि जते दुनियाँ आ उगैत सूर्जक दर्शन हमरा भेल अछि ओतेक तँ विचारनाथकेँ नहिये भेलैहेँ। परिवार टूटैक दोख केकरा लगतै। पिता-तुल्य तँ पिरवारमे हमहीं छिऐ। मनुखक जिनगीक गाड़ी समैक संग चलैत आएल अछि आ आगुओ चलिते रहत। सोचैत-विचारैत शिष्टदेवक हृदए बर्फ जकाँ पघिलि-पघिलि पानि हुअए लगल। पिपनीमे अँटकल नोरक बुन्न सरस्वती नदीक धार जकाँ पहाड़पर सँ समतल भूमिमे बहए लगल। नोरक संग भाइक सिनेह सेहो निकलल। जिनगीक सभ बाटमे विचारनाथ पाछू अछि तँए ओकर बाँहि पकड़ि आगू खिंचबाक अछि। पाँच समांग कमेन्हिारक परिवार अछि। ओ दुइये परानी अछि। घरक कोनो वस्तु न्किालि कऽ देलासँ पत्नी देखि लेती मुदा खरिहानक धानक बोझ तँ नै ने देखती।

बिनु ठेकानल रातिमे विचारनाथक नीन सेहो टुटल। नीन टूटिते मनमे उठल जे जइ भैयाक संग चंदेसर, विदेसर, जागेसर महादेव स्थान संगे जाइ छलौं। की बेटो-भातिज संगे जाएत? एहेन टुट परिवारमे कोन। भेल? जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहियासँ जहिना भैयाक संग रहैत एलौं, भीन होइसँ पहिनो धरि तँ ओहिना रहलौं। मुदा कोन रोग परिवारमे केम्हरसँ घुसि आएल जे दुनू भाँइ महींसक सींग जकाँ भऽ गेल छी। मुदा भैयाक दोख कहाँ कतौ छन्हि। दू परिवारसँ दुनू दियादिनी आबि दुनू भाँइकेँ दू दियाद बना देलक। दुनू भाँइमे जेठ-छोटक बेवहार कहाँ अछि। दुनू भाँइ तँ भइये-

बच्चा छी मुदा दियादिनीमे से कहाँ छै? माए तुल्य भौजीक दोख केना लगेबनि मुदा की ओ छोट दियादिनीकेँ छोट बहिन बुझै छथिन..?

मनुक्खोक अजीब गति अछि। जा धरि सम्मिलित परिवार रहैत छैक ताधरि दुनियाँक सभ रोग परिवारकेँ पकड़ने रहैत छैक मुदा परिवार टूटिते रोग पड़ा जाइत छैक। खैर किछु होउ, जा धरि जीबै छी ताधरि भैयाकेँ भइये बुझबनि भलहिं ओ जे बुझथि। जहिना आमक वंश बढ़ैक दू रस्ता अछि। डारिसँ गाछ जोड़ि जे कलम बनैत अछि से पुन: वएह आम रहैत अछि मुदा आँठीक जनमल गाछ दिनानुदिन रूप बदलैत, सभ किछु बदलि लैत अछि। एक हिस्सा रहितो भैयाकेँ पाँच गोटे खेनिहारो छन्हि आ तीनू भाए-बहिनकेँ पढ़बैयोमे खर्च होइत छन्हि। हमर तँ नापल-जोखल अढ़ाइ गोटेक परिवार अछि। एक सम्पत्तिमे भैयाक दोबर खर्च छन्हि। सहोदर रहैत जँ भैयाक दुख हम नै बुझबनि तँ आन थोड़े बुझतनि? जइ धरतीपर राम-लक्ष्मण सन भैयारी भऽ चुकल अछि, की हम ओही धरतीपर जन्म नै लेने छी।
चुपचाप ओछाइनपरसँ उठि खरिहान जाय धानक जाकमे सँ एक बोझ उठा भाइक खरिहान दिस विदा भेल। तइ काल शिष्टदेवो अपना खरिहानसँ धानक बोझ उठा विचारनाथक खरिहान दिस चलल। दुनू भाँइक खरिहानक मुँह दू दिस रहने किछु क्षणक रस्ताक दूरी बनि गेल। बीच बाटपर दुनू दिससँ दुनू भाँइ बोझ उठौने एक दोसराक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मुदा अन्हार रातिक दुआरे कियो ककरो चिन्हलक नै। दुनूक मनमे चोरक शंका भेल। मुदा हल्लो केना करत? अखन तँ दुनू चोरे छल। भलहिं अपने धान किअए ने छलैक। मक्खन चोर कृष्ण तँ नै छल जे चोरा कऽ खाइयो लैत आ झूठ बाजि छिपाइयो लितए। खरहोरिक कड़ची जकाँ दुनू भाँइ सजीव रहितो निर्जीव आ निर्जीव रहितो सजीव ठाढ़ रहल। मुँहमे बोल नै, आँखिमे नोर नै। अमरलत्ती जकाँ दुनू हृदए ओझरा कऽ लटपटा गेल। एक क्षणक लेल जेना सरस्वती नदीक धार बहब छोड़ि असथिर भऽ मोटाए लगल।

मुड़ी उठा शिष्टदेव अकास दिस तकलक। उतरे-दछिने डगहर आ माथसँ कनेक निच्चाँ सतभैयाँकेँ पच्छिम दिस हिया-हिया कऽ देखए लगल। सतभैयाँपर सँ नजरि निच्चे ने उतरैत। तइ काल उतरबरिया गाछपर चकबी-चकेबाक झुण्ड देह डोलबैत भोरक इशारा करैत बोली देलक। चकवीक आबाज सुनिते शिष्टदेवक मनमे आएल, हो-ने-हो, कहीं पत्नी जागि नै गेल होथि। मुड़ी निच्चाँ करिते मुँहसँ फूटलै- "के?"
बोलीक आबाज अकानि विचारनाथ उत्तर देलक- "हम।"

“हम” सुनि शिष्टदेवक मन कहलक भाय विचारनाथ छी मुदा- तर्क कहलक एत्ती राति कऽ बोझ उठौने कतए जाइए। ताड़ियो-दारू तँ नहिये पीबैए जे पसीखाना जाइत होएत आकि भट्ठीखाना। सामंजस्य करैत मुँहसँ बाजल- “बौआ।”
“भैया।”
दुनूक मुँह एक्के बेर बाजल- “हँ।”
शिष्टदेव दोहरौलक- “एहेन काजर सन कारी रातिमे बोझ कतए नेने जाइ छहक?”
जहिना कारिखकेँ सिनेह हृदए लगा चमक आनि दैत आ आँखिक गुण बढ़बैत अछि तहिना विचारनाथक हृदए चमकल- “भैया, अहाँक खर्च देखि मन कहलक जे पाँच बोझ धान दए अबहुन।”
दुनू भाँइक मनमे उठल- “भीन किअए....?”

जा धरि सदनदेव आ श्रद्धावती जीबैत रहथि ताधरि स्वर्गक परिवार छलनि। अपन अमलदारियेमे सदनदेव दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा बिआह-दुरागमन करा जिनगीक लीलासँ निचेन भऽ गेल छलाह। सोलह बीघा जमीनक किसान परिवार, बाढ़ि-रौदीक बीच रहितो दोसराक सेवाकेँ कर्ज बूझि अपन परिवारकेँ सालक आमदनीक भीतरे खर्च कऽ रखि उगरल आमदनीसँ कातिक मास भागवत आ भोज कए अगहनसँ नव जिनगीमे पएर रखैत छलाह। ने बेटाकेँ किछु अढ़बैत छलाह आ ने पत्नीकेँ। अढ़बैक प्रयोजने नै। परिवारकेँ संस्था बूझि अपन-अपन समैक उपयोग शक्तिक अनुकूल सभ कियो काजमे लगबैत रहैत छलाह। अपने अनुकूल परिवार देखि सदनदेव दुनू भाँइक बिआह केने छलाह। शिष्टदेवक बिआह बीस बीघाबला लालबाबूक परिवारमे आ विचारनाथक बारह बीघाबला श्रमदेवक परिवारमे भेलै।

तइ समए महिला शिक्षा अबैध रहने कैकेयी सेहो निअमक पालन करैत रहलि। जइसँ पितो -लालबाबू- खुश भेला। माल-जाल पोसैले एकटा नोकर छलै आ खेती जने-हरवाह हाथे होइ। अंगनाक मालिक पत्नियेे रहनि। खाइ-पीबैक चहटि पत्नीकेँ नैहरेसँ लगल रहै जइ दुआरे बेटी-पुतोहुकेँ रहितो भानस अपने करैत छेलीह। गठुलासँ बेटी जारनि आनि दैत छलनि आ घरसँ बरतन-बासन आनि पुतोहु चूल्हि लग दऽ देनि। अपने तँ तरकारिये बनबए, चाउरे फटकए आ दालियेक खोंइचा बीछैमे पसेना पोछैत रहैत छेलीह।

चूल्हिक एक भाग पुतोहुकेँ आ दोसर भाग बेटीकेँ बैसाए बीचमे अपने बैस सभ दिन नैहरक खिस्सा सुनबै छेलीह जेकरे चलैत ने बेटी परबाबाक नाओं आ ने ददिया ससुरक नाओं पुतोहु बुझैत छलनि।

बाढ़िक उपद्रवसँ परिवार चलब कठिन बूझि श्रमदेव पितियौत भायकेँ सातो बीघा खेत सुमझा परिवारक संग कलकत्ता चलि गेल। माए-बापक संग साते बर्खक दमयन्ती सेहो चलि गेलि। रिसरा जूट मिलमे श्रमदेव नोकरी ज्वाइन केलक। पक्का आठ घंटाक ड्यूटी। रस्ताक समए श्रमिकक। डेराक बगलेक स्कूलमे दमयन्तीक नाओं लिखा देलक। संगी-साथी सभसँ पँइच रुपैया लऽ कऽ दस किलो दूधवाली गाए कीनि पत्नीक लेल सेहो काज ठाढ़ कऽ लेलक। बच्चेसँ माने साते बर्खसँ दमयन्ती थैर-गोबर करैत-करैत गाए पोसन्हिारि भऽ गेलि। आठ बर्ख नोकरीक उत्तर मिलमे बेतनक लेल श्रमिक सभ हड़ताल केलनि। मिलमे ताला लटकि गेल। नोकरीक डगमगाइत स्थिति देखि श्रमदेव अपन अर्जल सभ किछु बेचि पुन: घर घुमि गेल। सस्त जमीन रहने पाँच बीघा जमीनो आ तीनटा गाइयो कीनि दोहरी काज ठाढ़ केलक।

समैक संग चलि दुनू भाँइ शिष्टदेव सेहो परिवारक गाड़ीकेँ पटरीपर चढ़ा अपन गतिये चलबैत रहल।

अंगनाक मालिक कैकेयी आ सहयोगीक रूपमे दमयन्ती रहए लगलीह। जेठ होइक नाते कैकेयी मुँहक बले जुइतो चलबए लगली आ हाथ-पएरकेँ आरामो दिअ लगलीह। यएह आराम काल भऽ भीन करौलक। से कतेक उचित? मुदा दुनू भाँइक बीचक सिनेह पुन: एकाकार कऽ देने छल।

:::::::::

६ प्रेमी

फगुआक दिन। मुरगाक बाङ सुनिते ओछाइन छोड़ि पक्षधर बाबा परिवारक सभकेँ उठबैत टोलक रास्ता धेने गौआँकेँ हकार दिअऽ विदा भेलाह। मनो गद्‌गद्। खुशी भीतरसँ समुद्रक लहरि जकाँ उफनैत रहनि। गौआँकेँ फगुआक भाँग पीबाक हकार दए दरबज्जाक ओसारपर बैस गर अँटबए लगल जे दस किलो चीनी, मसल्ला आ भाँगक पत्तीक ओरियान तँ कइये नेने छी। आब खाली बाजा-गाजा संग लोककेँ एबाक अछि। एते बात मनमे अबिते उठि कऽ भाँगक पत्ती आ मसल्ला -मरीच, सौंफ, समतोलाक खोंइचा, गुलाब फूलक पत्ती, काबुली बदाम- लऽ आँगन जाए पुतोहुकेँ कहलखिन- ''कनियाँ, बुरहीकेँ पुआ-मलपुआक ओरियान करए दिअनु आ अहाँ भाँग पीसू। खूब अमैनियासँ पत्ती धुअब। तिनसलिया पत्ती छी, जल्ला-तल्ला लगल अछि।'' कहि ओसारपर सभ सामान सूपमे रखि दरबज्जा दिस घुरि गेलाह। हँ-हूँ केने बिना गांधारी मसल्लाक पुड़िया निच्चाँमे रखि पत्तीकेँ सूपमे पसारि आँखि गड़ा-गड़ा जल्ला ताकए लगलीह। मनमे उठलनि जे आइ बूढ़ा सनकि-तनकि तँ ने गेलाहैं। एत्ते भाँग लऽ कऽ की करताह। मुदा किछु बजलीह नै। आँखि उठा कऽ देखि बिहुँसि कऽ नजरि निच्चाँ कऽ लेलनि। ओना मिथिलाक नारी आँखिमे गांधारी जकाँ पट्टी बान्हि घरती सदृश सभ किछु सहैत एलीह। दरबज्जापर बैस पक्षधर सोचए लगलाह- जिनगीक एकटा दुर्गम स्थान दुर्गा टपा देलनि। मने-मन दुनू हाथ जोड़ि हृदैसँ सटा हुनका गोड़ लगलनि। सुकन्या अपना विचारसँ जिनगीक प्रेमी चुनलक। केना नै आनन्दसँ जीबैक आसिरवाद दितिऐक। जइ फुलवारीकेँ लगबैमे साठि सालक श्रम लगल अछि ओइ श्रमकेँ, जहिना छोट-छोट बेदरा-बुदरी टिकुली पकड़ि पुनः उड़ा दैत अछि तहिना हमहूँ उड़ा देब? कथमपि नै।

रूपनगर हाइस्कूलक बोर्ड परीक्षाक सेन्टर प्रेमनगरक हाइस्कूल भेल। देहाती स्कूल रहितो परीक्षार्थीकेँ डेराक लेल मनमे कोनो चिन्ता नै। सबहक मनमे एते खुशी जे डेरापर धियाने ने जाइत। सभ निश्चिन्त जे गाम-घरमे अखनो विद्याकेँ देवी स्वरूप बूझि सभ मदति करए चाहैत छथि। जँ मधुबनी सेन्टर होइतए तहन ने डर होइतए जे मेहता लौजमे सभ सामान चोरिये भऽ

जाएत, तँए असुरक्षित अछि आ प्रोफेसर कौलनीक भाड़े तते अछि जे ओतेमे तँ विद्यार्थी परीक्षाक सभ खर्च पुरा लेत। ओना प्रेमनगरक सइयोसँ उपरे कुटुमैती रूपनगरमे अछि, तँए किएक ककरो मनमे रहैक चिन्ता होइतैक। तहूमे प्रेमनगर हाइस्कूलक हेडमास्टर तेहन छथि जे स्कूलक समैमे स्कूलक काज करै छथि बाकी बारह बजे राति धरि विद्यार्थीक खोज-पुछाड़िमे लगल रहै छथि जे ककरो कोनो तरहक असुविधा तँ ने भऽ रहल छै। तहूमे आनन्दी बाबाक दरबज्जा तेहेन छन्हि जे इलाकाक लोक अपन रहैक ठरे बुझैत अछि। घर्मशल्ले जकाँ। धन्यवाद यशोदिया दादीकेँ दियनि जे बुढ़ाड़ियोमे अभ्यागत सबहक अँइठ-काँठ बारह बजे राति धरि उठबिते रहै छथि।

परीक्षासँ एकदिन पहिने लोचन सभ समान शूटकेशमे लऽ साइकिलसँ प्रेमनगर पहुँचल। लोचनक परिवारकेँ पक्षधरक परिवारसँ साठियो बर्ख ऊपरसँ दोस्ती अबैत रहनि। आजादीक हुड़-बड़ेड़ाक समए रहए। जहिना गामक धियापूता गुल्ली-डंटासँ क्रिकेटक मनोरंजन करैत अछि तँ शहरक धिया-पुता जगहक अभावमे खेलक स्कूलमे नाओं लिखा मनोरंजन करैत अछि, तहिना पक्षधरो आ ज्ञानचन्दो आजादीक लड़ाइमे पढ़ाइ छोड़ि समाजक बीच आबि हुड़-बरेड़ामे शामिल भऽ गेला। समाजक काजमे हाथ बँटबए लगलाह। समाजमे ककरो ऐठाम बेटीक बिआह होइ आकि बरिआती अबैत तँ अपन बहिन बूझि, बिनु कहनौं पाँच दिन निश्चित समए दिअए लगल। तहिना आरो-आरो काज सभमे हाथ बँटबए लगलाह। मुदा अस्सी बर्खक उपरान्तो पक्षधर पक्षधरे आ ज्ञानचन्द ज्ञानचन्दे रहि गेलाह। कहियो कियो नेता नै कहलकनि। हँ एत्ते जरूर भेलनि जे भाइ-भैयारी भेने गाममे तते भौजाइ भऽ गेलनि जे वसन्त छोड़ि ग्रीष्मक रस्ते घेरि देलकनि। आब तँ सहजहि बुढ़ाड़ीमे धियापूताक संग रंगो-रंग खेलै छथि आ जोगीड़ो गबै छथि। गाम स्वर्ग जकाँ लागि रहलनि अछि।
किएक नै मन लगितनि जइ गाममे कालिदास सन विद्वान भेलाह जे जही डारिपर बैसब ओही डारिकेँ काटब मुदा ने तँ कुड़हरिक धमक लगत, ने डारिये डोलत ने दुनू हाथे कुड़हड़ि भाँजब तँ देह डोलत आ ने दुनू पएरक बाइलेंस गड़बड़ाएत। निश्चिन्तिसँ जखन डारि खसए लगतै तखन ओइपर बैसले-बैसल धरतीपर चलि आएब, एहेन विद्वान् सभसँ तँ गामे भरल अछि। एते दिन, अपराधीक संख्या कम रहने ओकरा सबहक नजरि निच्चाँ रहैत छलैक मुदा आब केकरा कहबै अपनो घरवाली धमकी देती जे माए-बाप आ भाइ-भौजाइक पाछू लगल रहै छी आ अपना धिया-पुताले किछु करबे ने करै

छी। ऐ जिनगीसँ जहर-माहुर खाए कऽ मरबे नीक। हौ बाबू, हमरा एहेन भ्रममे नै दएह। ऐ दुनियाँमे ने कियो अप्पन छी आ ने बिरान। सीता जकाँ लक्ष्मणक रेखाक भीतर रहह। नै तँ रावण औतह आ लऽ कऽ चलि जैतह। अपन-अपन पएरपर ठाढ़ भऽ गंगोत्रीसँ निकलैत गंगाक पानि जकाँ, जे साथीक संग ऊपर-निच्चाँ होइत प्रशान्त महासागरमे मिलैत अछि तहिना समैक संग चलैत रहह।

पक्षधर बाबाक घर-दुआर लोचनकेँ देखले। ककरो पूछैक जरूरते किएक होइतै। साइकिल हड़हड़ौने दरबज्जापर पहुँचि साइकिलसँ उतरि घरक देबालक पजरामे साइकिल ठाढ़ कए दुनू हाथे बाबाक पएर छूबि गोड़ लगलकनि। बाबाकेँ बुझले रहनि, कहलखिन- "भने अखने चलि एलह। सभ सामान सरिया सेन्टरपर जा कऽ देखि-सुनि अबिहह।" कहि पोती सुकन्याकेँ सोर पाड़लखिन। मुदा लोचनो तँ अंगना-घर जाइते-अबैत रहए। सुकन्याकेँ लोचन आंगनसँ बजा अनलक। भाए-बहिन जकाँ दुनूकेँ देखि पक्षधर सुकन्याक कहबाक बात बिसरि दुनू गोटेकेँ कहलखिन- "बाउ, आब तँ हम चलचलाउ भेलियह। तोरे सबहक पार ऐ दुनियाँमे एलहहेँ। दुन्यिाँमे जते मनुख अछि ओ अपना समैक जिम्मा लऽ जीबैत अछि। अखन तूँ सभ सुकुमार कोमल किसलय सदृश छह। मनुख बनि जिनगी जीबिहह। हम दुनू संगी -पक्षधर आ ज्ञानचन्द- दू जातिक रहितो संगे-संग जिनगी बितेलौं, जे समाजोक लोक बुझै छथि। मुदा हुनको धन्यवाद दइ छियनि जे संगीक महत अदौसँ बुझैत आएल छथि। एकरे फल छी जे जाति-कुटुम्बसँ कनियो कम दोस्तीकेँ नै बुझल जाइत छैक। संगे-संग जहलो कटलौं आ एक्के ओछाइनपर सुतबो करै छी। मिथिलांचलक कोनो राजनीतिक आकि सामाजिक संगठनक बात होइ मुदा की ऐ संस्कृतिकेँ आँखिक सोझमे नष्ट होइत देखि सकै छी।"

मन पड़लनि गाड़ीक ओ दिन जइ दिन जहल जाइत काल दुनू गोटेकेँ पैखाना लागि गेल आ हाथमे हथकड़ी छल। ट्रेनक पैखाना-कोठरीमे पानि नै। की कएल जाए? जेबीसँ रुमाल निकालि दू टुकड़ीमे फाड़ि दुनू गोटे शुद्ध भेलौं। आँखि ढबढबा गेलनि। भरल आँखिसँ पोतीकेँ कहलखिन- "बुच्ची, दरबज्जापर रहने बौआकेँ पढ़ि नै हेतै। एक तँ पढ़बह कि खाक। बहुत लिलसा छल जे परिवारमे इंजीनियर-डॉक्टर देखिऐक मुदा से हमरा सन-सन परिवारबलाक लेल सपना नै तँ आरो की अछि। एक दिस पनरह-बीस लाखक पढ़ाइ आ दोसर दिस दुइयो हजार महीनाक आमदनीक परिवार नै। मुदा अखन बच्चा छह, आशासँ जीबैक उत्साह मनमे जगबैक छह।"

जहिना जनकजीक फुलवारीमे राम आ सीताक प्रथम मिलन भेलनि तहिना सुकन्या आ लोचनक बदलल रूपक बीच भेल। अखन धरि जे बच्चा सदृश परिवारमे खेलौना छल ओकरा कानमे एकाएक जिनगीक बात पड़लै। जिनगीक लेल प्रेम भरल संगीक जरूरति होइत अछि। जिनगीक बात सुनि दुनूक देह सिहरि गेलै। सिहरैत देह देखि पक्षधर कहलखिन- ‘‘बुच्ची, लोचन तोहर पाहुन भेलखुन। अंगनेक ओसारक कोठरी दऽ दहुन। सभ देखभाल तोरे ऊपर। कोनो तरहक असुविधा पढ़ैमे नै होइन।’’

पक्षधरक बात सुनि सुकन्या शूटकेस माथपर उठा लोचनक पाछू-पाछू विदा भेल। कोठरी खुजले रहै, अँटकैक कतौ जरूरते नै पड़लैक। एकजनियाँ चौकी, कपड़ाक लेल अलगनी, एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी। कुरसीपर शूटकेश खोलि लोचन कपड़ा निकालि चौकीपर रखलक। चौकीपर रखिते सुकन्या ओही अलगनीपर लोचनक कपड़ा रखलक जइपर पहिनेसँ ओकर अपनो राखल कपड़ा छलैक। साओनक झूला जकाँ दुनूक कपड़ा झुलए लगल। किताब, काँपी, कलम निकालि टेबुलपर रखलक। एक्के कोर्सक पोथी दुनूक। लोचन मैट्रिकक सेनटप केंडीडेट आ सुकन्या मैट्रिकक विद्यार्थी। टेबुलक बगलमे लोचन लग ठाढ़ भऽ सुकन्या पोथी फुटा कऽ नै रखि, सभकेँ जोड़ा लगा-लगा रखलक। दुनूक नजरि दुनूक किताब-काँपी-पेनक जोड़ापर अँटकि गेल। पहिनेसँ दोबर पोथीक थाक भऽ गेल। अएना जकाँ एक-दोसराक हृदैमे अपन-अपन रूप देखए लगल। पोथीक लिखावट प्रेसक होइत छै। तहूमे एक्के प्रेसक पोथी छलै। मुदा कॉपी तँ अपन-अपन हाथक लिखल होइत छैक। एक दोसराक काँपी उलटा-उलटा देखए लगल। देवनागरी लिखावट लोचनक सुन्दर मुदा अंग्रेजी लिखावट सुकन्याक सुन्दर। एना किअए भेल? एक्के हाथक लिखावट दब-तेज केना भऽ गेल। मुदा उत्तर ककरो मनमे नै अबैत छलै। अनायास सुकन्याक मन नाँचल। एते काल भऽ गेल, अखन धरि पानियो नै अनलौं। धड़फड़ा कऽ कोठरीसँ निकलि छिपलीमे जलखइ आ लोटामे पानि नेने आबि चौकीपर छिपली रखि हाथ शुद्ध करैले लोटा बढ़ा, चौकीक गोड़थारी दिस पलथा मारि बाबाक पाहुनकेँ खुआबए बैस गेली। खेबाकाल पुरुख चुप रहैत अछि, नोन-अनोनक प्रश्न किअए उठितै। समदर्शी मिथिला छिऐ कि ने?

एक बजेसँ लऽ कऽ चारि बजे धरि परीक्षाक कार्यक्रम रहैए। पहिल दिन लोचन दुर्ग टपैले जाएत तँए सुकन्याक मन मृगा जकाँ नचैत। भिनसरेसँ सुकन्या लोचनपर नजरि अटकौने......। समैपर अपन काज पुरबैक अछि। हमरा चलते जँ शुभ काजमे बाधा होएत तँ भगवानक ऐठाम दोखी हएब। मास्टर साहेबक सिखाओल बात सुकन्याकेँ मन पड़ल। काजक भार तँ

लोचनक ऊपरमे छन्हि। हम तँ हुनकर मदतिगार मात्र छियनि। तँए नीक हएत जे हुनकेसँ पूछि लिअनि। चंचल मनमे उठलै-पूजाक तैयारीमे सभ किछु फुलडालीमे सजबैत होएत। बीचमे बाधा देब उचित नै। हो न हो फूल-पत्तीक जगहे बदलि जाइन। अनायास मनमे उठलै- हाय रे बा, घड़ी तँ देखबे ने केलौं। अगर बारह बजि गेल हेतै तँ खुएबाक दोखी के हएत? मन व्याकुल, अव्यवस्थित वस्त्र, केश छिड़िआएल, कर्मक भारसँ भादबक अन्हरिया जकाँ सुकन्याक आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलै। कतऽ जाउ, केकरा पुछिऐ? गाछो-बिरिछ नै अछि जे पूछि लितिऐ। अस्त-व्यस्त अबस्थामे सुकन्या माए लग पहुँचि बाजलि- "भानस भेलौ?"

"अखने। अखन तँ आठो नै बाजल हएत।"

"जलखइ भेलौ?"

बच्चा कहलक- "एक्के बेर खा कऽ सबेरे जाएब।"

जहिना केचुआ छोड़ैत समए साँपकेँ कष्ट छैक होइत छैक, भले ही नव जीवन किएक ने प्राप्त करत, मुदा दर्द तँ हेबे करैत छै। मीरा जकाँ सुकन्या राजस्थानक तँ नै। मिथिलाक बाला। परिवार आ समाजक लेल अदौसँ समर्पित। बम्बइक गीतक धुन बहुत मधुर होइत अछि तहिना तँ समबेत स्वरमे माए-बहिनक चैताबर, बारहमासा आ समदाउनो तँ मधु सदृश अछि। जहिना मधुमाछी उड़ि-उड़ि कखनो आमक गाछपर चढ़ि सोझे अपन प्रेमी मंजर लग पहुँचि जाइत अछि, तँ लगले माटिपर ओंघराएल चमेलीक रसकेँ आमक रसमे महामिश्रण कऽ घोल बनबैत अछि, तहिना ने हम आ लोचनो छी।

कोठरीसँ निकलिते लोचनक आँखि सुकन्यापर पड़ल। हजारो रश्मि रूपी तीर दुनूक बीच टकराए लगल। मुदा दू रंग। जहिना लड़ाइक मैदानमे वीर असीम बिसबासक संग मरैले नै बलिदान लए बढ़ैत अछि, तहिना लोचनोक हृदैमे होइत। कलीक खिलैत फूल जकाँ मुँह। मुदा सुकन्या मने-मन भगवानसँ आराधना करैत छल जे "कुरुक्षेत्रसँ लोचन हँसैत आबए।"

उचंगल मन फेर उचङि गेल। ओसारसँ निच्चाँ उतरितहि सुकन्याक हृदए लोचनकेँ पाछूसँ ठेलए लगल। जहिना बच्चा सभ माटिक पहिया, कड़चीक गाड़ी बना धनखेतीक माटि उघि-उघि अंगनाक ओलतीमे दऽ खुशी होइत जे अंगना चिक्कन बनत, तहिना आगू-बढ़ैत लोचनकेँ देखि सुकन्याकेँ खुशी भेलै। मुदा खुशी अँटकलै नै। लगले चारि बाजि गेलै। मनमे उठलै- भुखल भायकेँ जलखइ कहाँ खुएलौं। जहिना किसानक खेत दहा गेलासँ, व्यापारमे मंदी आबि गेलासँ, बेरोजगारी बढ़लासँ भीखमंगोकेँ कियो भीख

देनिहार नै रहैत छैक तहिना जे धरती करोड़ो पतिब्रता नारी पैदा केलक वहए धरती पतिहत्यास्निकेँ जन्म दऽ ओकरा जहल कटबैत छैक।
साढ़े चारि बजे बेर-बेर देखलाक बाद सुकन्याक नजरि मौकनी हाथीपर चढ़ल गणेशजी जकाँ लोचनकेँ अबैत देखि लोटामे पानि, थारीमे जलखइ परसि आंगनक ओलतीमे ठाढ़ भऽ देखए लगल। अखन धरिक लोचनक सैयो मनोहर रूप मनमे नाचए लगलै। कोठरी आबि लोचन गरमाएल देहक कपड़ा बदलि जलखइ करए लगल। विस्मित भेल सुकन्याक मुँह बाजि उठल- ‘‘केहेन परीक्षा भेल भाय?’’
‘‘बहुत बढ़ियाँ। जरूर पास करब।’’
जरूर पास सुनि सुकन्याक हृदए लोचनकेँ सीताक राम जकाँ गुण देखलक। मनमे आशाक सिहकी उठलैक। संगिये तँ जिनगीक जीत दिअबैत अछि। अपन सुखद जिनगीक मनोहर रूप लोचनमे देखि सुकन्या मोहित होइत बाजलि- ‘‘औझुका पेपर तँ नीक भेल मुदा आन दिनक जँ अधलाह हुअए, तहन?’’
‘‘ओ ओइ दिनक मेहनतिपर निर्भर अछि। एकर जबाब हँ-नइमे नै देल जा सकैत अछि।’’

आइ सातम दिन परीक्षाक अंत भेल। स्कूलसँ आबि पक्षधरकेँ गोड़ लागि लोचन बाजल- ‘‘बाबा! परीक्षा समाप्त भऽ गेल। गाम जाइ छी।’’
असिरवाद दइसँ पहिनहि बाबाक मनमे उठलनि, जहन ऐठाम काज सम्पन्न भऽ गेलैक तहन रोकब उचित नै। सबेर-अबेर भेनौं अपन घर तँ पहुँचि जाएत। बात बदलैत बाबा पुछलखिन- ‘‘केहेन परीक्षा भेलह?’’
मुस्की दैत लोचन बाजल- ‘‘पास करब, बाबा।’’
लोचनक मुस्की पक्षधरक हृदैकेँ, सलाइक काठी जकाँ, आनन्दक कोठरीकेँ रगड़ि देलकनि। मन पड़लनि जनकपुरक धनुष यज्ञ। ठहाका मारि कहलखिन- ‘‘भाग्य ककरो लिखल नै होइ छै, बनाओल जाइ छै बौआ।’’
आंगनक ओलती लग ठाढ़ सुकन्याक मन मृगा जकाँ व्याकुल भऽ नचैत छलैक। जहिना अपने नाभिक सुगंधसँ मृगा नचैत अछि तहिना सुकन्याक मन परीक्षाक समाचार सुनैले नचैत। मुदा दरबज्जो तँ दोसराक नहिये छी, सोचि आगू बढ़ल।
दुनू गोटे माने सुकन्या आ लोचनकेँ देखि पक्षधर बाबा कहलखिन- ‘‘आइ तोँ विद्याध्ययनसँ गृहस्थाश्रममे प्रवेश कऽ रहल छह। तँए बाबाक लगाओल फुलवारीक सुक्खल-मौलाएल डारिकेँ कमठौन कऽ खाद-पानिसँ सेवा

करिहह। ओइमे नव-नव कलश चलतै, जइसँ हँसैत-खेलाइत जिनगी चलतह।''

मूड़ी गोंतने लोचन आंगन आबि पानि पीब पोथी सरियबैक विचार केलक। पोथीपर पोथी गेटल देखि हाथ काँपए लगलै। सुकन्याक मन कानि उठलै। जहिना कोनो धारक दुनू मोहारपर बैसल यात्रीकेँ होइत अछि तहिना सुकन्याक मनमे दुरीक भाव उठए लगल। लोचन सफलताक जिनगीमे पहुँचि गेल आ हम? आशा-निराशाक क्षितिजपर लसकि गेल सुकन्या।

सुकन्या लोचनकेँ सीमा धरि अरिआतए विदा भेल। गामक सीमा बिला गेलै। ने लोचन सीमा ठेकानि सकल जे घुमबाक आग्रह करितै आ ने सुकन्या बूझि सकल जे अंतिम विदाइ दितैक। अजीब गामोक सीमा अछि। एक्को परिवारकेँ गाम मानल जाइत अछि -जेना भोजमे- तहिना दसोगाम माला बनि गाम बनि जाइत (दस गम्मा जाति) अछि। अरिआतने-अरिआतने सुकन्या लोचनक घर धरि पहुँचि गेलि।

पनरह दिन बीतैत-बीतैत अनेको मौगिआही कचहरीमे फैसला लिखा गेल जे 'सुकन्या पक्षधरक घरसँ निकलि अजाति भऽ गेलि।' कचहरीक फैसला सुनि सुकन्याक माए-बाप दुनू गोटेक करेज दड़कए लगलै। कनैत मन बाजए लगलै, मनो ने अछि जे कहियासँ दुनू परिवारमे दोस्ती अछि। सभ तुर हमहूँ जाइ छी आ ओहो सभ आबि जाइ छथि। मुदा आइ की देखि रहल छी। जा धरि पिता जीबैत छथि ताधरि ऐ परिवारक हमसभ के? समाजक लोकक जबाब ओ देथिन। पिताकेँ गामक लोकक बात कहलखिन। बेटा-पुतोहुक बात सुनि गरजि कऽ पक्षधर कहलखिन- ''जइ समाजमे मनुक्खक खरीद-बिकरी गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए कि ओइ समाजकेँ पंच तत्वक बनल मनुख कहल जा सकैत अछि? जँ से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो ओंगरी देखाओत तँ ओकर ओंगरी काटि लेबै। आइये दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देखि-सुनि अबै छी।

जहन भाँग पानिमे अलगि गेल तहन पुतोहु बुझलनि जे भाँग पिसा गेल। पोछि-पाछि सिलौटकेँ धोय बाटीमे रखलनि। दरबज्जापर बैसल पक्षधरक मनमे उठलनि जे नओ बाजि गेल, अखन धरि किअए ने कियो आएल। फेर मन उनटि कऽ भाँगपर गेलनि। भाँगपर नजरि पहुँचिते मनमे उठलनि जे बिनु भाँग पीनहि तँ ने सभ निसा गेल अछि। तहन भाँगक जरूरते की? किछु दिन पहिने धरि सभ गाममे एकदिना फगुआ होइत छलै मुदा आब

तीन दिना भऽ गेल। ओना तीन रंगक पतरो आबि गेल अछि। मुदा अपना गाममे तँ एकदिने अखनो धरि होइत आएल अछि आ जा धरि जीब ताधरि होइत रहत।

कीर्तन मंडलीक संग-संग आनो-आन पक्षधर ऐठाम पहुँचलाह। अनगिनित थोपरी बजौनिहार आ अनगिनत गबैयाक समारोह। चीनीमे घोड़ल भाँग। सभसँ उमरदार रहितो पक्षधर भाँग परसिनिहारकेँ कहलखिन- ''पहिने नवतुरिया सभकेँ पिआबह। वएह सभ ने बेसी काल गेबो करतह आ नचबो करतह।'' मुदा एक्कोटा नवतुरिया बाबाक बात नै सुनलक। सबहक यएह कहब रहै जे बाबा गाममे सभसँ श्रेष्ठ छथि, अनुभवी सेहो छथि। तँए जँ ओ गोबरखत्तोमे खसताह तैयो हम सभ नै छोड़बनि। नवतुरियाक बात सुनि पक्षधरक मनमे उठलनि अखन आंगनमे कहाँ छी दरबज्जापर छी। दस गोटेक बीच छी। तहन के छोट के पैघ? सभ तँ ब्रह्मेक अंश छी। तहूमे एते टुकड़ी एकठाम एकत्रित छी। दू गिलास भाँग पीब पक्षधर उठि कऽ ठाढ़ होइत फगुआ शुरू केलनि- ''सदा आनन्द रहे ऐ दुआरे, मोहन खेले होरी हो।'' ढोलक, झालि, कठझालि, हरिमुनिया, मजीरा, खजुरी, डम्फा, गुमगुमाक संग सइयो जोड़ थोपड़ीक महामिश्रणक धुनक संग कोइली सन मधुर आबाजसँ लऽ कऽ टिटहीक टाँहि धरिक बोल अकासमे पसरि गेल। ओना जमीनो खाली नै रहल। इंगलिश डान्ससँ लऽ कऽ जानी धरिक नाच आ मेल-फीमेलक जोगीड़ा जोर पकड़नहि रहए। बजनियो सभ अपन-अपन बाजो बजबैत आ कुदि-कुदि नचबो करैत। गोसाँइ डुमए बेर फेर पक्षधर भाँग बनबौलनि। अपन शक्तिकेँ कमजोर होइत देखि दोबरा-दोबरा सभ पीलक। उत्साहो दोबरेलै। पुरनिमाक राति। हँसैत चान। फागुन मास रहने अकासमे कतौ बादल नै। मुदा तरेगन मलिन भऽ अपन जान लऽ झखैत। किएक ने तरेगन अपना जान लऽ झखत? आखिर वसन्त-वसन्तीक समागमक दिन छलैक की ने।

गामक दछिनबरिया सीमापर समन जरए लगल। समनक धधड़ाकेँ पक्षधर उत्तरसँ दछिन मुँहे कुदलाह। बाबाकेँ देखिते सभ एका-एकी कूदए लगल। धधड़ा मिझा गेल। मुदा जरनाक आगि चकचक करिते रहल। समदाउन गबैत सभ घरमुँहा भेलाह।

:::::::::

७ बपौती सम्पति

आसिन अन्हरिया चौठ। गोटि-पङरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनवमी-पितृपक्ष साझिये चलि रहल अछि। क्यो-क्यो बापो, दादा, परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो, दादी, परदादी इत्यादिक निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परिबे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा इहो गोटि पङरे। किछु गोटे ठीकियौने जे एकादशीकेँ जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्षक लेल नवमी आ पितृपक्षक लेल एकादशीकेँ न्योंतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइत अछि जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन कऽ खुअबैत अछि। जेकरा ढढ़क कहैत अछि किछु गोटे मातृपक्षक लेल महिलाकेँ आ पुरुषपक्षक लेल पुरुषकेँ न्योंत दऽ सेहो खुअबैत अछि। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष मातृनवमी आ दोसर पितृपक्ष। नवमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि। दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खेबाक मन भेलै। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते रहै कि पत्नी मुनिया आबि कहलकै- ‘‘घरमे एक्को चुटकी नून अछि भनसाक बेर भऽ गेल, कखैन आनब?’’

‘‘अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमनि बनाएब ताबे हम दौड़ले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबै।’’ हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लैतै, मरचूनक दुआरे, केनादन लगलै कि थुकड़ि कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौड़ि देलकै, दोसर काज टेंगारी पीजेनाइ पछुआइत देखि आरो मन घोर भऽ गेलैक। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठाम फाटब सीने दोसर ठाम मसकि जाइत छैक तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुँहे नै ससरि रुकि गेलै। चिन्ताकेँ अटकितहि मनमे खुशी एलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवताकेँ होइत छन्हि ओकरा हम माया-जाल किअए बुझै छी। ई दुनियाँ केकरा लेल छै? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत। ई दुनियाँ उपयोग करबाक वस्तु छी ने कि उपभोग करबाक।

गुलटेनकेँ देखि आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना कहलक- ‘‘तमाकुल खा लए कक्का, तखन जैहह।’’

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक- ''बौआ, अगुताइल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी काल नै अँटकब।''

''एह कक्का, तोहूँ सदिखन अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खेबाक छुट्टी नै रहै छह।'' कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल दैते रसगर लगलै। सुआद पाबि गुलटेन बाजल- ''बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन। एहेन टिपगर माल कोन दोकानक छिऔ?''

''काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक बेपारी साइकिलपर एक बोझ तमाकुल लऽ बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीन रहल। एह काका, भरि राति ओ बेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया रहए। खाइसँ पहिने महराइ गओलक आ खेलाक बाद एक्केटा तेहन खिस्सा, रजनी-सजनीक, उठौलक जे ओरेबे ने करए। जखन डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ जे आब छोड़ि दिऔ। बड़ राति भऽ गेल। तखन जा कऽ छोड़लक। भिनसर भेने पोखरि-झाँखरि दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपरसँ साइकिल निकालि तमाकुल सरिअबए लगल। हमहूँ गिलास धोय चक्कापर रखि एलौं कि जेबीसँ दस टकही निकालि दिअए लगल आकि कहलिऐ- ''ई की दइ छी।'' ओ कहलक हम बेपारी छी कोनो अभ्यागत नै, तँए खेनाइक पाइ दइ छी। आब तोंही कहह कक्का ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत। की हम सभ अपन बाप-दादाक बनाओल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पति छी की ने? एकरा केना आँखिक सोझमे मेटाइत देखब।''

थूक फेकि गुलटेन कहलक- ''एहनो कियो बूड़िबक्की करए। पा भरि खेने हएत कि नै खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छूलह।''

अपन बड़प्पन देखि मुस्की दैत भुखना बाजल- ''ऐँह कि कइहह काका, ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल जे से केना हएत। हम कि कोनो भुखल-दुखल छी, आकि बेपारी छी। मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐक। तखन ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक, जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइये लए दइ छी। सएह छी।''

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल- ''बौआ, अखन औगुताइल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।''

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। गुलटेनकेँ देखिते झिंगुर काका कहलखिन- ''अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअह।''

माथ हसोथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल- ''अखन कटबै जोकर कहाँ भेलहेँ। जखन कानपर केश लटकऽ लगत तखन ने कटाएब।''

“बिसरि गेलह। काल्हिये ने बाबूक बरखी छिअह। हमरो चच्चा साहेबकँ छियनि। दुनू गोटे एक्के दिन ने मरल रहथि।”

झिंगुर काकाक बात सुनि गुलटेनकँ धक् दऽ मन पड़ल। बाजल- “हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जँ अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छुटिये जाइत।”

“अखनो किछु नै भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोटे लगल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।”

“अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर बेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब, ओरियान बात करब आ कि ओकरा सभकँ बजबैले जाएब।”

“असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बर्षी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैट अछि आ कम-सँ-कम एगारह गोटेकँ खाइयोले दैत अछि। तोरा सेहो एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनवमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजीकँ तीर्थेपर वर्षी पड़ि गेलनि, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नै रहलनि। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकँ खुअबै छह तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलनियोँ तँ अपन महत रखैत अछि की ने।

झिंगुर काकाक बात सुनि दोकानदारकँ गुलटेन कहलक- “हओ घोघन साहु, झब दए एक टकाक नून दए।”

गमछामे नोन बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस चलल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदए पसीझि गेलनि। स्मरण भेलनि, बाबू अनका जकाँ नै छलाह। आगू-पाछूक बात जनैत छलाह। जँ से नै जनितथि तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितथि। कोने कि कमाइ-खटाइ नै छलाह। जँ से नै छलाह तँ कातिक मासमे ओते खरचा कए कऽ भागवत केना करबै छलाह। तइपर सँ भोजो-भनडारा करिते छलाह। हमरे लए कि कम केलनि? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलनि। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नै होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी। जँ खेते रहैत आ खेती करैबाक लूरिये नै रहैत तँ छुच्छे खेते लए कऽ की होइत। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए कि दाही अछैते खेते हाट-बाजारसँ मोटा उघैत छथि। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि ककरोसँ अधलाह जीबै छी। अपन खुशहाल जिनगीपर

नजरि अबिते आनन्दसँ हृदए ओलड़ि गेलनि। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नै, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। केना लोक बजैत अछि जे जेकरा अ आ नै लिखए अबैत अछि ओ मुरुख अछि। बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मट्टियो तेल आ चिन्नि कोटासँ अनैत छलाह। बड़का-बड़का सर्टियोफिकेटबला सभकेँ देखैत छियनि जे दारु पीब लेताह आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंग्रेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छथि। तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छलाह। खाइ बेरमे अंगनामे नै रहै छलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छलाह। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छलाह आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बूझि पड़ैत छलनि तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दैत छेलखिन नै तँ ओते छोड़ि कऽ उठैत छलाह। आ हा-हा एहेन बाप होएब कि अधलाह छी। जखन काज करए जाइत छलाह तँ संगे नेने जाइ छलाह आ काजक लूरि सिखबै छलाह। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छलनि। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किअए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नै ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बालु उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलनि जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समए होइ छै। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्है़मे मदति कऽ सकैत अछि। जेकरा लूरिये ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत? अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुँहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहीक गाछीक मचकीपर नजरि गेलै। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि? बड़क गाछपर सँ बर्डू काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला, पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झुलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छहमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत? असकरे कृष्ण राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करैत छलाह, बाँसुरियो बजबैत छलाह आ आसो लगबैत छलाह। मुदा अखन तँ देखैत छी जे बाजा कियो बजबैत अछि, नाच कियो करैत अछि आ गीत कियो गबैत अछि। तेहने ने देखिनिहारो छथि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैत अछि तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैत अछि तँ कियो ओकर कानक झुमकाकेँ। गौनिहारक आबाज सुनैत, नै कि ओकर मुँह देखैत अछि।

नोनक मोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन कहलक- ‘‘बाबूक बरखी काल्हिये छी। बिसरि गेल छलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी लए जे चाउर रखने छी ओकरा निकालि रौदमे पसारि दिऔ। राहड़ि सेहो उलबए पड़त। बेरु पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइये पौरल जाएत। ओना अमहौरपर सँझुको दूध जनमि जाएत।’’

पतिक बात सुनि मुनिया बजलीह- ‘‘एहेन अहाँ बिसराह छी जे, सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत। ने कुटुमकेँ न्योंत देलौं आ ने बेटी-जमाइकेँ खबरि देलियनि।’’

‘‘अच्छा सभ हेतै। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहथि जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छथि आ पारो लगौताह।’’ कहि गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना न्योंत दऽ चोट्टे घुरि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर माने लूरिगर तेहने बिसराहो। सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दूहब, डरबुकसँ डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पाङब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांझिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटकि नाथब, हर लागएब इत्यादि काज समाजमे ककरो कऽ दैत। केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पति बुझैत अछि।

वर्षी भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसरि गेल। अपन दायित्व बूझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लागली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँचि जाइत अछि तहिना समाजोक लोक आबए लगलाह। रवियापर नजरि पड़िते गुलटेन कहलक- ‘‘रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइये लए छलौं। भने आबिये गेलह। बहुत दिन जीबह।’’

रवि- ‘‘किअए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी अंगनामे बजलीह; तब बुझलौं।’’

‘‘ठीके बुझलहक। बिसरि गेल छलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलनि। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नै हएत।’’

‘‘हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।’’

“चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुऐबनि से नीक हएत?”
“सँझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। कत्ते दूध पौरबहक?”
“दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।”
“आधा मन सँ हेतह?”
“अपना सभमे दहिये कत्ते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आ कि फल-फलहरी खाइयो चाहत से आनत कतएसँ।”
“हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो किअए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमनि कदीमा आ बाड़ीमे भट्टा अछिये। तइले पाइ किअए खर्च करबह। धड़फड़मे अदौरी बनाओल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?”
“मन होइए जे बर-बड़ीक ओरियान करी।”
“तों सनकि गेलह हेन। बर-बड़ीक घाटि कत्ते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।”
“हँ, से तँ ठीके कहलह।”
“अखन जाइ छिअह। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह। आकि पुजौनिहारो औथुन।”
“अपना सभमे कत्ते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छै।”
भगिन-पुतोहु दालि दड़ैले अबैत छलि। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजरि पड़िते मुँह बिजकबैत बाजलि- “बुढ़हा अपनो मरताह आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।” कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़लि।
गोसांइ डुमिते भाए भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भजनाक माथपर चाउर-दालिक। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आंगन पहुँचि सिंहेसरी कानल नै। माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइत छैक। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खूटापर लधैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत? ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक- “ऍंइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपाए नै यऽ जे, काल्हि बाबाक बरखी छियनि आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?”
तखने बीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेला। माथपर मोटरी रहबे करनि कि मुनिया बाजलि- “दाइ, हमर कोन दोख अछि मासे-मास जे छाया करैत एलौं

तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहन बिसराह छथुन जे बिसरि गेलखुन। आइये बुझलौं।''

माएक जबाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नै बूझि माएकेँ अगुअबैत बाजलि- ''जाबे बाबा जीबैत छलाह ताबे कत्ते मानै छलाह। आब जखन ओ नै छथि तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबनि। एगारहो गोटेक तँ ओरियान कऽ कऽ अबितौं।''

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइत अछि। मुदा हम तँ बिसरि गेल छलौं। सामंजस्य करैत गुलटेन बाजल- ''पाहुन किअए ने एलखुन?''

सिंहेसरी- ''से तूँ नै बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।''

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजलि- ''ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिये जेहने ई तेहने उ। अहूठीन तँ दहीक ओरियान भइये रहल हेन। तइले तोरा किअए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइयेक छिऐ कि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किअए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-बौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोय गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।''

पत्नी आ बेटीकेँ शान्त होइत देखि गुलटेन मुस्की दैत बाजल- ''गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। कत्ते भारी काजे अछि।''

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लागि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने पुछलक- ''बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?''

हँसैत सिंहेसरी कहलक- ''बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन कटैए।''

भोजमे खूब जस गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एम्हर-दौड़ तँ ओम्हर-ताकमे दुनू परानीकेँ रहल। मुनियाक छाती केराक भालरि जकाँ कँपैत। बिना अन्न-पानिक भरि दिन खटैत रहलीह। जेना भुख-पियास कतौ पड़ा गेलै। मुदा भोजक जस दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत, तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक- ''सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।''

खेला-पीला उपरान्त गुलटेनक मनमे, सिनेमाक रील जकाँ, नाचए लगल- ठीके ने लोक कहैत छथि जे जेहन करत से तेहन पाओत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छलनि तहिना ने हेतनि। आ-हा-हा ओंगरी पकड़ि-पकड़ि घर बन्हैक लूरि सिखौलनि। जीबैक लेल बारहो मासक काज सिखौलनि। मने-मन पिताकेँ गोड़ लगलक।

:::::::::

८ डंका

चुड़लाइ, तिलकुट आ चूड़ा-मुरही गमछाक एक भागमे बान्हि दोसर भाग दहिना हाथे पकड़ि लटकौने जीवानन्द उत्तर मुँहेक रास्ता डेग झाड़ने जाइत रहए। दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया अखड़े चौकीपर बाँहिक सोंगरक कान्हपर माथ अड़कौने भैयाकाका रस्ते दिस देखैत रहथि कि नजरि पड़िते जीवानन्दकेँ किछु पूछए चाहलनि मुदा मन रोकए लगलनि। सोगाएल मन। मुदा जीवानन्दक आकर्षित रूप देखि मन धिक्कारलकनि जे सभ दिन एक ठाम बैस नीक-बेजाएक, गप-सप्प करैत एलौं। आइ तँ सहजहि तिलासंक्रान्ति सन पावनि छी। तहन जँ नै टोकब तँ केहेन हएत। गंभीर मन मुदा मुस्की दैत पुछलखिन- ‘‘कतऽ एत्ते हड़बड़ाएल जाइ छह जीवानन्द?’’

भैयाकाकाक टोकबकेँ अनठा आगू बढ़ि जाएब जीबानन्द उचित नै बूझि रस्तेपर ठाढ़ भऽ कहलकनि- ‘‘की कहू काका, ऐ बेरक पावनि रीब-रिबेमे रहि गेल।’’

जीवानन्दक परेशानी मिलल बात सुनि भैयाकाकाक मनमे गुदगुदी लगलनि। जहिना आत्मा खूटा (रस्सी) सदृश ब्रह्मसँ मिलैत तहिना भैयाकाकाक मन जीवानन्दक बेथा-कथा सुनैले सुरसुरेलनि। चौवन्नियाँ मुस्की दैत पुछलखिन- ‘‘तिलासंक्रान्ति सन खाइ-पीबैबला पावनि, तहन तोरा केना रिब-रिबेमे जा रहल छह?’’

भैयाकाकाक बातमे जीवानन्द ओझरा गेल। मनमे उपकलै नीक काज भेने खुशीसँ हँसी लगैत अछि मुदा अधलाह काज भेने की हँसी नै लगै छै? रस्तापर ठाढ़ भेल जीवानन्दकेँ किछु फुड़बे ने करै। जहिना खेतमे हाल कम रहने अंकुड़ नै जनमैत, तहिना जीवानन्दोकेँ भेल। असमंजसमे पड़ल मन सोचलकै जे भोरसँ अखन धरिक अपने बात सुना दियनि। जँ किछु कहबनि नै तँ मनमे हेतनि जे कोनो उकड़ू काज केने अछि। मुस्कुराइत कहए लगलनि- ‘‘काका की पूछै छी, चारि बजे भोरे पोखरिक घाट परक पी-पाह सुनि निन्न टूटि गेल। उठैक विचार करिते रही आकि पत्नी आबि कऽ कहलनि जे रतुपारवाली दीदीकेँ भरिसक दर्द उपकि गेलनि। पूर मासो छियनि। भरिसक वएह कुहड़ैत छथि। सुनिते मन खुशी भऽ गेल जे खूब पावनि हएत? मुदा अपन दियाद नै रहने असथिर भेलौं। उठि कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जनानी सभ घेड़ने। मुदा हमरा देखिते सिबावाली काकी कहलनि

जे बौआ गामपर नै समहरतह, डाकडर लग लऽ जाहक।'' डाक्टरक नाओं सुनि लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे गाए-महींस जकाँ देहो-टाँग छिड़ियौने आ अड़ऽ-बोऽऽऽ करैत। एको क्षण विलंब करब उचित नै बूझि खाटक ओरियान केलौं आ तमोरिया लए गेलौं। ककर मुँह देखि कऽ उठलौं जे अखन धरि दू कप चाहेटा पीने छी। दतमनियो पछुआएले अछि।''

''की भेलनि?''

''बेटा।''

''बेसी तबाही ने तँ भेलह?''

''एह की कहू काका, जनीजाति तेहन भौनी होइत अछि जे एकबर हेतै आ सातबर भभटपन करत। जखन खाटपर चढ़बैत रहियनि तहन तेना ने हाथ- पएर कठुआ लेलनि जे बूझि पड़ल दाँती लगि गेलनि। मुदा मुँहमे बोल रहबे करनि। पकड़ि-पकड़ि हाथ-पएर सरियौलियनि। मन तेहन लहरि गेल जे हुअए दू ऍंड़ उपरोसँ लगा दियनि। मुदा फेर भेल जे अधिक दर्द भेने लोकक बुद्धियो बाइत जाए छै। हो न हो कहीं सएह भऽ गेल होइन।'' मुस्की दैत भैयाकाका- ''डॉक्टर लग ने तँ बेसी भँडठी लगलह?''

''नै। संयोग नीक रहल जे एकमुहरी काज सुढ़ियाइत गेल। साते बजे निकास भऽ गेलनि। मुदा तते ने काजक ओझरी रहए जे सम्हारैत-सम्हारैत डेढ़ बजे विदा भेलौं।''

''पवनौट कत्तए लऽ कऽ जाइ छह?''

''तीन पुस्तसँ यूनूसक परिवारसँ आवा-जाही अछि। आइ भोरे हुनकर छोटकी बेटी एक मुजेला तरकारी दऽ गेल छलए। सभ साल दइ छथि। अपने कारोबार छन्हि। ओना पावनि सभमे सेहो पवनौट दइ छथि। तहिना हमहूँ दइ छियनि। सएह छी। आन बेर आठे-नओ बजे दऽ अबै छलियनि। मुदा आइ तँ दोसरे भाँजमे पड़ि गेलौं।''

''हमर तिल-चाउर कखैन खेबह, आकि अपने ताले-बेताल रहबह?''

''की कहू काका, मरैयोक पलखति नइए। निचेन भऽ कऽ आएब। अखन ओहो बच्चा सभ बाट तकैत हएत। सभ भोरे नहाएल आ हम दतमनियो नै केलौंहेँ।''

''अच्छा जाह। बाट तकबह?'' कहि भैयाकाका चुप भऽ गेला।

''तेहन माया-जालक झमेल अछि जे विचारकेँ घुसका-फुसका दैत अछि, जइसँ समैक झूठा बनि जाइ छी। काजक अपन गति छै। समैक गतिसँ मिलि कऽ चलैले ओकरा केना छोड़ब?'' कहि आगू बढ़ल रस्तेपर जीवानन्दकेँ यूनूसक कोरैला बेटा आ छोटकी बेटी देखलक। देखिते दुनू दुआरपर सँ आंगन जाए माएकेँ कहलक- ''जीवानन्द कक्का अबै छथिन।

बड़ीटा मोटरी हाथमे छन्हि।'' हाटक कोबी सरियौनाइ छोड़ि माए (यूनूसक पत्नी) अंगनाक मुँहथरिपर आबि, देखलनि। तइ बीच भाए-बहिनकेँ कहलक-
''बड़का लाइ हम लेबौ।''
बेटाक बात सुनि माए किछु बाजलि नै। मुस्किया कऽ रहि गेल। जीवानन्दकेँ पहुँचिते माए बेटीकेँ कहलक- ''कक्का एलखुन, प्लास्टिक वला ओछाइन बइसै लए ओछा दहुन।''
हाथक गमछा दैत जीवानन्द कहलक- ''नै दाइ, अखन नै बैसब। झब दए गमछा अजबारि कऽ लाबह।''

जीवानन्दकेँ गेलोपर भैयाकाकाक नजरि जीवानन्देक बात 'मरैयोक पलखति नै अछि' पर नचैत। पावनियो रहने दतमनि करैक पलखति जेकरा नै छै, ओकरा लेल पावनिये की? मन आगू बढ़लनि- ई दुनियाँ विचित्र रंगमंच छी। जेहने कलाकार तेहने ई रंगमंच। सुपात्रक लेल जँ इन्द्रासन सदृश अछि तँ कुपात्रक लेल गंध करैत नर्क जकाँ सेहो अछि। वीरक लेल वीरभूमि, तपस्वीक लेल तपोभूमि, साधकक लेल साधना भूमि तँ चोर-डकैतक लेल सोनाक चिड़ै। मधु चढ़ौनिहारक लेल मधुशाला तँ इज्जतखोर लेल वेश्यालय सेहो छी। पार्ट खेलेनिहार सेहो अजीब अछि। कतौ पुरुख महिला बनि कलाप्रदर्शित करैत अछि तँ कतौ महिला पुरुष बनि सेहो करैत अछि। मुदा तँए कि पुरुख पुरुख बनि आ महिला महिला बनि अपन पार्ट अदा नै करै छथि। जरूर करै छथि। मन आगू बढ़ि रामायण दिस बढ़लनि। हँसी लगलनि। जे मर्यादा पुरुषोत्तम राम दसमुँहा रावणकेँ मारलनि (नाश केलनि) वएह वन जेबा काल कौशल्याक संबंधमे की केलनि। माएक सेवा बेटाक धर्म नै थिक? पितासँ कम माए होइत? मन ओझराए लगलनि। मुदा कने घुसुकि कृष्ण दिस चलि गेलनि। कृष्णपर जाइते हँसी लगलनि। ठोर पटपटेलनि जे नान्हि-नान्हिटा छौड़ा बड़का-बड़का जहलक छहरदेबाली तोड़ि बहरा जाइत अछि मुदा जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकेँ नचौनिहार छथि हुनका बुते उखरिक बन्हन (ऊखल बन्धन) नै टुटलनि। भैयाकाकाकेँ छगुन्तासँ नजरि निच्चाँ भेलनि मुदा लगले बदलि गेलनि। नजरि बदलिते जोरसँ हँसी लगलनि। मनमे एलनि शिवजी। हद केलनि ओहो शिवसँ शिवान्हियो बनैमे देरी नै लगलनि।
फेर घुरि कऽ भैयाकाकाक मन जीवानन्देपर चलि एलनि। जा धरि जीवानन्द सन-सन बेटा समाजमे नै जन्म लेत ताधरि समाजक उन्नति कागजपर बनाओल फूल-फलक गाछ सदृश होएत। जइ समाजक लोक पावनिक पाछू पनरह-पनरह दिन पहिनेसँ लगल रहैत अछि। तहूमे एकटा नै कतेको पावनि

सालक भीतर अछि, खर्चाक बाट तँ चौड़गर देखै छिऐ मुदा आमदनीक बाटपर नजरिये नै जाइत छै। कियो चारि बजे भोरे स्नान कऽ लाइ-मुरही खेलक तँ कियो चारि बजे बेर झुकैत तदमनि करत। की चारि बजे भोरक सूर्ज चारि बजे अपराह्नोमे रहै छथि। सूर्ज तँ महाविशाल छथि। तहन मौसम किएक बदलैत अछि? कि तइ सदृश मनुखक नै अछि।
रस्ते कातक बँसबीटीमे दतमनि तोड़ि रस्तेसँ दतमैन करैत जीवानन्द आंगन आबि बाल्टीन-लोटा लए सोझे कलपर पहुँचल। हाँइ-हाँह कुड्डुड़ कऽ अधे-छिधे नहा आंगन आबि पीढ़ीपर बैस पत्नीकेँ कहलकनि- "पहिने लाइ-मुरही आ तिलबा नेने आउ?"
"आब कलौ खाएब कि भुज्जा-भरड़ी खाएब।" पत्नी सुधा कहलकनि।
"हद करै छी अहूँ, भोरुका स्नान अखन केलौं आ खाइ बेरमे साँझ पड़ि गेल। सभ सखी सासुर गेल हमरा लेखे चैत पड़ि गेल। ठीके लोक कहै छै। भिनसरसँ बारह बजे धरि लोक जलखइक बेर बुझैत अछि आ बारह बजेसँ पहिल साँझ धरि कलौक समए। जइ समैक काज पछुआ गेल पहिने ओकरा ने पुराएब। जँ से नै करब तँ दुनियाँक संग केना चलि सकब।"
जीवानन्दक बात सुनि पत्नी सुधा भरि थारी चूड़ा-मुरही लाइक संग-संग तरुओ-तरकारी घरसँ आनि आगूमे रखि ठाढ़ भऽ गेलि। भरल थारी देखि मुस्कुराइत जीवानन्द बाजल- "एते किअए अनलौं। बिधे पुरबैक अछि। जहिना नै पान तँ पानक डंटियोसँ काज चलैत अछि तहिना लाइ-मुरहीक बिधे पुराएब। मुदा खिच्चैड़ो तँ लइये भऽ गेल हएत?"
पतिक बात कटैत सुधा बाजलि- "नै जखन अबैक चाल-चूल पेलौं तखन खिचड़ी बनेलौं। धिपले अछि।"
"तखन तरुआ किअए पानि भेल अछि।"
"तरकारी आ तरुआ सबेरे बनेलौं। तँए सेराए गेल अछि।"
दू- तीन फँक्का फकिते जीवानन्दकेँ तरास जोर केलक। गिलास भरि पानि पीब निच्चाँमे रखिते सुधा बाजलि- "तिलासंक्रान्तिमे सभ अपन-अपन बहिन ऐठाम पवनौट लऽ कऽ जाइए। अहाँ छोड़ि देबै?"
पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन थारीसँ हटि बहिनपर पहुँचि गेल। सासुर बसैसँ पहिलुका बहिनपर नजरि पड़िते गठुलाक टाटपर सँ केना तिलकोरक पात तोड़ि आनि माएकेँ तरै लए दैत छलि। जहन भानस करै जोकर भेल तहन कत्ते सिनेहसँ तरुआ तरि खुअबैत छलि। उझुक मारि-मारि पत्नीक बात मनमे उठैत। सोचए लगल, जँ एक्के दिन अपनो बेटाक बिआह आ साढ़ूओक बेटाकेँ बिआह होय, तहन की करक चाही। विचारमे अबिते अपना दिस तकलक। पावनिक दिन छी, बेर झुकि गेल मुदा नहाइयोक छुट्टी नै

भेल छलए। अखनो धरि चैन नै भेलौं। भैयाकाकाक तिल-चाउर पछुआएले छन्हि। की हमरा हिस्सामे पैघ लोक लग बैस एक्को घंटा बुझै-सुझैक लेल नै अछि? सदिखन काजक टिकटिकिया कपारपर चढ़ले रहैए। मन घुमि कऽ भरदुतियापर पहुँचल। ठाँउ कऽ अरिपन बना पीढ़ी धोय केहेन आसन बनबैत अछि। तइपर बैस जोड़ल दुनू हाथ धोय सिन्नुर-पिठार लगा फुल-पान रखि आराधना करैत अछि। की ओइ बहिनकेँ बिसरि जाएब? कथमपि नै। मुदा बहिनो कि हमरासँ अधलाह जिनगी जीबैत अछि। सभ तरहे ओ नीक अछि। भागिन कओलेजमे पढ़ैत अछि। केहेन ठाठसँ भगिनियोक बिआह केलक। अपन सभ लूरि सिखा माए अपने जकाँ बना देने छै। कोनो चीजक कमी छै। ओ कि हमरे पवनौटक भरोसे हएत। मनमे खुशी एलै। मुस्की दैत बाजल- “आइ तँ सभ ठाम पावनि छीहे। कोने कि दुइर होइबला बौस अछि। काल्हि भोरे गेलासँ एते तँ हएत जे सबहक एकदिना तरुआ हमरा दू दिना हएत।” कहि हाँइ-हाँइ खा कऽ जीवानन्द भैयाकाका ऐठाम विदा भेल।

अखन धरि भैयाकाका आँखि बन्न कऽ चौकीपर विचारमे डूबले रहथि कि फड़िक्केसँ जीवानन्द कहलकनि- “गोड़ लगै छी काका। तिल-चाउर खाइले एलौंहेँ।”

जीवानन्दक बोली सुनि भैयाकाका आँखि खोलि असिरवाद दैत कहलखिन- “बहुत दिन जीवह जीवानन्द। हम तँ लटकि गेलियह। देहसँ कम्मो लटकलौं मुदा मनसँ बेसी लटकि गेलौं। बूझि पड़ैए जे लहास ढोइ छी। अनेरे अनकर हिस्सा अन्न-पानि दूरि करै छी। मुदा तरे-तर गणेशजी जकाँ पेट फुलल जाइए। भने तूँ आबिये गेलह। होइए जे टन दे प्राण तियागि दी। मुदा पेटक जे अँकुरी सभ अछि ओ जा धरि नै निकलत ताधरि प्राणो केना छोड़त?”

हँसैत जीवानन्द कहलकनि- “अँकुरी तँ लोक छठिमे घाटपर खाइत अछि। अहाँ आइयो खुआएब तँ खुआ दिअ।”

भैयाकाका- “जहिना जनमौटी बच्चाक मल मृत्यूकाल निकलैत अछि तहिना छोटका बाबाक खुऔल अंकुरी तोरा दए दैत छिअह। अपन गामक चारिम बसान छी। शुरूमे दू परिवार धारक मुँह बदलने आबि कऽ बसल। खेती शुरू भेल। जानवरक उपद्रवक संग-संग मनुक्खोक उपद्रव शुरू भेल। अपन रच्छाक लेल उपजौनिहार तैयार भेल। मुदा सोलहन्नी रच्छा तैयो नै भऽ सकल। पानिक सुविधा दुआरे गाम धुधुआ कऽ बढ़ल। जानवरो आ मनुक्खोक उपद्रवसँ बचैक लेल बलक जरूरति भेल। गाम-गाममे अखड़ाहा बनए लगल। लोक कुश्ती लड़ि अपन शक्तिक परिचए दिअ लगल रहए।

गामे-गाम डंको हुअए लगल रहए। तहियेसँ अपना गाममे तिलासंक्रान्तिक दिन अपनो गाममे डंका शुरू भेल।''

भैयाकाका बजिते रहथि कि जीवानन्दक मुँह बाजि उठल- ''कक्का, अपन बात कने रोकि कऽ राखू। हम बिसरि जाएब।''

मुस्की दैत भैयाकाका- ''बाजह?''

जीवानन्द- ''पावनिक दिन रहने मन छनगल रहए। तमोरिया (डॉक्टर ऐठाम) मे इलाज शुरू होइते भौजी (रतुपारवाली) केँ खलास भऽ किछु सुढ़िआएल देखि ड्योढ़वाली काकीकेँ गाम पठा देलियनि। मन खुशी रहबे करनि। होइन जे के पहिने भेँट हएत जेकरा सोझामे पेटक गुदगुदी बोकरि दियनि। संयोगो नीक रहलनि। मदनावालीकेँ अंगनासँ मुड़िआरी दैत देखलखिन। छुतका (अशौच) दुआरे हाँइ-हाँइ अंगनेक चूल्हिपर लोहियामे तरकारी तरैत छेलीह। सोझामे देखि ड्योढ़वाली काकी ससरि कऽ आंगन बढ़ली! नजरि पड़िते मदनावाली भौजी आग्रह करैत कहलकनि- ''एत्तै आबथु काकी। बिना पएर-हाथ धोनहि चूल्हिक पाछूमे बैस गेलीह। तीनसल्ला अडुआक तरुआ बढ़बैत कहलकनि- काकी कने नोन देखि लेथुन।''

दुनू गोटे चूल्हिये लग बैस खाए लगली।

जीवानन्दक बात सुनि ठहाका दैत भैयाकाका कहए लगलखिन- ''अच्छा, तोहर बात भऽ गेलह। आगूक सुनह। केवल अपने गामटा मे डंका नै, आनो-आनो गाममे होइत छलए। तीन बजे भोरेसँ ढोलिया गाछपर चढ़ि वा बड़की पोखरिक मोहारपर सँ ढोल बजबए लगैत। बेरुका समए डंका होइत छलए। किछु दिनक पछाति रुपैयाक प्रवेश भेने डंका दंगलमे बदलि गेल।''

बिचहिमे जीवानन्द बजल- ''दू साल पहिने तक तँ होइत छलैए।''

जीवानन्दक बात सुनि कने काल गुम्म रहि कहए लगलखिन- ''जा धरि मालिक (जमीन्दार) केँ मालगुजारिये धरि होय ताधरि गाम शान्त छलए। मुदा जखन मालगुजारी तरे लोकक खेत निलाम हुअए लगल तहन ओ पएर पसारए लगल। महाजनी सेहो करए लगल। छपरिया सिपाहीक आगमन गाममे भेल। पहिने तँ ओ कचहरियेक हातामे माने कम्पाउण्डमे अखड़ाहा खुनि लड़ै। मुदा किछु दिनक पछाति गामक डंका अपना अखड़ाहापर लए गेल। साले-साल डंका करबए लगल। एकाएकी परोट्टाक खलीफा पीठ देखबए लगल। अपन इज्जत बचा हम मकरक रविकेँ डंका करबैत रहलौं। मुदा ओ सभ (छपरिया) डंकामे बलउमकी करए लगल। साले-साल झंझट हुअए लगल।''

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्दक आँखि भरि गेलै। जीवानन्दक भरल आँखि देखि बजलाह- ''जा धरि छोटका बाबा छलाह ताधरि कोनो गम नै

छलए। ओना समयो करोट लेलक। समैकेँ दहिन होइते शक्ति बढ़ए लगल। तिला-संक्रान्तिसँ अढ़ाइ मास पहिने मन बेकाबू भऽ गेल। पुरने अखड़ाहाकेँ छील-छालि खुनलौं। लपटनिहार सभ संग दिअ लगल। मालिकक खलीफाकेँ माटि पठा कहलिऐ जे जँ एक माएक दूध पीने हुअए तँ कचहरीक हातासँ बाहर आबि जतए तोरा फड़ियबैक हुअ, फड़िया लएह। देशक हवा देखि बूझि पड़ल जे सभ जागल अछि, केवल हमहींटा मुरदा भेल छी।''

जीवानन्द- ''तहन की भेल?''

भैयाकाका- ''ओहो (छपरिया) लक्ष्मण रेखा (सरकारी हाता) छोड़ि बाहर अबैक मानि लेलक। डंका भेल मुदा बाह रे संतोष ढोलिया। ओइ दिनक ओकरो हाथकेँ (बजबैक) धन्यवाद दी जे जहिना कुरुक्षेत्रमे कृष्णक शंखक आबाज रहनि तइसँ मिसियो भरि कम ढोलकक आबाज नै रहए। कहए लेल तँ अधिक गामक देखिनिहार (कुश्ती देखिनिहार) रहथि मुदा संख्या कम रहए। तहूमे ओहन देखिनिहार बेसी रहै जे ओइ खलीफाक (छपरिया) पीठि ठोकैत। मुदा नजरि पड़िते देखि लेलिऐक जे मुँहक ठोर कारी सियाह छै। मनमे एहेन उत्साह उठि गेल, जहिना आगिमे घीउ देलासँ उठैत, तहिना। लंगोटो नै पहिरए लगलौं, धोतियेक ढट्ठाकेँ बरहा जकाँ बाँटि कसि कऽ बान्हि लेलौं। इम्हर ढोलपर संतोष आबाज दिअए लगल- चट-धा, गिड़-धा, चट्-धा गिर-धा।''

''आबाज सुनि कूदि कऽ अखड़ाहापर गेलौं। मनमे उठल जे अनेरे हाथ की मिलाएब। बाँहि पकड़ि लेलौं।''

ढोलिया हाथ बदललक। ढाक्-ढिना, ढाक-ढिना, ढाक-ढिना बजबए लगल। ढोलक आबाज तँ दहिन रहै मुदा देखिनिहारक आबाज वाम भऽ गेल। फेर ढोलिया हाथ बदलि- ''चट्-गिड़-धा, चट-गिड़ धा, चट-गिर धा'' बजबए लगल। हमरो साहस बढ़ल। भय मनसँ निकलि गेल। मुदा माटिपर चलि गेलौं। माटिपर जाइते ढोलिया (संतोष) हाथ बदललक। मेही आबाजमे- ''धाक्-धिना, तिरकट-तिना। धाक्-धिना, तिरकट-तिना।'' माटि परक दाँवसँ ऊपर भेलौं। उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। देखिनिहारक आँखि सेहो बदलल। ऊपर होइते ढोलिया मोट आबाज आ भौड़ी आबाजमे बजबए लगल- ''चटाक-चट-धा, चटाक-चट-धा।'' अवाजेक संग ओकरा उठा कऽ पटकि देलिऐ। मुदा पीठ गरे खसल। माटिपर खसिते ताल बदललक। बजबए लगल- ''धिक-धिना, धिक-धिना।''

आबाज सुनि धाँइ दऽ चित केलौं। चित्त करिते ढोलसँ आबाज निकलए लगल- ''धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़।

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्द कहलकनि- “अहाँ एहेन चैनक समुद्रमे पहुँचि गेल छी जे मगन भऽ जीबैत हएब?”

मगन सुनि भैयाकाकाक हृदए, बाढ़िसँ उमड़ल गंगा जकाँ जे अपन घर (नदी) छोड़ि गाछी-बिरछी, खेत-पथार पहुँचि पवित्र (गंदा साफ) करए लगैत, तहिना भऽ गेलनि। विह्वल भऽ कहए लगलखिन- “बौआ, तोरा देखि हृदए शान्तसँ प्रशान्त भऽ जाइत अछि आब तँ तोरे सबपर छहरो-महर हएत आ दारो-मदार अछि। मुदा हवाक गंदगी तेना ने विहारिमे पसरि गेल जे एक्को क्षण जीबैक मन नै होइत अछि। लीला सभ जे देखै छी तँ शूल जकाँ सदिखन हृदैकेँ बेधैत रहैत अछि। आजुक पीढ़ी जीवनक रास्तासँ एते दूर हटि रहल अछि जे मनुखक औरुदा सए बर्खसँ घटि कुत्ताक औरुदा (बारह बर्ख) मे बदलल जा रहल अछि। दुख एतबे नै होइत अछि जे औरुदेटा घटि रहल छै, मनुखक वृत्तियो टूटि-टूटि ओम्हरे जा रहल अछि। जइ रूपक बेवहार भऽ रहल छै ओइ सभसँ आगम बूझि पड़ैत अछि जे माए-बाप, भाए- बहिन सबहक संवंध आ शिष्टाचार ऐ रुपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना भूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य छै।”

:::::::::

१ संगी

बालिग-नबालिगक सीमापर पहुँचल सुशील सतरह बर्ख सात मास पार कए चुकल। पाँच मासक उपरान्त बालिग भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि क्लासक आशासँ समैपर कओलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कओलेजक कम्पाउण्डमे पहुँचिते घंटी बजल। वर्गमे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घंटी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घंटी पढ़ाइ नै देखि कियो खुशीसँ समए बितबैत तँ कियो बन्द कोठरीमे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए। ओइमे सँ एक सुशीलो रहए।

कनैत मने सुशील क्लासक कोठरीसँ निकलि डेरा दिस विदा भेल। मनमे एलै- कि हमरा सबहक जिनगी, पोखरिक पानि जकाँ चारू भरसँ घेराएल अछि वा पहाड़सँ निकलैत नदी जकाँ समुद्र दिस बढ़ैत अछि।

डेरा एलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत्त सुशील किताब-काँपी रैकपर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पएरक चप्पल खोलनहि चौकीपर ओंघरा गेल। जेना मन काबुएमे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घंटीक पढ़ाइ किअए ने भेल? नजरि दौड़ौलक तँ देखलक जे ओइ विषयक तँ शिक्षके नै छथि तँ पढ़ैबतथि के? मनमे हँसी उपकलै। मुदा फेर मन घुमल। बिनु शिक्षकक शिक्षण संस्था केना चलि सकैत अछि। कि एकरा प्राइबेट संस्थाक बाट खोलब नै कहबैक? कि सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था तँ ने छी। मन घुसुकि दोसर घंटीक विषयपर पहुँचल। एगारह सए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छथि। तहूमे जहियासँ इन्चार्य भेलाह तहियासँ क्लासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रूम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैसए लगलाह। जहिना ईंटाक देबाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नब बेतनक हिसाब दूरी बनौने। अधखिलल फूल जकाँ, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ि गेल। मनमे उठलै मधु दइबला माछीकेँ विधाता ओहन डंक किएक देलखिन। मुदा मन तेसर घंटीक विषयपर गेलै। तीन शिक्षक। तहन किअए ने पढ़ाइ भेल। ई तँ ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकेँ बहुत अधिक कठिनाइ हेतै। प्रोफेसरपर नजरि पड़िते देखलक जे के एहेन बेपारी हएत जे समए पाबि अपन सौदाकेँ महग कए कऽ नै बेचत। एहेन काज तँ वएह बेपारी कऽ सकैत अछि जेकर मन बैरागी होइ। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होय। जहिना जीरो

डिग्री अंक्षांससँ सूर्ज मकर रेखा दिस बढ़ैत तँ कर्क रेखा दिस विपरीत समए हुअए लगैत, तहिना तँ ने भऽ रहल छै। एक दिस घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसँ महग। जहिना गरीबक घरसँ सोनाकेँ दुश्मनी छै तहिना कि शिक्षोक भेल जा रहल छै। मन आगू बढ़ि चारिम घंटीपर पहुँचलै। तीन शिक्षक तँ अहू विषयक छथि। तहन किएक ने पढ़ाइ भेल? एक गोटे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लगल छथि मुदा तैयो तँ दू गोटे छथिये। एक गोटे तेरहम दिन रिटायर करताह। मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समए किछु दिन लोक दुनियाँसँ कारोबार समेटि घरक ओछाइन धड़ैत अछि तहिना तँ हुनको धड़ैक चाहियनि। सोगेसँ ने रोग होइत अछि। तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा आधा भऽ जेतनि। समए तँ अहिना जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नै अएने बीतलनि, रहतनि। तँए सोग होएब अनिवार्य आ काज नै करब आवश्यक छन्हिये। मुदा तेसर तँ ऐ सभसँ अलग छथि। ओ किअए ने एला। नजरि दौड़ैबिते देखलक जे ओ तँ सप्ताहमे एक दिन आबि छबो दिनक हाजरी बनबै छथि। शनि तँ काल्हि छिऐ आइ केना अबितथि? एते मनमे अबिते सुशीलक आँखि झलफलाए लगलै। मन खलिआएल बूझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूँगी बदलिते पानि पीबैक मन भेलै। कोठरीसँ निकलि कलपर हाथ-पएर-मुँह धोअए गेल। पानि पीबिते मन हल्लुक बूझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाइल रूप देखलक। कओलेजकेँ बीचमे देखि सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघर स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाए मिलैत अछि तहिना ने टटघरेक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अबिते गाछसँ गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकेँ छिटकैत देखलक। ई लुत्तीक आगि तँ कोसक-कोस सुक्खल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फुलल-फड़ल गाछकेँ सेहो जरा दैत अछि। जहिना सघन वनमे रस्ताक ठेकान नै रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलै। सतरह बर्खसँ ऊपर। अठारहमक बीच। अठारह बर्ख पुरलापर चेतन भऽ जाएब। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियाँकेँ अंगीकार करब। आकि देखि कऽ छोड़ि देब। स्कूल-कओलेजक पढ़ाइक तँ यएह गति अछि। जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि विशाल अट्टालिका बनैत अछि तहिना ने कने-कने सीख बाल चेतनाकेँ पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तँ अपनहि केने हएत। मन शान्त भेलै। नजरि देलक गामक ओइ बच्चापर जे माएक मुँहसँ लुक्खी सीखैत अछि मुदा स्कूलमे प्रवेश करिते गिलहरीसँ भेँट भऽ जाइ छै। कि

हमर मातृभाषा गामो धरि नै अछि। कि हिमालय पहाड़सँ गंगा कूदि-कूदि रास्ता टपि समुद्रमे पहुँचैत अछि आकि नीच-ऊँचक रास्ता टपैत समुद्रमे पहुँचैत अछि। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। की बच्चाकेँ कर्मरूपी माएसँ सीख ज्ञान रूपी गुरुसँ मिलि पबैत अछि। जँ से नै तँ माए-बाप गुरु केना? गामक स्कूलसँ नजरि हटि मिड़ल स्कूल आ हाइस्कूलपर पहुँचलै। कतौ हाइस्कूलसँ क्लास काटि मिड़ल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तँ कतौ कओलेजक क्लास हाइस्कूलमे। जहिना क्लास तँ कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत। पढ़निहार तँ विद्यालय पैदा कऽ दैत अछि मुदा पढ़ौनिहार केना...। आगू बढ़ैत सुशीलक मन कओलेजमे नै अँटकि विश्वविद्यालय पहुँचि गेल। मनमे उठल जिनगीक पाँचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यक शिक्षा छी। ओना शिक्षण संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर पोथी उलटा प्रश्नक जबाब अपन परीक्षाक कॉपीमे लिखैत अछि तँ कियो पढ़ाइक अभावमे प्रश्न पत्रो ठीकसँ नै बूझि पबैत अछि। कि ऐ दौड़मे के आगू बढ़त? कियो मार्कसीटे कीनि लैत अछि। कि शिक्षा सन समस्याकेँ बेदरा-बुदरीक खेतमे बनाओल गरदा-गुरदीक घर-आंगन छी? चिन्तासँ मातल सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघराएले रहल। चिन्ताक वनमे चिन्तनक गाछ कतौ देखबे ने करए जइसँ आशाक फल देखैत। सुतल शरीर आरो सुति रहल।

कओलेजसँ आबि वसन्ती कोठरीमे किताब-काँपी रखि सोझे माए लग पहुँचल। जलखइक छिपली वसन्तीक आगूमे बढ़बैत माए बाजलि- ‘‘बुच्ची, उदास किअए छह?’’

अपनाकेँ छिपबैत वसन्ती बाजलि- ‘‘नै, नै। उदास कहाँ छी?’’

वसन्ती अपन वसन्ती-बहारकेँ छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसबिसाइत रहैत अछि तहिना मनक रोग वसन्तीकेँ। मनमे नचैत रहै कओलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी। सुशील आ वसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नै हेबाक सोगसँ सोगाएल वसन्ती माएसँ आगू गप्प नै बढ़ा बिस्कुट खा चाह पीब चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओंघरा गेलि। सिरमापर माथ देने दुनू बाँहि समेटि कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस ताकए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि कि ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नै बनैत जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए। आजुक शिक्षाक रूप एहेन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कओलेजमे पढ़ाइ नै भऽ रहल अछि। तइपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा लेल बाप-माए अपन जिनगी

तोड़ि, खूनक घूँट पीब कऽ जीवन-बसर करै छथि। जेकर परिणाम कि भेटैत छन्हि तँ जेहो अपन बनाओल आकि पूर्वजक देल जे सम्पति रहैत छन्हि बेटीक बिआह करबैमे देमए पड़ैत छन्हि। बीस लाख रुपैया खर्च कए डाक्टरीक शिक्षा बेटीकेँ दियाउ आ तइपर सँ बीस लाख बिआहोमे चाही। ओइ डॉक्टर सभसँ पूछै छियनि जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतो अपन अन्याय नै रोकि सकैत छी तँ कि आशा अहाँसँ कएल जा सकैत अछि। माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसँ ठिठुरल बच्चाकेँ जीबैक उपाए अहाँ कऽ सकबैक?

मन आगू बढ़ि अपनापर एलै। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तँ किसान, बेपारी आकि नोकरिहारे किएक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल अछि ऐमे कत्ते गोटे अपनाकेँ सुरक्षित बूझि रहल छथि। कि कओलेज-हाइस्कूलक विद्यार्थी अपन अध्यापिकाकेँ ओहने नजरिसँ देखैत अछि जइ नजरिसँ अध्यापककेँ। की अदौसँ अबैत हमर संयुक्त परिवारक सामाजिक ढाँचा रूपी धरोहर, गाछसँ खसल पाकल कटहर जकाँ आँठी उड़ि कतौ, कोह उड़ि कतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेल एकठाम आ नेरहा ओंघराइत कतौ, तहिना आँखिक सोझमे नष्ट भऽ जाएत। ऐ दुखद घटनाक जबाबदेह के? गामक बच्चाकेँ स्कूलसँ लऽ कऽ कओलेज धरि एते तरहक गाड़ीक आबाजसँ लऽ कऽ लोडस्पीकरक आबाज धरि कानमे पड़ैत अछि। जइठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ जाइत अछि तइठाम पढ़ाइक की दशा होएत।

एत्ते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर वसन्ती अँटकि गेलीह। जहिना शिशिर-ग्रीष्मक बीच वसन्तक स्वागत गाछपर बैस कोइली अपन जुआनीक इठलाइत राग-तानसँ करैत अछि तहिना वसन्तीक स्वागतक लेल होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कए रहल छन्हि। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुख देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहैत छथि तँ कृष्ण पाछू घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फेकए चाहैत छथि तँ कखनो हरिअरका। आँखिपर नजरि पड़िते तँ कारी रंग मनमे अबनि मुदा निशाने साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुँहपर फेकि देलकनि। मुँहपर अबीर पड़िते दुनू हाथे कृष्ण मुँह-कान पोछए लगलथि। आकि हाथसँ पिचकारी खसिते राधा आगू बढ़ि दुनू बाँहि पसारि हृदैसँ लगबैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हँसए लगलथि। नम्हर साँस छोड़ैत वसन्तीक मनमे उठल- ऐ धरतीपर किछु करए लेल संगीक जरूरति अछि। जा धरि पुरुख-नारी मिलि अपन समस्याक लेल अपन पौरुखकेँ नै जगाओत ताधरि सपना साकार केना भऽ पाओत।

ओछाइनसँ उठिते सुशील सूर्जक किरिणकेँ देखए लगल। देबालक एक छोट भूर देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करैत छल। सूर्जक ओ रूप नै जइठाम आँखि नै टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नै। पातर-कोमल। बिजलौका जकाँ सुशीलक मनमे उठल पुरुष-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तहन जँ ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, कत्तेक लाजिमी छिऐक। कोठरीसँ निकलि सुशील वसन्तीसँ भेँट करैक विचार केलक।

प्रात भने क्लासक संगी वसन्ती ऐठाम पहुँचल। टेबुलक एक कोणपर पोथी गेंटि कऽ राखल। एकटा किताब आ काँपी आगूमे पसड़ल आ पेन सेहो खोइल कऽ राखल मुदा कुरसीपर ओँगठि आँखि बन्न केने वसन्ती अपन वसन्ती-बहारपर नजरि अँटकौने रहए। जहिना वसन्त साले-साल अबैत आ जाइत अछि तहिना कि मनुष्योक जिनगीमे वसन्त अबैत आ जाइत अछि? कथमपि नै। मनुखक जिनगी तँ ओहन होइत अछि जइमे वसन्त एलापर पुनः जाइत नै छै। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जकाँ महा वसन्त बनि जाइत अछि। एते बात मनमे अबिते देह चौंकि गेलनि। हृदए सिहरए लगलनि। मुदा अपनाकेँ संयत करैत धियान वसन्त ऋृतुपर देलनि। ऋृतुपर नजरि पड़िते देखलनि जे एकठाम फसल लगल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसँ सजल बगीचा जइपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसँ वसन्तक स्वागत करैत अछि। तँ दोसर कोसीक बाढ़िसँ नष्ट भेल ओ इलाका जइमे बालुसँ भरल ढिमका-ढिमकी बनल खेत, गाछ बिरिछक अभाव देखि कनैत चिड़ै रहैक ठरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल। कि ओइठाम चैत-बैशाखकेँ वसन्त ऋृतु नै कहल जाइत अछि? अथाह समुद्रमे वसन्ती कखनो उगए तँ कखनो डुमैत रहए। अनायास नोरसँ आँखि ढबढबा गेलनि। नोर केहेन? दुखक आकि क्रोधक। ओढ़नीसँ वसन्ती नोर पोछितहि रहथि कि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सँ बाजल- ''वसन्ती ।''
वसन्ती कानमे पड़िते धड़फड़ा कऽ कुरसीसँ उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत वसन्तीक मुँहसँ निकलल- ''सुशील।''
कुरसीपर सुशीलकेँ बैसाए अपने बगलक कुरसीपर बैस पूछलि- ''पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?''
सुशील- ''कॉलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।''
सुशीलक बात सुनि अकचका कऽ वसन्ती पुछलक- ''किअए?''
-''कओलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देखि रहल छी ओइसँ मन दुखी भऽ रहल अछि। ऊपरी ढाँचा किछु देखि रहल छी आ भीतरी किछु आर छै।''

सुशीलक बात सुनि वसन्ती बाजलि- “सिर्फ अहींटा दुखी छी आकि आरो गोटे छथि।”
वसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमकल। मुँहसँ निकलल- “अखन धरि जे देखलौं ओइमे नगण्य दुखी भेटलाह आ अधिकांशकेँ कोनो गम नै।”
“किछु तँ भेटलाह?”
“मुदा ओ कहिया तक संग रहताह एकर कोन ठीक। जँ रस्तेसँ घुरि जाथि आकि हलवाइक कुकुड़ जकाँ रसगुल्ला-जिलेबीक रस चाटए लगथि।”
“अहाँ जे कहलौं ओकरो हम नै कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छै?”
“से की?”
“जँ पुरुष-नारी मिलि सृष्टिक निर्माण कऽ सकैत अछि तँ कि कोनो व्यवस्थाकेँ नै बदलि सकैत अछि।”
“बदलि सकैत अछि मुदा ओकरा लेल.....।”
“हँ। ओकरामे पौरुख चाही। पौरुख सिर्फ पुरुखेक धरोहर नै मनुख मात्रक छी। गललसँ गलल आ सड़लसँ सड़ल व्यवस्थाकेँ हमहीं-अहाँ ने संग मिलि बदलि सकै छी।
वसन्तीक बात सुनि, नम्हर साँस छोड़ैत सुशील बाजल- “ओहन संगी कतए भेटत?”
“संकल्प स्थलपर।” - वसन्ती बाजलि।
“ओ स्थल कतऽ अछि?”
“दुनियाँक एक-एक इंच जमीनपर।”
“संकल्पक विधान की?”
“आत्माक मिलन।” कहि दुनू गोटे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीबाक बचन एक-दोसराकेँ देलक।

:::::::::

१० ठकहरबा

भोरहरबेमे दादीक नीन उचटि गेलनि। लाख कोशिश केलनि मुदा दोहरा कऽ नीन नै घुरलनि। ओना भोरुका समए वसन्ते जकाँ मधुआएल रहैत छै मुदा ओहो की सबहक लेल एक्के रंग रहैए। दिन-राति काजक पाछू नचनिहारकेँ थोड़े वसन्त आ ग्रीष्मक भेद बूझि पड़ैत छै। दादीक मनमे एलनि जे अखने ललितक ऐठाम जा कऽ कहिऐ जे अखुनके माने भिनसुरके उखड़ाहामे चिमनीपरसँ पजेबा आ बेरुका उखड़ाहामे बाजारसँ एस्वेस्टस आनि दिहह। भोरुका अन्हारक दुआरे रतिगर बूझि पड़लनि। मनमे एलनि जे जँ कहीं बिछानपर जाइ आ निन्न आबि जाए तहन तँ पहपटि हएत। मुदा एत्ती रातिकेँ जेबो कतऽ करब? गुन-धुन करैत सोचलनि जे से नै तँ घरसँ ओछाइन निकालि अंगनेमे बिछा कऽ पड़ब नै, बैस कऽ काजक गर लगाएब। सएह केलनि। काजपर नजरि दैते पजेबापर मन गेलनि। एक नम्बर राँट ईंटा तँ तते महग अछि जे कीनब थोड़े पार लागत। मन मन्हुआ गेलनि। जहिना दू-बट्टी, तीन-बट्टीपर पहुँचिते बटोही अपन अगिला बाट हियाबए लगैत अछि तहिना दादियो हियाबए लगलीह। कत्ते दिन जीबे करब जे एक नम्बर ईंटाक जरूरति पड़त। लऽ दऽ कऽ बीस-पच्चीस बर्ख आरो जीब। तइले तँ तीन्यिो नम्बर ईंटा नीके हएत। फेर मनमे एलनि जे कियो कि अपनेटा लेल घर बनबैए आकि बालो-बच्चा लए बनबैए। मन ठमकि गेलनि। किछु फुड़बे ने करनि। फेर मनमे उठलनि जे लोक काँच-ईंटाक घर केना बनबैए। ओहो तँ तीस-चालीस बर्ख चलिये जाइ छै। ओइसँ नीक ने तीन नम्बर। कम-सँ-कम अध-पकुओ तँ रहैए। जतबे नुआ रहए ततबे टाँग पसारी। तीन्यिो नम्बर तँ ईंटे छी कीने? हँ, हँ, तीन्यिे नम्बर ईंटा लेब। मन आगू बढ़ि चदरापर माने एस्वेस्टसपर गेलनि। चदरापर नजरि पड़िते मन झुझुआ गेलनि। सिमटीक तेहन चदरा बनए लगल अछि जे सालो भरि चलत की नै? जँ कहीं गोलगर पाथर खसल तँ चूरम-चूर भऽ जाएत। पहिने केहेन बढ़ियाँ टीनक चदरा अबै छलै जे एक बेर घरपर दए देलासँ कत्ते दिन ओहिना रहैत छलए। मुदा ओहो बैशाख-जेठक रौदमे रहै-बला नै होइए। ओना जँ गतगर कऽ खरही छाड़क ऊपरमे दऽ दियौ तँ कोठे जकाँ भऽ जाइए। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा बनियाँ सभ भऽ गेल अछि जे लेबालकेँ जे होउ अपन धरि तिजोड़ी भरल ताकि। खैर जे होउ, जे सबहक गति से हमरो हएत। तइले कत्ते मगज चटाएब।

पौहु फटिते सूर्जक लाली देखि दादी ओछाइन समेटि घरमे रखि ललितक ऐठाम विदा भेलीह। मन पड़लनि, आठमे दिन अदरा नक्षत्र चढ़त। आठे दिनक पेसतर घर बनबैक अछि। जँ से नै भेल तँ गिलेबापर जोड़ल देबाल ढहत-ढनमनाएत आकि की हएत? सेहो ने कहि। जे घर अखन अछि ओहो उजड़िये जाएत। तइ बीच जँ बरखा झहड़ल तँ जानो बँचब कठिन भऽ जाएत।

ललितकेँ दरबज्जा नै। भनसे घरमे सुतबो करैत। ठोकले दादी आंगन पहुँचि ओलती लगसँ कहलखिन- "गोसाइ उगैपर भेलखिन आ तों सुतले छह?" दादीक आबाज सुनि ललितक पत्नी सुपती उठि केबाड़क आधा पट्टा खोलि चुपचाप बाड़ी दिस विदा भेल। ओसार टपि केबाड़क दुनू पट्टा खोलि ललितक देह डोलबैत दादी कहलखिन- "ललित, ललित। उठह, कत्ते सुतै छह?"

सुतले-सुतल आँखि मुननहि ललित बाजल- "की कहै छी?"

"अखन धरि सुतले किअए छह?"

ओछाइनपर सँ उठि दादीकेँ बैसबैत अपनो बैस बाजल- "बड़ी रातिमे पुलिसक गाड़ी खोइर-बन्हामे लसैक गेलै। भरि गाड़ी पुलिस रहए। कतबो बाप-बाप केलक मुदा गाड़ी नै निकललै। जेना जानि कऽ अनठा देलकै।"

बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, गालक मसुहरिपर दूटा इंच-इंच भरिक पाकल केश, सोन सन उज्जर धप-धप केश, गरदनिक चमड़ा घोकचि कऽ लटकल दादीक। ठहाका मारि बजलीह- "तोरा सन-सन लोकसँ की बेसी बुत्ता ओकरा सभकेँ होइ छै। गांजा पीब-पीब छाती फोंक कऽ नेने रहैए।"

मुँह चटपटबैत ललित- "बड़ मोटगर-सोटगर सभ रहए?"

"धु: बतहा कहीं के, एतबो नै बुझै छहक जे तखन थालमे सँ गाड़ी किअए ने उखड़लै।"

मुँह डेढ़बड़ा कऽ ललित बाजल- "उ सभ हाकिम रहै की ने।"

"अच्छा, ई सभ छोड़ह। पाइ कत्ते देलकह?"

"पहिने वएह पुछलकै जे कत्ते दिअ, ओना हमहूँ सभ सात-आठ गोरे रही मुदा हमरा छोड़ि सभकेँ होइ जे कहुना जान छोड़ए। सभकेँ सुक-पाक करैत देखिऐ। एक गोरे बाजि देलकै जे हुजूर सरकारिये पाइ छिऐ की ने? एतबे सुनैत मातर तड़ंगि कऽ एक गोटे बाजल 'रौ बहिं, तुम पहचानता नहीं है।' कहि पाइ आगूमे फेक विदा भऽ गेल।"

“सुआइत तोरा ओंघी दबने छह। हमहूँ काजे एलौंहें। अखन तँ तूँ भकुआएल छह। मुँह-हाथ धुअह। काजक गप छी तँए कने असथिरसँ विचार करब। ओना अपनो मुँह-कानमे पानि नहिये नेने छी।”
“एह, तँ की हेतै दादी। एक दिन टुटलहो-फटलाहा घरक चाह पीब कऽ देखियौ।”

सुपतीकेँ कानमे फुसफुसा दादी चौमास दिस विदा भेलीह। जाबे दादी मुँह-कान धोए तैयार होथि तइमे पहिने ललित सुपतीकेँ चाह बनबैले कहि ओसारक बिचला खूटा लग पीढ़ी रखि दादीक बाट देखए लगल। अबिते दादी बजलीह- “कलक पानि बड़ सुन्नर छह।” कहि खूटामे ओंगठि पीढ़ीपर बैस गेलीह। सुपती चाह नेने आगूमे रखि देलकनि। चाहक रंग देखि दादीक मन खुशी भऽ गेलनि। एक घोंट पीब बजलीह- “तेहेन चाह छह जे एक्के उपे जलखइ बेर तक रहब।”
ललित- “आइ काज अनठिया दियौ दादी।”
मुस्की दैत दादी- “किअए, घरमे सिदहाक ओरियान छेबे करह...। (मुदा लगले बात बदलि) कोन एहेन हलतलबी काज आगूमे छह जे आइ मनाही करै छह?”
मुँह दाबि सुपती बाजलि- “हिनका नै बुझल छन्हि जे आइ अलेक्शन छिऐ।”
सुपतीक बात जेना दादीक अँतरीमे छुबि देलकनि। जहिना आम तोड़िनिहार सरं-गोलिया गोला आमपर फेकैत तहिना दादी फेकब शुरू केलनि- “कोन फेरमे पड़ए चाहै छह, अपन दुख धंधामे लगल रहह। सभटा ठकहरबा छी। एते दिन अपनो सएह बुझै छलौं मुदा आब बुझै छी जे ठकाइत-ठकाइत जिनगिये ठका गेल। (मुड़ी निच्चा कऽ) जहिया समाज खादी-साड़ी पहिरा ‘माए जी’ कहलक तहिया बूझि पड़ल जे समाज की छी। स्वर्गोसँ ऊपर। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा सभ भऽ गेल अछि जे बाजत ढेरी, करत किछु नै।”
ललित- “अहाँकेँ किअए समाज खादी पहिरौलनि दादी?”
ललितक प्रश्न सुनि दादी विस्मित भऽ गेलीह। जहिना बोनमे जानबरक छोट-छोट बच्चा बौआ कऽ हरा जाइत तहिना आजादी समयक बोनमे दादी हरा गेली। दादीकेँ विस्मित देखि ललितकेँ बूझि-पड़लै जे दादी फेर कतौ औना गेलीह। तँए दोहरा कऽ नै पूछि जबाबक प्रतीक्षा ओइ रूपे करए लगल जइ रूपे माए बच्चाकेँ विद्यालयसँ अबैक आशा करैत रहै छथि। चौअन्निया मुस्की दैत दादी बाजए लगलीह- “दुरागमन कए कऽ आएले रही। बूढ़ा-बूढ़ी

माने सासु-ससुर जिबिते रहथि। बेटा मात्रिक गेलनि। ओइठीनक लोक सभ झंडा उठा खूब हूड़-बरेड़ा करैत रहए। अपनहुँ (पति) हुनके सभ संगे बौर गेलाह। तीन मास बिता कऽ गाम एला।''

ललित- ''बाबा बिगड़बो केलखिन?''

दादी- (अपसोच करैत) ''ओ सभ स्वर्ग गेला, हम नर्कमे छी। आगि नै उठेबनि। हँ, ई भेलै जे बुढ़हो जोगारी रहथिन। तरे-तर सरहोजिसँ सभ भाँज लगा लेने रहथि। जाबे गाम घुरि कऽ एला ताबे तँ इम्हरो लोक झंडा उठा हड़बिरड़ो करए लगल रहए। आजादीक दस-बारह बर्ख पछाति गाममे मलेरिया आएल। चारि अन्नासँ बेसिये लोक मरल। अपनो घरहंज भऽ गेल। तीनू गोटे (सासु-ससुर आ पति) मरि गेलाह। मात्र अपने आ छअ मासक बच्चा बचलौं। ओही बेटाकेँ पोसि-पालि जुआन बनाएब अपन देशसेवा बुझलिऐ। खादी साड़ी पहिरैक यएह कारण रहए।''

मुस्की दैत सुपती पुछलकनि- ''नेता सभ जकाँ भाषणो करथिन?''

''बेसी तँ नै बाजल हुअए मुदा मंचपर दुनू हाथ जोड़ि एत्ते जरूर कहिऐ जे 'हे ब्रह्मबाबा गामक रच्छा करिहह। 'मुदा सभ झूठ भऽ गेल। ने ब्रह्मबाबा सुनलनि आ ने ककरो रच्छा भेलै।''

सुपती- ''खादीबला सभ भरि दिन झूठे बजैए?''

सुपतीक बातसँ दादीकेँ दुख नै भेलनि। मुस्की दैत कहलखिन- ''ओहिना कनी कऽ मन अछि। शुरूक तीन भोटमे बहरबैया नेता सभ संग कऽ कऽ गाम घुरलथि। जते काल संगमे रहियनि तते काल गामेक गप-सप्प करथि। गाममे ने नीक सड़क अछि आ ने बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल। ने पानि पीबैक समुचित बेवस्था अछि आ ने दबाइ-दारूक। गाड़ी-सवारीक नाओंपर बैलगाड़ी अछि। एहेन समस्या सिर्फ अपने गाम टाक नै इलक्केक अछि। सरकारक अपने बेवस्था लटपटाएल अछि। हरितक्रान्तिक पूर्व धरि पेटक दुआरे आन-आन देशसँ जनेर-गहूम मंगबए पड़ैत छलए। (कने चुप भऽ मन पाड़ि) तही बीच भूदानी आन्दोलन जगल। नारा देलक- 'जमीनक छबम हिस्सा दान दिअ' जइसँ गरीब लोककेँ वासक संग जोतो जमीन भेटतै। गामक-गाम दान हुअए लगल। मुदा अखन की देखै छहक जे जोतक कोन बात जे घराड़ियो सभकेँ नै छै। (ठहाका मारि) सबटा मदारी नाच केलक।''

पटरीपर सँ दादीक बातकेँ उतरैत देखि ललित पत्नीकेँ कहलक- ''दादी बूढ़ि छथिन, थकबो करै छथिन की ने। शिखरक पुड़िया खोलियापरसँ नेने आउ?''

शिखरक नाओं सुनि दादीक मनमे भेलनि जे शिखर केहेन होइ छै। आइ धरि नामो नै सुनने छलिऐ। मुदा बजलीह नै। चकोना होइत देखि ललित बूझि गेल जे भरिसक दादी शिखर नै खेने छथि। मुस्कुराइत कहलकनि- ‘‘जहिना चाह पीलापर देहमे फुनफुनी आबि जाइ छै तहिना शिखरो खेने होइ छै। इस्कुलिया विद्यार्थी सभ तँ भरि-भरि जेबी रखने रहैए।’’

सुपती हाथसँ एकटा पुड़िया लए ललित दादी दिस बढ़ौलक। जहिना खच्चा-खुच्चीमे पानि देखि बकरी पाछू हटैत रहैत अछि, तहिना शिखरक पुड़िया देखि दादीक मन पाछू हटलनि। मुदा नव चीज रहने सेहन्तो भेलनि। एक चुटकी मुँहमे दैते बूझि पड़लनि जे सरसरा कऽ कंठसँ निच्चा उतरल जाइए।
तखने ललित पुछलकनि- ‘‘अपनो गामक लोक जमीन दान केलक?’’
ललितक बात सुनि खौंझा कऽ दादी बजलीह- ‘‘कहबे तँ केलियह जे सबटा बानरक नाच केलक। एक गोटे समस्तीपुर दिसुका भूदानी नेता खोज करैत अपने ऐठाम एला। (मने-मन मुस्कुराइत) की कहिह हुनकर हाल। साँझू पहर जखन गप-सप्प करए लगथि तँ बूझि पड़ए जे जहिना त्रेता युगमे रामराज रहै तहिना फेर कलयुगोमे भऽ जाएत। ने ककरो पेटक चिन्ता रहतै आ ने रोग-व्याधिक। मुदा ले सुथनी, भिनसरसँ दुपहर धरि ओकरा साबुन रगड़ि-रगड़ि नहाइये आ कपड़े साफ करैमे लगि जाय। बेरू पहर सभ कपड़ा सुखा, पहिरि कऽ दिन लहसैत निकलै आ खाइ-पीबै राति धरि भाषण करै। एक पनरहियासँ बेसिये रहल। तइ बीच अकच्छ-अकच्छ भऽ गेलौं। खादी भंडारक मंगनी कपड़ा पबैसँ। सदतिकाल बगुला जकाँ उज्जर धप-धप चेहरा बनौने रहए।’’
ललित- ‘‘खादी भंडारमे मंगनिये कपड़ा बटबारा होइ?’’
‘‘मंगनी कतौ होइ। गाम-गामक उद्योगकँ उला-पका कऽ खा-पी कऽ चौपट कऽ देलक। गामक गाम लोकक रोजगार मरि गेल। एक तँ कोसी-कमलाक उपद्रव तइपर सँ जेहो छोट-छीन रोजगार गाममे चलैत छल सभ चलि गेल। जखन लोककँ गाममे पेटे ने भरत तखन कत्ते दिन पेटमे जुन्ना बान्हि कऽ रहत। गामक-गामकँ पड़ाइन लगि गेलै। ने बच्चा सभकँ पढ़ैक स्कूल अछि आ ने रोग-व्याधिक लेल डखाना (अस्पताल)।’’ बजैत-बजैत दादी विस्मित भऽ गेलीह। आँखि बन्न भऽ गेलनि।
गुम-सुम देखि ललित पुछलकनि- ‘‘पहिलुका बात तँ छुटिये गेल?’’
ललितक प्रश्न सुनि दादी मन पाड़ि बजलीह- ‘‘चारिम भोट अबैसँ किछु पहिने मारिते-रास पाटी फड़ि गेल। कखनो कोनो रंगक झंडा लऽ कऽ

जुलूसो निकले आ सभो होय तँ कखनो कोनो रंगक। जहिना आखिरी लगनमे छुटल-बढ़ल, बूढ़-पुरान, लुल्ह-नांगर सभ पालकीपर चढ़ि लैत अछि तहिना भदबरिया बेंग जकाँ गामे-गाम नेता फड़ि गेल। ओना हम लिखा-पढ़ी कऽ कऽ कोनो पाटीक मेम्बर नै भेल रही मुदा लोको बुझै आ अपनो मानैत रही। तँए मनमे अरोपने रही जे जेकरा जे मन फुड़ौसँ करह मुदा जहिना शुरूसँ रहलौं तहिना रहब। भोट होइसँ पहिने कतेको गाममे मारि भेल। अपना गाममे भोट दिन तक तँ मारि नै भेल मुदा भोट दिन एहेन मारि भेल जे लोककेँ पड़ाइन लगि गेलै।''

सुपती- ''हिनको कियो मारलकनि?''

''नै कनियाँ, हाथ तँ नै उठौलक। मुदा भोट खसबै नै दिअए। हमर भोट केदैन खसा नेने रहए। कत्ते कहा-सुनी भेलापर अनके नाओंपर भोट खसेलौं। भोट खसा कऽ जखन घुरलौं तँ मनमे आएल जे आब भोट खसबै लए नै जाएब।''

ललित- ''पाटीबला सभकेँ नै कहलिऐ?''

दादी- ''कि कहितिऐ। संयोगो नीके बुझहक। अगिला भोटमे पार्टीक उम्मीदवारे ने ठाढ़ भेल। जान हल्लुक भेल। आन पाटी तँ मारित्ते रहै मुदा केकरा भोट दितिऐ आ केकरा नै दितिऐ। तइसँ नीक जे बूथपर जाएबे छोड़ देलिऐ।''

ललित- ''ककरो नफ्फा-नोकसान होउ, अहाँ तँ बचलौं की ने?''

ललितक बात सुनि दादीक आँखि नोरा गेलनि। मुँहसँ बकारे नै फुटनि। थोड़े-खन चुप रहि बजलीह- ''बौआ, पटना दिल्ली तँ कहियो मनोमे ने आएल मुदा गामोमे जहुना छलौं तहुना नै रहलौं। जइ समाजक लोक 'माए जी' कहैत छलए ओइ समाजमे लोक रॉड़ी कहए लगल। ऐ बातक दुख सदिखन मनकेँ व्यथित केने रहैए।'' कहि आँखि बन्न कऽ सोचमे डुमि गेलीह। किछु समए गुम्म रहि पुन: बाजए लगलीह- ''गामे-गाम तेहेन अगराही लगि गेल छै जे शान्त हएब कठिन अछि। पुबारि गाममे खेतक झगड़ामे मारि भेल। से खूब मारि भेल। दुनू दिस कत्ते गोटेकेँ कान-कपार झड़लै। एकटा खूनो भेलै। मुदा अचरज ई भेल जे एहेन सना-सनी रहितो गौआँमे सुबुद्धि जगलै। कियो कोट-कचहरी नै गेल। गामेमे फड़िया गेल। अखन जँ ओना होइत तँ गाम उजरि जाइत। तेहेन-तेहेन मनुक्ख सभ बनि गेल अछि। जे सदतिकाल फोसरिये तकने घुरैए।''

ललित- ''भोटक दिन छी दादी। भोटो खसबैक अछि। मुदा जखन अहाँ आबि गेलौं तखन पहिने अहाँक काज सम्हारि देब।''

दादी- “भोट खसबैले थोड़े मनाही करबह। भिनसरसँ साँझ धरि भोट खसैए। पाँच बजेमे भोट खसा लिहह।”
“ताबे तक भोट बचले रहत?”
“जे लड़ैए, ओकरा एतबो बुत्ता नै छै जे बूथ सम्हारि कऽ राखत। ओना भोटे खसौने की हेतह। देखिते छहक जे कियो बक्से हेरा-फेरी कऽ लैत अछि तँ कियो रिजल्टे बदलि लैत अछि।”
“बेस कहलौं दादी। काका (दादीक बेटा) कतऽ रहै छथि?”
बेटाक नाओं सुन्तिे दादीक मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत बजलीह- “बौआ, पनरह-बीस बर्खसँ बौआइते-ढहनाइते छलए। पहिने दिल्ली गेल। ओइठीन काज नै भेलै तब बमै गेल। ओतौ नोकरी नै भेलै। तखैन हारि-थाकि कऽ पाँच बर्ख पहिने कलकत्ता गेल। मुदा जहिना बमै पाइबलाक छी तहिना कलकत्ता गरीब लोकक छी। ओइठीन एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकानमे नोकरी भऽ गेलै। दरमाहा तँ बेसी नै दइ छै मुदा साइकिल बनबैक सभ लूरि भऽ गेलै। अपने दिगारिक मिस्त्री छी। अपने बहिनसँ बिआहो कऽ देलकै। सुनै छी जे पुतोहुओ मिसतिरिआइ करैए। दुनू बेकती एते कमा लैए जे अपनो गुजर करैए आ घर बनबैले रुपैइयो पठा देलकहें। सएह रुपैया छी।”
“असकर लए तँ अहाँकेँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाएत?”
“हँ, से तँ चलि जाएत। मुदा पुरजीमे लिखने अछि, जे आब गामेमे रहब। पुरना जते मिसतिरी अछि ओ सभ मोटर साइकिलक मिसतिरी भऽ गेल। जहन कि गामे-गाम साइकिलक पथार लगि गेल हेन। तहूमे तेहेन साइकिल अछि जे छअ मासक उपरान्ते मिसतिरीक काज पड़तै।”
ललित पत्नीकेँ कहलक- “एक बेर आरो चाह बनाउ। दादीक संगे जाएब।”
सुपती- “घरमे दूध कहाँ अछि। नेबोओ सबटा चोराइये कऽ तोड़ि लइ गेल।”
दादी- “कनियाँ अहाँकेँ नै बुझल हएत। नइ नेबो अछि तँ नेबोक दूटा पाते दऽ दियौ।”

चाह बनल। एक घोट चाह पीब ललित दादीकेँ पुछलक- “दादी केहेन घर बनेबै?”
“बौआ, गिलेबापर जोड़ि तीन नंबर ईंटाक देबालपर सँ एसबेस्टसक छत देबै। कहुना-कहुना तँ बीस-पच्चीस बर्ख चलबे करत।”
“से तँ बेसिओ चलि सकैए आ सालो भरि नै चलि सकैए।”
“से की?”

“तेहेन सिमटीक घटिया एसबेस्टस बनैए जे पाथरक चोट बरदास करत।” मुड़ी डोलबैत दादी- “हँ, से तँ ठीके कहलह।” कहि गुम्म भऽ गेलीह। दादीकेँ गुम्म देखि ललित बाजल- “दादी, जँए अस्सी तँए निनानबे। चदरा तरमे खूब गतगर कऽ खरहीक छाड़ दऽ देबै। जँ पथरो खसत तँ चदरे ने फुटत, जान तँ बँचत कि ने । बेसीसँ बेसी देहपर पानि चुअत। सएह ने।”

:::::::::

११ अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डुमि गेल रहै मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच्छ हुअए लगल रहए। झामलालकँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटुकिलाल डिबिआ बारि चाहक चूल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चूल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइये बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहै जे पनरह दिनसँ राहड़िक दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नै खेने रहए। तइ खातिर रातिमे खाइये काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेलै। बिनु खेनहि पीढ़ीपर सँ खिसिया कऽ उठि गेल। माटियेसँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड्ड़ कऽ झामलाल दोकानपर पहुँचि बाजल- ''भुटुकि भाय, रतुका सोठिआएल छिअ। खेबाक किछु नै रखने छह?''

''अच्छा पहिने आधा-आधा कप चाह पीब लिअ। जहिना अहाँ सोठिआएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज की भेटत। बिस्कुट सबमे कोनो लज्जैत रहै छै मुदा छाल्ही अछि।''

''चलह हुन्डे दाम कहि दहक?''

''सबटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?''

''पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोटे आधा-अधी।'' आधा-अधी सुनि भुटुकिलाल उछलि कऽ बाजल- ''आधा किलोसँ बेसिये हएत मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।''

''एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देखि लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रुपैया ऊपरसँ देबह। खाली भरि दिन संग पुरह।''

''हम तँ पेट-बोनियाँ आदमी छी भाय। जतऽ पेट भरत ततऽ रहब।''

''चौकक खर्च हम देलियह आ मालिक तूँ भेलह। मुदा पहिने खा लए किएक तँ भरि दिन बहऽ पड़तह।''

आधा-आधा छाल्हीमे सँ उठा-उठा मुँहोमे दैत आ गप्पो करैत ''टटके छाल्ही बूझि पड़ै छह।''

''कौल्हुके छी।''

''छाल्हीक रस तँ तेसर दिनसँ बनब शुरू होइ छै। मुदा टटकोक अपन रस छै। आइ गामक झंडा गारि देलियह।''

“से की, से की?” बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटुकिलाल झामलालसँ पुछलक। पानि पीब झामलाल बाजल- “हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरेसाइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना सालमे पाँच लाख पीटिये दैत हेबै। बान्हल तँ अछि नै। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी जेकर जाल सगरे देशमे छै। एते पहुँचि सेहो बनौने छी। जहिना आइ खच्चरपुरबलाक खचरपनी झाँड़ि मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि कथा-कुटुमैतियो ढाठि देबै। तइले नओ परै आकि छह।”

“ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ अहिना हुअए।”

चाह पीब झामलाल बाजल- “भाय, ऐपर सँ जे पान सए नम्बर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जइतै।”

“भाय, पान तँ तेहन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। वसन्ती नीन छोड़ि कऽ औत। सात बजेसँ पहिने थोड़े औत। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।”

“तोहूँ भारी इस्की छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेबह। जेना-जेना तूँ कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने ऐ दुआरे कहि दइ छिअ जे बिरड़ोमे झंडा उड़िया देलिऐ मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त, की ने?”

“अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू, एक्के घंटामे चौकक चकचकी देखा दइ छी।”

उत्साहित भऽ झामलाल- “भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूटा पाइयो देखै छी आ दूटा लोकोक लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइये-खेनाइयेटा तँ जिनगी नै ने छिऐ। फेर दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जन्म लेब। तँए जहिना गामक झंडा अकासमे उड़िआएल तहिना बचबैले जे करए पड़त, से करब।”

“अच्छा छोड़ू अगिला बात, अखन की करब से विचारू।”

“तोहीं बाजह?”

“दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मजरूटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।”

“मजरूटी की कहलहक?”

“मैजरिटी, एक मजरूटी गाँजा पिआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबला अछि। आ तेसर इंग्लीस पिआकक अछि।”

“तीनूमे कत्ते खर्च हेतह?”

“अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहिऔ। सभ गप ने कऽ लेब।”

“सभ तँ फूट-फूट बैसत तखन रतुका बात कहबै केना?”
“मामूली लोक सबहक मजरूटी छै। कलाकार सबहक छै। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबह तखने चौकक ताल देखि लेबह।”
“किछु कहबहक नै?”
“कहबै आकि मंत्र देबै। दुइयेटा मंत्र दइक काज छै। अकासमे झंडा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाक सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दइ छिऐ जे जतऽ फड़ियबैक मन होय फड़िया लिअ हमरा समाजसँ।”

घंटे भरिक पछाति चौकक जुआनी आबि गेल। गाँजाक मंचसँ फगुआ शुरू भेल- “एक दिस खेले कृष्ण कन्हैया, एक दिस राधा जोड़ी हो।” तँ ताड़ीक मंचसँ महराइक धुन- “किसकी मैया बाघिन जनमे जो रूदल पर फेरे हाथ।” तेसर मंचसँ अंग्रेजी डान्स शुरू भेल।
सात बजैत-बजैत चौकपर गदमिशान हुअए लगल। रविशंकर चाह पीबैले अबैत रहथि आकि दस लग्गी पाछूएसँ चौकक मस्ती देखलनि। गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ हियासए लगलथि तँ देखलनि जे सौंसे गामक लोक नाचि-गाबि रहल अछि। मुदा लगले जेना पवनसुत किछु कहि देलकनि। मुस्की दैत भुटुकि लालक चाहक दोकान सोझे पहुँचि भुटुकि लालकें पुछलखिन- “भुटुकि भाय, बड़ चहल-पहल देखै छिऐ की बात छिऐ?”
“पहिने चाह पीबू ने। गप कतौ पड़ाएल जाइ छै। निचेनसँ चाहो पीबू आ गप्पो सुनू।”
“कनियो तँ इशारोमे कहह।”
“एतबे बूझि लिअ जे खच्चरपुर बलाकें मुता-मुता भरेलौं।”
भुटुकिलालक बात सुनि रविशंकर अचंभित भऽ गेलाह जे आखिर बात की छिऐ? तइ बीच झामलाल कहए लगलनि- “भाय, मास दिनक कमाइक फल छी। जड़ियेसँ कहि दइ छी। तैइतीसम दिनक गप छी। एक लाख रुपैयाक पार्टीक काज कए कऽ आएले रही। बारहसँ ऊपर दिन चढ़ि गेल रहए। कपड़ा खोलि कलपर बाल्टी-लोटा रखि लताम गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ ऊपर हियासैत रही। तइकाल हिरदे काका दछिनबरिया बाधसँ अबैत रहथि। नजरि पड़िते कहलियनि- ‘काका, गोड़ लगै छी। बड़ रौद छै, कनी ठंढा लिअ।’ जहिना कहलियनि तहिना ओहो लतामेक गाछ लग आबि गेलाह। लताम देखलाहा आँखि हिरदे काकाक मुँहक सुरखी देखि मुँहसँ निकलल- ‘काका, एना हकोपरास किअए छी।’ सुक्खल मुँहक मुस्की दैत बजलाह- ‘नै बौआ, नै कोनो। रौदमे सँ एलौंहें ने।”

“दूटा लताम खाउ?”
“नै बौआ, नै खाएब।”
“दूटा अंगने नेने जाउ।”
अंगनाक नाओं सुनि औटोमेटिक बम जकाँ कखैन छाती फाटि गेलनि, से नै बुझलौं। मुदा आँखिसँ टघरैत नोर गालपर चमकए लगलनि। मन गरमाएले रहए। कहलियनि- “काका, जहिना परिवारमे भैया, काका, बाबा, होइए, तहिना ने समाजोमे होइए। विरान किअए बुझै छी। अहाँ सबहक असिरवादसँ कमाइयोक आ दस गोटेकेँ चिन्हैइयोक लूरि भऽ गेल अछि। बाजू अहाँ किअए एते पीड़ित छी जँ उठैबला हएत तँ जरूर....।”
नोर पोछैत काका बजलाह- “बौआ, देखैयेटा ले बूझि पड़ै छियह जे मनुक्ख छिअ। मुदा से नै, मुइल मनुक्ख छी। अपनो परिवारक रच्छा करै जोकर नै छी। तहन तँ देखा-देखी आँखि तकै छी।”
“खुलि कऽ बाजू, काका?”
“बौआ, ऐ जुगमे हमसब महापापी छी, किएक तँ भगवान पाँचटा बेटी दऽ देलनि। चारिटाक तँ कोनो धरानी खेत बेचि- बेचि पार लगेलौं। सात बीघाक किसान मात्र पनरह कट्ठापर आबि गेल छी। तेहेन हवा-पानि देखै छी जे ओहूसँ पाँचमक पार लागत आकि नै।”
हृदय काकाक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। जेना बकारे बन्न भऽ गेल। छाती असथिर करैत पुछलियनि- “कक्का, कत्ते खर्च हएत?”
“बौआ, गरथाह बात केन बाजब।” आँखिक नोर पौछैत पुन: बजलाह- “बौआ, ई पाँचम बेटी तत्ते दुलारू अछि जे हृदैमे सटल अछि। एक तँ कोड़ि-पच्छू बेटी, तइपर सँ माइक तते सिनेही जे सुग्गा जकाँ किछु बाजत। जेठकीकेँ दादिये पोसलकै। कहियो ओकरा कोरा कऽ नै लेलिऐ। जखन टेल्हुक भेल तखनसँ संगे मेला-तेला लऽ जाए लगलिऐ। छोटकी बेटी माइक तेहेन दुलारू बेटी अछि जे साइयोसँ उपरे नाओं रखने छथिन।”
“कक्का, छोड़ू ई सब। अपन बहिन बूझि बिआह पार लगा देब। जेहने जेठकी बेटीक परिवार अछि तेहने परिवार भजिआउ। खर्चक चिन्ता जुनि करब। ई पहिल दिनक गप छी।”

ओना तँ गामे-गाम अतहतह होइते अछि मुदा खच्चरपुर बलाकेँ तँ कोनो सीमे-नाङरि नै छै। ऐ साल पाँचटा बिआहमे अभरल। तते दोस-महीम भऽ गेल अछि जे एकटा बिआहक खर्च नौत पुराइमे होइए। तइले नै कोनो। दस सेरे नै नितराइ दस सगे नितराइ। पाँचो बिआहमे ओकरा सबहक खच्चरपनी देखिलऐ से ऍंड़िसँ टिकासन तक नेसि देने अछि। मुदा कोनो

बिआहमे कोनो समाज (बरियाती-घरवारी) तँ नै छलौं तँए आँत-मसोसि कऽ रहि गेलौं। गर चढ़ा खच्चरपुरेमे कथा ठीक केलौं। कक्कोकँ पसिन भेलनि। लेन-देन तँए भऽ गेल। समए बना ओहू गामक समाज आ अपनो समाजक बैसार केलौं। बैसारेमे बजलौं- "अखन धरिक काज दुनू घरबारीक छलनि मुदा आब समाजक भऽ गेल। चाहै छी जे आन गाम जकाँ थूका-थूकी बिआहमे नै हुअए। तँए किछु समस्या अछि जइपर अखने विचार विमर्श भऽ जाए।(१) बिआह पद्धतिक अनुकूल हुअए आकि जयमाला कऽ हुअए। (२) पलाउक चलनि भऽ गेल से मखानक खीर खाएब आकि पलाउ? (३) खेला-पीला उत्तर लगले विदा भऽ जाएब आकि आराम कऽ कऽ?"

प्रश्न सुनि चुप्पी पसरल। जहिना चूल्हिमे खोरनासँ जारनि घुसकौल जाइ छै तहिना घुसकौलौं- "कन्यागत समाजक कन्हापर भार देने छथिन तँए समाज चाहै छथि जे आन-आन गाम जकाँ बरियाती-घरवारीक बीच कोनो तरहक राग-द्वेष नै हुअए। किएक तँ बरियाती घरवारीकँ निच्चाँ देखबए चाहैथि आ घरवारी बरियातीकँ। जइसँ जहिना खेतमे कोनो चीजक बीआ छीटल जाइत अछि, तहिना हम सभ झगड़ाक बीआ समाजमे छीटि देने छी, जे दुखद बात छी। नै चाहब जे समाजमे एना हुअए। बिआह सृष्टिक सिरजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ अनुचित। अपने लोकनि जे कहि देब ओइ अनुकूल बिआह हएत। घमरथन शुरू भेल। घमरथनक कारण भेल किछु देखौआ काज आ किछु चोरौआ। मुदा सुमति एलनि, कहलनि, जे लड़का-लड़कीक बिआह सामाजिक पद्धतिक अनुकूल हुअए। ई भार अहाँपर रहल। जहिना कोनो काजक प्रक्रिया होइ छै तहिना भोजनक प्रक्रियाक अंग आरामो छी। जानल बात अछि जे नियमित भोजनसँ भिन्न भोजन बरियातीमे होइ छै, तँए आराम आरो जरूरी अछि। प्रात:काल नओ बजेमे चाह-पान खा असिरवाद दैत आपस हएब। पलाउ आ खीर खेनिहार दुनू रहताह। बाजा-बूजीक बेवस्था घरवारीक। नै चाहब जे रस्ता-बाटमे अनगौआँ सभसँ झंझट हुअए। मोटा-मोटी यएह बुझू जे सएक धतपत बरियाती रहताह, जिनका लेल अहाँ दू-ठाम बेवस्था करब। अहूँ सभ बुझिते छिऐ आ हमहूँ सभ बुझिते छिऐ। एक भागक जे बरियाती रहताह हुनका लेल जहिना भोजनक वृहत् बेवस्था रहतनि तहिना आरामोक हेबाक चाही। ई नै जे मधमन्नी जहल जकाँ मुड़ी-पएर दुनूक पतियानी लगि जाए। पुछलियनि- 'जखन दरबाजापर पहुँचबै तखन कोन रूपे शुरू करबै?' कहलनि- 'जे सभ भाँग खेनिहार छथि ओ सभ घरेपर भाँग खेता आ रस्ते-बाटमे कतौ झाड़ा-झपटा करताह। पएर धोबसँ शुरू करब। एम्हर बरियातीक सनोमान शुरू हएत आ

ओम्हर आंगनमे बिआहक प्रक्रिया शुरू हएत। आठ बजे दरबज्जापर पहुँचि जाएब। दस बजेमे खुआ-पिआ कऽ आराम करए छोड़ि देबै।' हँसैत सभ निर्णए कऽ लेलनि। विदा भेलौं।

रस्तामे झगड़ाक जड़ि ताकए लगलौं। एते तँ बिसबास रहबे करए जे जहिना चोर फँसबैले सिपाही घेराबंदी करैत अछि तहिना जाल तँ लगबै पड़त। मन पड़ल दोसक गप। दोस कहने रहथि जे अपना सभ कारोबारी छी, तँए कोट-कचहरीसँ सदति काल बँचैत रहक चाही। नै तँ अनेरे ओझरा जाएब। कारोबार कारोबारे रहि जाएत। मुदा उखरिमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर केने काज चलत। तहन तँ जहाँ धरि संभव हएत तहाँ धरि बँचब। अखनो समाजमे कहाँ कियो खुलि कऽ ताड़ी-दारू करै छथि। चोरनुकबा जरूर करै छथि। मुदा की हुनका सभकेँ अपना आँखिमे लाज नै छन्हि? जरूर छन्हि। मुदा जे होउ, जिनगी भरि जहलेमे किअए नै रहऽ पड़ै मुदा खच्चरपुरबला सभकेँ सिखाएब जरूर। तेहेन कऽ नाङरि सुरड़बै जे इलाकामे मुँह उठाएब मुसकिल भऽ जेतनि। बेसीसँ बेसी दसटा बदमास गाममे हएत पचासटा आनि कऽ रखि देबै। मुदा सिखेबै जरूर।

आठ बजे गामक सीमामे बरियाती प्रवेश कऽ गेल। हमहूँ सभ साकांच रही। दरबज्जापर पहुँचिते स्वागतक संग बैसारक कार्यक्रम शुरू भेल। दाय-माय वरकेँ अरिआति आंगन लऽ गेलीह। बरियातीक बीच प्लेटमे फ्राइ कएल मखान पहुँचि गेलनि। दुनू समाजक (बरियाती-घरवारी) बीच मखानक मिठासक संग गप-सप्प शुरू भेल। गाममे कत्ते सार्वजनिक स्थल...., कोन-कोन शिक्षण-संस्थान...., अस्पतालक की स्थिति...., गाममे कत्ते किसान परिवार....., कत्ते नोकरिहारा....., जोतसीम जमीन कत्ते...., बोरिंगक संख्या कत्ते....., खेतीसँ अलग कारोबारी परिवार कत्ते....., कत्ते परिवार गामसँ पड़ाइन कऽ रहला अछि आ कत्ते दोखतरीपर आबि-आबि बैस रहला अछि....। बड़ी जुमा कऽ महावीर जी लंकासँ आम फेकने रहथि से ने तँ खास भेल अछि। मुदा किछु गोटेकेँ भाँगक मातल मनमे उठए लगलनि जे मखानोक लाबा पानियें पीब भेल। ओ तँ अपने जिनगी भरि पानियेमे रहल अछि तँ तइमे नीक जे दू घोंट बेसिये कऽ पानि पीब लेब। बिना मुंगबे मन थोड़े मानत। पेटेटा भरने नै ने होइ छै, मनो ने भरक चाही। मुदा फेर मनमे उठनि जे अखन कोनो उसरि गेल।

अंगनाक ओसारपर बैस हृदय काका आँखि खिरा-खिरा तकैत तँ देखैत पाँचो बेटीक सिनेह। जेठकी बहिन माइक पीठपर अंगनाक चीज-बौसकेँ उठा-उठा घरमे रखैत तँ घरसँ निकालि आंगनमे रखैत। मझिली तँ चारू बहिनक लेधे-गोधक आइ-पाइमे भिनसरसँ अखन धरि लगल अछि। सझिलियेकेँ की कहबै, बेचारीकेँ लगले हाथमे नीपौन देखै छी तँ लगले सिनुर-पिठार। चारिमकेँ तँ गीतिहारियेक आगू-पाछू करैत-करैत नाको-दम भेल छै। घुमैत नजरि हृदय कक्काक बेटी-जमाएपर गेलनि। ओना देखिये कऽ केने रहथि। तँए देखैक ओ रूप नै। देखैक रूप रहनि मौलाइल गाछक पोनगल सरारिमे खिलैत फूलकेँ। हारल मनुखक जीत। जे कहियो कन्यादानकेँ उच्च कोटिक श्रेणीमे गनल जाइत छल ओ आइ समाजमे बेटियाह वंश बूझि बिआहसँ वंचित भऽ रहला अछि। वाह रे हमर समाज।

हम अपना काजक पाछू तबाह। पच्चीसो काजकर्त्तापर मलेटरीक नजरि। तीन कदम आगू तँ एक कदम पाछू भऽ सावधान। ओना अगुआएल-पछुआएल बरियाती समयेपर गाममे प्रवेश कऽ गेल छलाह मुदा समाजक दरबज्जापर जहाँ-तहाँ छिड़िआएल। दू-चारि मिलि-मिलि अड्डा जमौने। जइ पाछू एक-एक काजकर्त्ता लगल। ताड़ी जकाँ तँ इंग्लीसक गोष्ठी नम्हर नै ने होइत अछि। रंग-बिरंगक पीनिहार रंग-बिरंगक वस्तु।
साढ़े नओ बजे बरियाती भोजन कऽ ओछाइन पकड़ि लेखा-जोखा करए लगलाह। हराएल-बरियातीक खोज शुरू भेल। साढ़े दस बजे घरवारी बरियातीक बीच समझौता भेल जे जते समए आगू बढ़ि गेल ओइसँ पछिलाकेँ छोड़ि भोजने हुअए। सएह भेल। मुदा कमाल भऽ गेल। भोजन शुरू भेल, पेशाब करैले उठब शुरू भेल। पेशाब खोलैबला दबाइ पानिमे मिला टीपि-टापि कऽ दस गोटेकेँ पिआ देल गेल। एक गोटेकेँ देखि छोड़ि देलौं, दोसरोकेँ छोड़ि देलौं। मुदा जहिना चुट्टीक धारी चलैत तहिना अछि जखन शुरू भेल आकि बुढ़हा झामलाल सबहक बीच जा कहलियनि जे अखन धरि घरबैया समाजसँ कोनो तिरोट भेल हुअए से कहू? एक्के-दुइये पान-सात गोटे उपदेश दैत बजलाह- “अखन जे हवा-बिहाड़ि उठि गेल अछि तइमे अहाँलोकन्हिकेँ धन्यवाद दैत छी। हमहूँ सभ यएह गप करै छलौं जे गणेशजीक भक्त सभने छेनाक मिठाइ खाइ छथि मुदा ओ तँ अखन धरि लड्डुए खाइ छथि। जुग बढ़ि गेने लोको उधिआ जाएत। जे सुआद खाजा-मुंगबाक अछि ओ डिब्बाबला रसगुल्लाक हएत। ओ तँ भाँज पुराएब छी।’ कहलियनि- ‘जा धरि अपने लोकनि ऐठाम छी ताधरिक नीक-अधलाहक जबाबदेह घरवारी हेताह मुदा अहाँ सभ जे उकठ करब, तहन.....।’ की

भेल, की भेल? दोसर बरियाती सबहक छिछा-बीछा चलि कऽ देखियनु? वामा करे पड़ि जे जाँघ कुड़ियबैत रहथि से उठले ने होइन। मुदा कासपरक दहीक ढकार फुर्ती आनि देलकनि। सभ कियो उठि दोसर पंडालमे पहुँचलाह तँ देखलनि जे एना किअए रेलबे स्टेशनक टिकट खिरकी जकाँ दुनू दिसुक पाँती लगल अछि। मुदा से दसे-बारहे गोरेकेँ देखै छी। खेबा-पीबाक वस्तुमे जँ किछु गड़बड़ी रहितए तँ यहागंजा होइतै। सेहो ने देखै छी। एक-दोसरासँ आँखि मिला प्रश्न पुछैत तँ मुड़ी डोला जबाब भेटनि। मुदा किछुओ दोख जाबे ककरो नै अछि ताबे एना भऽ किअए रहल अछि। आन ठाम कहाँ भेल। मुदा बिना आधारे कोनो बात मान्यिो लेब से उचित-नै। आमपर फेकल गोला जकाँ जे लागियो सकैए आ हुसियो सकैए। इम्हर आराम करैले सेहो मन कछमछाइन। दोहरैलियनि- 'जँ अपने लोकनि समाजक सीमा रेखा तोड़ि घिनबए चाहब तँ समाजोकेँ ई अधिकार बनै छै जे सीमाक सिपाही जकाँ अपन मातृभूमिक रच्छा करए।' कबछुआ जकाँ भकभका कऽ तँ लगलनि मुदा घिनबैक कारण बुझबे ने करथि। खिसिया कऽ एकगोटे बजलाह- 'कोन-कहाँ बोतल पीब-पीब बरियाती औताह आ सभ किछु (समाजिक गुण)केँ खेने-पीने चलि जेताह। एको क्षण ई सभ जीबै नै देताह।' कहि छोटका भाएकेँ कहलखिन- "बौआ, जिनका जे मन फुड़तनि से करताह। अपन इज्जत-आबरू अपना हाथमे लऽ चलह।" एक्के-दुइये ससरि-ससरि घरमुँहा हुअए लगलाह।

:::::::::

१२ अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आंगन बहाड़ि बाढ़निकेँ कलपर धोए पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलनि। हाथ-पएर धोअल बूझि नजरि फूल तोड़ैपर गेलनि। ओना लालकाकी एहेन नियमित छेलीह जे जहिना खर लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छथि तहिना दिन भरिक काजोक छन्हि। मुदा मन पाड़ैक जरूरति ऐ लेल रहि जाइत छन्हि जे पद्धुआ काका (पति) गाममे छथि आकि नै? गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइत छन्हि आ नै रहने कमि जाइ छन्हि। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलनि। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उताड़ि कल दिस बढ़लीह। कलक बगलेमे रंजनीगंधापर हाथ दैते छेलीह आकि नजरि अपराजित दिस बढ़लनि। मेल-पाँच करैक विचार सोचैत रजनीगंधासँ अपराजित दिस बढ़लीह। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलनि। आँखि पड़लनि फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देखि विचारलनि जे पाँचटा बेलामे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेलीह आकि नजरि पतिपर गेलनि। पतिपर नजरि पड़िते मन दुखाए लगलनि। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कंडीशन गाड़ीमे बैस सराफा बाजार जाए हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गारामे लटकैबितौं। मुदा तेहेन भेलाह जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलनि आ कहलियनि जे साइकिल कीनि लिअ, सुभितगर हएत, तँ कहलनि जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलस्तर करब, तैयो ने जुटत। तइमे नीक पएरे। कहलनि एक मानेमे नीक। मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ नै उतरलनि। मन गेलनि दोसर दिस। सभटा पोथी बरखामे भीज-भीजि सड़ि गेलनि, जखन घरे चुबै छलनि तखन जँ सड़िये गेलनि तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलनि तखन किअए ने फेर किनलनि। जइ घरमे पोथी नै रहत ओ घर केहेन हेतै। क्रोध कमलनि। क्रोध कमैक कारण भेलनि अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ काल धरि केकरा लए करै छी, परिवारे लए ने। फेर तामस मुड़ि गेलनि, कहैले आठ घंटा डयूटी करै छथि, चारि घंटा बाँटेमे लगै छन्हि। आधा काज जे सम्हारि कऽ नै रखबनि तँ पारो ने लगतनि। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैत? फुलडाली रखिते मनमे एलनि, एक वीहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बइसैमे अखनो बहुत बाकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा

ओसारपर पूजा-ठाँउ कए चूल्हि-चिनमार दिस बढ़लीह। घर-निप्पा रखि अर्घा-सरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि लालकाकी घड़ी दिस देखलनि। अखन तक समए आ काजमे तल-वितल नै देखि मनमे खुशी भेलनि। नजरि पतिपर गेलनि। कीड़ी आँखिमे पड़ने जहिना कड़ुआ जाइत छैक तहिना मन कड़ुआ गेलनि। बुदबुदेलीह- "एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू मुँहे ससरत?" फेर मनमे एलनि आन दिन जकाँ जारनि सुखाएल नै अछि। भानसमे देरी लागत, से नै तँ पानि चढ़ा चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजड़ल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत। बाड़ी पहुँचि पतरका जारनि सभ बीछि कऽ चूल्हि लग रखलनि। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे रखए लगलीह। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लनि। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बूझि पड़लनि। मनमे एलनि- ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छै। फेर मन पतिपर गेलनि। उमकि कऽ मन कहलकनि- आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलनि। हृदए बिहुँसि गेलनि। 'जइ मर्दकेँ आनि नै आ जइ बड़दकेँ पानि नै,' ओ अनेरे गाम घिनबै लए किअए जीबैए? मन पड़लनि दुरगमिनया पीढ़ी। जहिना बाबू सतपुरैनि खोधाएल कटहरक पीढ़ी देलनि आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छथि। थारी साँठि लाल-काकी पंखा नेने छोटकी पीढ़ीपर बैस बनाओल विन्यासक सुआद बुझैक लेल पढ़ुआ काका दिस देखए लगलीह। मगन भऽ पढ़ुआ काका भोजन करए लगलाह। शरीरांगक (देहांगक) सिरखार देखि लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन काल जे बजबे ने करताह हुनका कहलो की जाए। चुप्पे रहलीह।

कपड़ा पहीरि पढ़ुआ काका घरसँ निकलिते रहथि आकि आंगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलनि। पत्नीक काज देखि मन मानि गेलनि जे सिपाही जकाँ छथि। मनमे खुशी एलनि। पान खा आगू-आगू पढ़ुआ काका आ पाछू-पाछू लालकाकी आंगनसँ निकलि डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआ काका पुछलखिन- "किछु कहबोक अछि?"
लालकाकी- "अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोटे दुनू दिस विदा भेला। मुसकुराइत पढ़ुआ काका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुरि कऽ देखि डेग तेज करैत आगू बढ़लाह। नाकमे सुरसुरी लगलनि। भेलनि जे छिक्का हएत। वामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगलाह। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नै। हाथ निच्चाँ करिते धियान

पत्नीक शब्द ‘तनदेही’पर गेलनि। पत्नीक मुँहसँ निकलल शब्द विशारद पास पढ़ुआ काकाकेँ ओझरा देलकनि। फेर घुरि पत्नी दिस तकलनि तँ देखलनि जे सड़कसँ आंगनक घुमौनक भौकपर पहुँचि गेल छेलीह। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेलीह। कोकिलक कंठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआ काकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलनि। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चंदन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलनि कतऽ सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलियनि कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किअए ने बजनिहारियेसँ पूछि लियनि। ओहो तँ आन नै अर्द्धांगिनीये छथि। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैक लेल दुनूक सहयोग तँ बराबरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ, एक सीमाक भीतर अपने। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रुपैया हाथमे दऽ दइ छियनि। मुदा ओइ रुपैयाकेँ नचबै तँ वएह छथि। पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छथि। मुदा जते दुनू गोटेक भीतर झँकैत छलाह तते हटल-हटल बूझि पड़नि। मन बौआ गेलनि जे पति-पत्नीक, पुरुष-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहेन संबंध हेबाक चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलनि। किअए ने दुनू गोटे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलनि। गामक सीमो टपि गेलाह। विद्यालयक मुरेड़पर नजरि गेलनि। सबूर भेलनि जे पहुँचि गेलौं। तीस-पैंइतीस सालक अभ्यास, तँए थकान नै बूझि पड़नि मुदा.......।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जइठाम ओसारपर चपरासी बैसैत। सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआ काका रहथि आकि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखथि। सीढ़ी लग पहुँचि आगू तकलनि जे चपरासी घुरि कऽ अबैए आकि नै। मुदा नै देखि काकामे पौरुख जगलनि। मनमे उठलनि अखन तँ सेवान्मिृत्तो नहिये भेलौंहेँ, तहन किअए अनकर सेवा लेवा लेल मुँह ताकब। सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेलाह मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छलनि, आगूसँ घेर लेलकनि। जे (चपरासी) बाबा कहैए, ऑफिसोक सभ भैये-काका कहै छथि मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए। जँ से नै तँ परिवारमे किअए कहल जाइए। नजरि ठनकलनि, अगर बीस बर्खक आधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उमरे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए। मन हल्लुक भेलनि। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलनि। हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे

पढ़ुआ काकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतनि। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसरि गेल छल।

स्टाफ रूम पहुँचिते एक नै अनेक तरहक खटका खटकए लगलनि। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहनि। कुरसीपर बैसिते मनमे उठलनि। मुदा तह दैत मनसँ हटौलनि। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बूझि पड़नि। किछु व्यंग्य-बाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहथि तँ ओहन बेवहारे नै छलनि। चालिसँ थाकल रहबे करथि आँखि झल-फलाए लगलनि। गमे-गम नीनो आबि गेलनि। अलसा कऽ आँखि मूनि लेलनि। आँखि मूनल देखि इशारामे उतरीक चर्चा हुअए लगल। मुदा पढ़ुआ काकाक आँखि बन्न। तँए किछु बुझबे ने करथि।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजे ट्रेन, तँए स्टाफ सबहक बीच चिल-मिलक कुचकुची जकाँ, देह-हाथ चुल-चुलाए लगलनि। कुरसीक पौआ सबहक आबाजसँ पढ़ुआ काकाक भक्क टुटलनि। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगलाह आकि ऑफिसक बड़ा बाबू आबि कऽ काकाकेँ कहलकनि- "अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?" कहि ऑफिस दिस बढ़ि गेलाह। ठाढ़े प्रणाम कए कऽ संगियो सभ निकलि गेलनि। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआ काका असकरे कोठरीमे बैसल। बड़ा बाबूक भाषापर नजरि गेलनि। आन दिनक जे बोली रहैत छलनि ओइमे किछु कडुआहट बूझि पड़ि रहल अछि। भषे नै अखने की देखलौं? काल्हि धरि सहयोगी सभ अरिआति कऽ पहिने विदा कऽ दैत छलाह तेकर बादे कियो जाइत छलाह। नौकरीक एहसास भेलनि। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा (विद्यार्थी) सभसँ की संबंध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइत छलए आ बजै छलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइत छलए। जे पहिने लोटा पकड़ि पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझैत छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैत अछि। केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहियेसँ विद्यालय सरकारीकरण भेल तहियेसँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहीन भऽ गेल। ओना महिनवारी बेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। महीने-महीना नै भेट सालक

चुकती सालमे हुअए लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नै अपन काज बुझै छलौं। मुदा आइ बूझि पड़ि रहल अछि जे कतौ बंधनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते ऑफिसक बड़ा बाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआ काका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बही आगू बढ़ा देलखिन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पति टुटैत, तहिना पढ़ुआ काकाकेँ नौकरी टूटि रहलन्हिेँ। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआ काका हताश भऽ गेलाह। मनमे उठलनि सभ किछु हरा गेल। जत्ते पढ़ने छलौं ओइमे सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नै भेल। जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल। की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि......। मन पड़लनि अपना संग किनको हाथो पकड़ने छियनि कि ने? दू प्राणीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै ओ हमरा बुते कएल हएत। अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ा बाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छलाह ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छलियनि। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत। जिनगीक एक्कोटा ब्रत निमाहै जोकर नै छी। द्वन्द्वमे छाती दलकए लगलनि। तइ बीच चपरासी आबि कहलकनि- "कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौक।" अर्द्धचेत अबस्थामे पढ़ुआ काका कोठरीसँ निकलि पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठनि। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओङठि कऽ बैस गेलाह। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलनि। जेबीसँ निकलि पढ़ए लगलथि। सूचना देल जाइत अछि तेसर मासक अंतिम तिथिसँ सेबा-मुक्त होएब। निचला पाँती पढ़ौ नै लगलथि, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेलाह। मुदा जहिना नदीक किनछड़िक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत अछि तहिना पढ़ुओ काकाक पएर आगू-पाछू हुअए लगलनि। मनक लहरिसँ पएर तनेलनि। आगू बढ़ए लगलाह। विद्यालयक फाटक (गेट) लग पहुँचि पाछू धुरि तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहनि। फुरेलनि, जहन जीबैक सभ रस्ता बन्न भए रहल अछि तहन मरैयोक तँ ढेरी उपाए अछि। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत। जीबैले अपराध कए कऽ कियो मृत्यू प्राप्त करैत अछि मुदा मृत्यू लए अपराध.....।

बीच रस्तापर आबि क्रोधक लहरिमे आरो ओझरा गेलाह। मुदा मनमे हूबा जगलनि। फुरेलनि, जहन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइये देलक तहन एक्केटा उपाए अछि जे जिनकर हाथ पकड़ि भार नेने छियनि हुनक लग पहुँचि कहियनि जे अखने दुनू प्राणी हरिद्वारक रस्ता धड़ू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मंदिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सुनब आ अपनो नचारी कहबनि। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब। तखने एकटा छुछुनरि दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआति टपैत रहए। आकि भक्क टुटलनि। ताबे छुछुनरि ससरि कऽ बामा भाग पहुँचि गेल। मनमे शंका भेलनि जे छुछुनरि पएरमे काटि लेलक। झुकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगल। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलनि। मन मानि गेलनि जे छुछुनरि काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलनि। काजक बेर रहने सभ छिड़िआएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलनि। सभ चलि गेल छलाह। मनमे एलनि छुछुनरिक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलनि। मुदा लगले मन बदलि गेलनि। अपन बीख अपना बुते कहाँ झरैत अछि, तँ की ऐठाम पएर पटकि कऽ मरि जाएब आकि जतऽ मनतरिया भेटत ओतऽ जाँच करा लेब। ताधरि अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे.... दु... एक...।
मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुँहसँ फुकि देथि। अबैत-अबैत गामक सीमापर पहुँचि गेलाह।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआ काका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लाल काकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहनि। किसाने परिवार देखि लाल काकीक पिता कुटुमैती केलनि। ओना पढ़ल वर पाबि दुनू प्राणीक हृदए जुरा गेल रहनि जे लक्ष्मीक संग सरस्वतीयो छन्हि।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआ काकाकेँ सीमा पर अबिते बूझि पड़लनि। साओनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकनि। पानि जकाँ बुद्धि पसरि गेलनि। जीबित छी आकि मुइल से होशे ने रहलनि। थुस दऽ बैस रहलाह। मन पड़लनि अकाजक हएब। दुनिया तँ काज करैबलाक छी। की मृत्यू शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक होइत, सेहो नहिये हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा ब्रत तँ जिनगीक

पाशापर बैसल अछि। मन राँइ-बाँइ भऽ फाटि गेलनि। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बहि गेलनि। हृदए पसीज गेलनि। मन पड़लनि अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि, ओइसँ हटल राखैमे ककर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छलियनि। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किअए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलियनि। अपनो एते होश नै केलौं जे सए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत। शेष जिनगी केना चलत? अपनो नै छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं। निराश मनमे सासुर मन पड़लनि। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा लए रूसैए। मुदा सासु मन पड़िते मन मधुआ गेलनि। जँ लोक सासु लग नै रुसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ कतऽ करत? मन आरो पघिलि गेलनि। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छथि। मुदा फेर मनमे उठलनि जे रुसबो तँ कत्ते रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रुसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलनि जे सियानी रुसबसँ शुरू करब आ जते निच्चाँ धरि सुतरि जाएत तते निच्चाँ धरि आबि अटकि जाएब। फुड़फुड़ा कऽ उठि घर दिस विदा भेलाह। चारू भर चकोना होइत जे कियो देखए नै। मुदा से सुतरलनि। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हड़ि कऽ बजलाह- “ई घर मनुक्खक रहैबला छी? एम्हर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओम्हर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि।” कहि रुसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि आँखि तकिते सुति रहलाह। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देखि नेने रहनि। हँसुआ-खुरपी बाड़ियेमे छोड़ि आङन दिस बढ़लीह तँ किछु आबाज बूझि पड़लनि मुदा नीक नहाँति नै बूझि सकलीह। ओना पढ़ुओ काका मुँह दाबिये कऽ, लोकक दुआरे बजैत रहथि। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजलाह- “एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाड़ि करैबला अछि।”

पढ़ुआ काकाक बात लाल काकी बूझि गेलखिन जे कतौ किछु भेलनिहेँ। दू बीघा हटल अबाजमे लालकाकी बजलीह- “एलौं।”

‘एलौं’ सुनि पढ़ुआ काकाकेँ सबूर भेलनि। लाल काकी मने-मन सोचैत जे पुरुखक लटारम की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी बौस कऽ शान्त कऽ देबनि। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलनि।

पत्नीक अबाज सुनि पढ़ुआ काकाकेँ छाती दहलि गेलनि। नाङड़ि सुरड़ि कऽ विद्यालय घर धड़ौलक। कतौ के ने रहलौं। मन गरमेलनि। बमकि कऽ बजलाह- ''काल्हिये विद्यालय जा कऽ लिखि कऽ दऽ देबै जे आइयेसँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हुअए तँ मनिआर्डर कऽ रुपैया पठा दिअ, नै होइ तँ नै पठबऽ।'' मुदा लगले मन थलथला गेलनि। जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत। एन्ना पाइयक खेल किअए भऽ रहल अछि। विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किअए ने बूझि रहलौंहेँ। आकि अर्थशास्त्र पढ़बाक अभाव रहल?

लग अबिते लाल काकी बजलीह- ''चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला कऽ रखने छी, नेने आएब?''
लाल काकीक बात सुनि पढ़ुआ काकाक मन मचकी जकाँ झुलए लगलनि। मुदा आससँ दोसर दिस भऽ गेलनि। खिसिया कऽ बजलाह- ''हूँ। चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा।''
मुस्की दैत लाल काकी उत्तर देलखिन- ''हमरे छी, अहाँक नै छी?''
पत्नीक बात सुनि मन सिहरि गेलनि। बेरुका सूर्जक रौद जकाँ पढ़ुआ काकाक गरमी कमलनि। बजलाह- ''एकटा गप कहए चाहै छी?''
''भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि। हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अंडी तेलसँ घुट्ठियो ससारि देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदति काल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। आरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सुनब। तइकालमे कहब जे मौगी-मेहरीक गप छी।''
लाल काकीक गप सुनि पढ़ुआ काकाक मन आगिमे पकैत भट्टा जकाँ असुआ गेलनि। लजबीजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलनि। कल पड़ल रोगी जकाँ लाल काकी बूझि सहटि कऽ निकलि ठोकले बाड़ी पहुँचि गेलीह।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआ काका बिसरि गेलाह। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलनि। किसानक बेटी लाल काकीकेँ खेतीक सोलहो आना लूड़ि। अन्नक खेती बटाइ लगा लेने छथि, पाँच कट्ठा चौमास आ गाछीक सेवा टहल अपने करै छथि। दूटा गाइयो पोसिया लगौने छथि, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइत छन्हि। पक्का घर बना सभ बेवसथो केनहि छथि।

हँसुआ, खुरपी, कोदारि आङनमे रखि लाल काकी झाड़ू लऽ कऽ आङन बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पीबिते रहथि आकि मन पड़लनि पतिक रुसब। फेर मन पड़लनि अपन जिनगी। जा धरि माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोटेक इच्छा सदति काल यएह रहनि जे धिया-पुता कखनो कानए नै। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बूढ़ी (सासु) सदति काल कहैत रहै छेलीह जे कनियाँ अंगनाक मालिक स्त्रीगणे होइत छथि। तँए अंगनकेँ, बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नै जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बूझि सती धर्मक पालन करैत एलीह- सावित्री, दमयन्ती। कडुआ कऽ किछु कहब उचित नै। तइ बीच दरबज्जा परक आबाज सुनलनि। ''हे भगवान, जानह तूँ।''
मने-मन पढुआ काका अपने संबंधमे सोचैत रहथि। आमोक गाछी तेहन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैत, तँ गोटे साल बिजलौकेमे मोजर जरि जाइत। गोटे साल बिहाड़ियेमे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे जीब सकै छी, बाकी.....?

दरबज्जापर लाल काकीकेँ अबिते पढुआ काकाक टुटल मन कलपि उठलनि। गोरथारीमे बैस लाल काकी बजलीह- ''पएर सोझ करू।''
लाल काकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढुआ काकाक बोल न्किललनि- ''पएर नै टटाइए, हृदैक बेथा छी।''
पतिक बात सुनि फड़कि कऽ चौकीपर सँ उठि लाल काकी मधुआएल स्वरमे बजलीह- ''साँचे स्त्रीगण सबहक मुँहे सुनै छी जे पुरुख नङरकट होइ छथि। कुत्ता जकाँ सदति काल नाङरि टेढ़े रहै छन्हि।''
''जे बुझी।''
''तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुड़ जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक आओत।''
''चौकीपर सँ उठलौं किअए? डाँड़ सोझे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोटेक एक्के वृत्त करैत अछि, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।''
पढुआ काकाक बेथा सुनि लाल काकीक मन कानि उठलनि। जा धरि ओछाइनोपर पड़ल रहताह ताधरि..... सत्ती साध्वी तँ.....।
चौकीपर बैसिते पढुआ काका आँखिमे आँखि मिला कहलखिन- ''सभ

अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनाओल जिनगीक आधा भाग अहाँ छी।''

''अहाँ छी।''

पढ़ुआ काकाकेँ मन पड़लनि छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन- ''भारी भूल भेल जे आहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित्त अहाँ मुँहे सुनब।''

अवसर पाबि लाल काकी पूछि देलखिन- ''अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी कत्ते दिन जीब। जते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब। राजा-दैविक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब? अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा इहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।''

पत्नीक बात सुनि उछलि कऽ चौकीपर सँ ठाढ़ होइत बजलाह- ''नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जँ अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तहन तँ....।''

:::::::::

१३ ऑपरेशन

पत्नीक बढ़ैत बेमारी देखि चेतानन्द डॉक्टर ऐठाम जेबाले रुपैयाक ओरियान करए लगलाह। अपना हाथमे तीनियेटा पचसटकही। कम-सँ-कम तँ पाँचो हजार चाही। जहिना गारामे उतरी नेने लोक घराड़ी लिखैले रजिष्ट्री ऑफिस जाइत तहिना चेतानन्द चौमासपर रुपैया उठा पत्नीकेँ संग नेने डॉक्टर ऐठाम पहुँचलाह। ओना पत्नी-सुनियाकेँ गैस्टिकक शिकाइत चारि-पाँच बर्खसँ रहनि। मुदा आनो सभ जकाँ एकटा-दूटा गोटी खा-खा रोगकेँ दबने रहथि। जाँच-पड़ताल केलापर डॉक्टर बूझि गेलखिन जे सात दिनक अभ्यन्तरे दुनियाँ छोड़ि देतीह। मुदा जखन कियो मृत्यूक बाट पकड़ैत अछि तखने डॉक्टर ऐठाम जाइत अछि। बोल-भरोस दैत चेतानन्दकेँ डॉक्टर कहलखिन- ''हिनका आँतमे पत्थर गोला भऽ गेल छन्हि, ऑपरेशन करए पड़त। मुदा शरीर तते अब्बल भऽ गेल छन्हि जे ऑपरेशन करैसँ पहिने पाँच-छह दिन दबाइ खुआबए पड़त। देहमे खून बनतनि तखन ऑपरेशन आसान हएत।'' कहि दबाइक पुरजी बना देलखिन। भाड़ाक कोठलीमे पहुँचि पत्नीकेँ चौकीपर सुता, दुनू बच्चा मांगैन आ बिलटीकेँ पत्नीक लगमे बैसाए चेतानन्द बाजार विदा भेला। पहिने दबाइक दोकानपर पहुँचि दबाइ कीनि फूट-पाथेक दोकानमे रोटी-तरकारी कीनि डेरा एला। डेरा आबि समान रखि कलपर सँ पानि अनलनि। दबाइ खुआ दुनू बच्चाक संग अपनो खाए लगलाह। खेबाक मन नै होइन। कंठसँ निच्चाँ धँसबे ने करनि। मुदा पानि पीब-पीब खाए लगलाह। मन कहनि जँ आधो पेट खाएब नै तँ दिन-राति दौग-बरहा केना कएल हएत? जी-जाँति तरकारीक संग तीनटा रोटी खाए दू गिलास पानि पीलनि। पानि पीब चेतानन्द बिलटीकेँ पानि पिआ पान्हि हाथे मुँह पोछि देलखिन। मांगैन अपने हाथे मुँह धोय उठि कऽ ठाढ़ भेल। थारी उठा अचौनामे धोय कोनमे रखलनि। पड़ल-पड़ल सुनिया सभ किछु देखैत छेलीह। पतिक मनमे मन सटि थारी धोइत अपन रूप देखलनि। जहिना एनामे अपन चेहरा लोक देखैत अछि तहिना सुनिया देखए लगलीह। दुनू भाए-बहिनकेँ पाँजर लगा सुतबैत सुनिया पतिकेँ कहलनि- ''अहूँक देह-हाथ बथैत हएत, पड़ि रहू।''

बात बदलैत चेतानन्द बजलाह- ''मन केहेन बूझि पड़ैए।''

''अखन की कहब।''

बिनु बात दोहरौनहि चेतानन्द जाजिम बिछा निच्चेमे पड़ि रहलाह। बिलटीक देहपर हाथ सहलबैत सुनिया कहलखिन- ''डॉक्टरे साहेब जकाँ बुच्चीकेँ

डाँक्टरी पढ़ाएब। जखन बुच्ची डॉक्टरी पढ़ि लेत तखन अहिना कुरसी-टेबुल लगा कऽ काज करत। कि ने बुच्ची?"

"नै। खजुरिया दीदी जहाइन हमरो बिआह कऽ दे?" -तीन बर्खक बिलटी बाजलि।

बेटीक मुँहे बिआहक बात सुनि सुनिया हरा गेलि। मनमे उठलनि घुरि कऽ घर जाएब तहन ने। बेमारी छुटत की नै, से के कहलक। दिन-राति तँ निच्चे मुँहे भेल जाइ छी। खेनाइयो-पीनाइ छुटले जाइए। विचार बदललनि- जँ मरि जाएब तँ बेटीक बिआह केना हएत। की बिलटी बिलैटिये जाएत? जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरो बिआह हएब भारी भऽ गेल छै। ई तँ सहजहि मइटुग्गर भऽ जाएत। मइटुग्गर बेटीकेँ कियो अपना घर लैयो जाइले तैयार हएत आकि नै। हे भगवान, एहेन युगमे बेटी किअए देलह? जँ देबे केलह तँ ऐ बेटीक कोन दोख भेल जे मइटुग्गर भऽ दुनियाँक नजरिमे खसल रहत। यएह ने भानस-भात करैक लूरि नै हेतै। की मनुक्ख माटि सदृश छी जे एक बेर आगिमे पकलापर अपन स्वरूप बदलि दैत अछि? मनुख तँ ओहन होइत अछि जे अनाड़ीसँ जीबनी, भोगीसँ जोगी आ डाकूसँ साधु बनि जाइत अछि। की विधाता हमरा कपारमे यएह लिखलनि जे संगीक संग छोड़ि असकरे बोनमे बौआइ लए छोड़ि दियनि। जँ सएह लिखैक छलनि तँ एक उमरिया देखि किअए जोड़ा लगौलनि? तइ बीच आँतमे दर्द उठलनि। चिचिआ कऽ बजलीह- "हौ बाप, आब नै बँचब।"

खलिये सिमटीपर जाजिम बिछा, कपड़ाक मोटरी मुड़ीतर रखि उतान करे बत्र दुनू आँखिकेँ वामा बाहिसँ झाँपि चेतानन्द पड़ि रहल। मनमे उठलनि। अखन सीमाक सिपाही जकाँ ड्यूटीमे छी। ड्यूटीमे कहाँ होइ छै? आरामो तँ कत्ते रंगक होइए। ओहनो अराम होइए जे मित्रसँ प्रेम करैए आ एहनो होइए जे अपन दुख निवारणक बाट जोहैए। फेर भेलनि भरिसक पत्नी नै बँचतीह। दुनू गोटेक बीचक अंतिम समए गुजरि रहल अछि। अंतिम समैपर नजरि पड़िते भेलनि जे लड़का-लड़कीक माने वर-कन्याक बिआह स्थापित करैमे उमेरक मानदंड किएक बनाओल जाइत? जँ सन्तानेक लेल होइत तँ उम्रक लगीचक कोन प्रयोजन? पनरह बर्खसँ पचास बर्खक सुविधा अछि। उम्रक बराबरी तँ ऐ लेल मानल गेल अछि कि ने जे दीर्घ जिनगी संग-संग चलैत रहए। तहन एना किअए भेल? विद्यार्थी जीवनमे सपना देखैत छलौं जे मातृभूमिक सेवा करब। तँए नोकरी नै केलौं। नोकरी कतऽ करितौं? जइठाम जन्म भेल अछि ओइठाम ने शिक्षण संस्थान अछि, ने कल-कारखाना, ने सरकारी कार्यालय आ ने अस्पताल। की ऐठाम ऐ सबहक

जरूरति नै छै? की हमसभ शपथ खेने छी जे अपना माटि-पानि परक कारखानाक वस्तुक उपयोग नै करब, आकि शासनमे सहयोग नै करब, आकि शिक्षा-स्वास्थक लाभ नै लेब। मुदा अखन धरि ऐसँ आगू बुझैक ने अवसर भेटल आ ने करैक जमीन। देश-सेवा की? यएह ने जे अपनो देशकेँ एक्कैसम शताब्दीक दुनियाँक कतारमे ठाढ़ करी। मुदा कतार तँ एकसँ लऽ कऽ सए तकक होइत अछि। तइमे कत्ते? एक दिस दुनियाँक गनल-चुनल धनवान तँ दोसर दिस सड़कपर भीख मंगनिहारक संख्या ओते अछि जते कताक देशक जनसंख्या नै छै। तइ काल पत्नी मन पड़लनि। जहिना अन्हार रातिमे माएक पाँजर लग सुतल बच्चाकेँ निन्न टूटिते उठि कऽ माएक सुतल मुँह देखि पुन: गर लगा कऽ सुइत रहैत तहिना चेतानन्द पत्नीक मूनल आँखि देखि पुन: ओछाइनपर आबि पड़ि रहलाह।

ओछाइनपर पड़िते चेतानन्दकेँ मन पड़लनि कओलेजक ओ दिन जइ दिन सरस्वती पूजा स्थलपर सुनियासँ पहिल भेँट भेलनि। मुदा लगले मनमे आबि गेलनि कओलेजक डिग्री आ पी.एच.डीक रजिष्ट्रेशन। पाँच बर्ख भऽ गेल मुदा एक्को अक्षर अखन धरि लिखि नै पेलौं। लिखियो केना पबितौं? अखन धरि तँ यएह ने बूझि पेलौं जे देश सेवा की? मुदा आब तँ सहजहि पत्नीक भार कपारपर पड़ने बच्चाक तँ माइयो हुअए पड़त। दोबर भार पड़त। बच्चाकेँ पढ़ाएब आकि अपने पढ़ब। कओलेज छोड़लाक बादसँ अखन धरि 'गृहसूत्रो' धुरझाड़ पढ़ल आ ने सीखल भेल। 'धर्मसूत्र' तँ पछुआएले अछि। खाली मंगलाचरण रटि नेने नै ने हएत। विधातोक अजीब खेल छन्हि। जहिना गणेशजी मुसो आ बाघोकेँ नाङरि पकड़ि लड़बै छथि तहिना विधातो रंग-बिरंगक जगहपर रंग-बिरंगक बानरक नाच, मदारी जकाँ ठाढ़ केने छथि। एक दिस हार-पाँजर टुटल मनुखकेँ अपन देहक सोनित दए कियो देशसेवा करैत तँ दोसर दिस एक लबनी ताड़ी पिआ देशभक्त बनैत। कियो श्मशानमे अपन बेटाक लहास जरबैत जिनगी देखैत तँ दोसर सजल-धजल विशाल भवनमे बैस मस्तीक जिनगीमे पलड़ैत अछि। तइ बीच सुनियाक बाजब- "हौ बाप, आब नै बँचव।" कानमे पड़लनि। कानमे पड़िते हृदए चहकि गेलनि। मनकेँ थीर करैत आगूक बात सुनैक लेल कान पाथि देलनि। मुदा आगूक बात नै सुनि मनमे उठलनि, जहिना मिझेवा काल डिबिया भुक दऽ जोरसँ बड़ि जाइत अछि, तहिना तँ ने भऽ गेल। मन गुन-धुनमे पड़ि गेलनि। एक मन कहनि जे जँ प्राण छुटि गेल होन्हि तखन की करब? दोसर मन कहनि जे प्राण नै छुटल हेतनि तखन की करब? ऐठाम तँ चारिये गोरे छी। तहूमे दूटा बच्चे अछि। जँ एकोरत्ती आँखिसँ नोर बहत

तँ बच्चा सभ अनेरे चिचिया लगत। गाममे तँ नै छी तँए जे समाजक लोक आबि कऽ मदति करत। मुदा ई जानि लेब तँ जरूरी अछि कि ने जे प्राण छुटि गेलनि आकि बँचल छन्हि। ओछाइनपर सँ चेतानन्द पुछलखिन- ''एना किअए बजलौं?''
पतिक बात सुनि सुनिया उत्तर देलकनि- ''दर्दक धक्का लगि गेल छलए मुदा अखन असथिर भऽ गेल।''

साँझक आठ बजे डॉक्टर साहेब क्लिनिकसँ आबि सोझे वाथरूम विदा भेलाह। साँझू पहर टहलए नै जाइत। स्पष्ट विचार रहनि जे टहलब तँ हुनकर छियनि जे अपना पएरे चलैत छथि। गाड़ी-सवारीमे बैस टहलब मन बहलाएब छी। जा धरि वाथ रूमसँ निकललाह ताधरि पत्नी टेबुल सजा, चौकीदार जकाँ केवाड़क परदा लग ठाढ़ छेलीह। कुरसीपर बैस डॉक्टर साहेब रस-पानि कए आराम कुरसीपर बैस गेलाह। मन फुहराम हुअए लगलनि। टेबुल सम्हारि पत्नी चलि गेलखिन। भरि दिनक हिसाब जोड़ए लगलाह। नापल रोगी, नापल फीस, तँए जोड़ैमे देरी नै लगलनि। आमदनीक हिसाब जोड़ि काजपर नजरि दौड़ौलनि। काजक ऊपर होइत मन छिछलैत सुनियापर आबि अँटकि गेलनि। मुदा लगले काज हरा गेलनि। मन उड़ि कऽ अपनेपर चलि एलनि। अपनापर अबिते खुशीसँ मन ठहाका मारलकनि। अँइ, कहू जे आठ घंटा ड्यूटीक निअम अछि, तइठाम बारह घंटा खटै छी तहन किअए लोक बजैए जे फल्लाँ डॉक्टर दरमहे उठबैटा लए अस्पताल जाइ छथि। यएह ने जे खानगी रोगी देखै छी। जा धरि अस्पतालक समुचित बेवस्था नै हएत ताधरि डॉक्टरे की करताह? जइठाम अखन धरि रोगोक गिनती (पहचान) सरिया कऽ नै भेल अछि तइठाम रोगीक हिसाब जोड़ब धड़-फड़मे बाजब हएत। फेर मन घुरि सुनियापर पहुँचि गेलनि। आइ धरि एक्कोटा रोगी इलाजक बीच मरल नै मुदा.....। आखिर कमी की अछि? जे दोख लागत? मन नचलनि। गंजिये-लूंगी पहिरने चेतानन्दक कोठरी विदा भेला।

सोगमे डुबल चेतानन्दकेँ पुछलखिन- ''कहाली जगले छथि आकि सुतल?''
डॉक्टर साहेबक बात सुनि देह-हाथ समटि सुनिया बाजलि- ''जगले छी डॉक्टर साहेब।''
सुनियेक चौकीपर बैस डॉक्टर साहेब पुछलखिन- ''कत्ते दिनसँ दुखित छी?''

“ठीक-ठीक तँ नै कहि सकै छी मुदा पान-छअ बर्ख से पेटमे गैस बनए लगल। गामेमे बहुतो गोटेकेँ ई रोग छन्हि। वएह सभ दबाइ बता देलनि। एकटा-दूटा गोटी सभ दिन खाइ छी, नीके रहै छी।”
नजरि दौगबैत डॉक्टर पुछलखिन- “उपासो करै छी?”
“केना नै करब! अहीपर तँ आंग-समांग, बाड़ी-फुलवाड़ी लहराइए।”
“महीनामे कतेक दिन सहै छी?”
“सात दिनमे रवि, मंगलवारी, शुक्रवारी तँ करिते छी। एकर बादो पावनिक उपास सेहो करिते छी!”
“देहक काट-खोंट करए पड़त तखन ऑपरेशन हएत।”
“दोसर उपाए नै छै। अपरेशनक कोनो ठेकान नै छै, बाल-बच्चा बिलटि जाएत।”
“हँ, उपाए छै। दबाइ लिखि दइ छी। साँझ-परात खाइत रहलासँ नीके रहब।”
“बड़ बढ़ियाँ।”

चौकीपर सँ डॉक्टर उठि चेतानन्दकेँ बाँहि पकड़ि कोठरीसँ निकलि ओसारपर कहलखिन- “आँतमे एहेन गोला बनि गेल छन्हि जे बिना कटने नै हेतनि। तहूमे रोग बढ़ैत-बढ़ैत एते जुआ गेलनि जे देहक कोनो लज्जतिए नै रहलनि। अंग-अंग बैस गेलनि। तीनसँ चारि दिनक जिनगी बँचल छन्हि। नीक हएत अहाँ भोरे गाम चलि जाउ। ऐठाम पहपैटमे पड़ि जाएब। बाजारमे सभ सुविधा रहितो कियो ककरो बेरपर ठाढ़ नै होइ छै।” कहि डॉक्टर साहेब घरमुँहा भेलाह। कोठरी आबि चेतानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- “डॉक्टर साहेब छुट्टी दऽ देलनि।”
“बड़ बढ़ियाँ। भोरे विदा भऽ जाएब।”

चेतानन्दक नजरि सुनियाक परोछ भेलापर गेलनि। मनमे उठलनि माएक मृत्यू बेटा-बेटीकेँ कलंकक मोटरी कपारपर देने जाइ छै। जँ से नै तँ मइटुग्गरकेँ ओछ-आँखिये किअए देखल जाइए। पत्नीक मृत्यूपरान्त जँ परिवार ठाढ़ करैले दोसर बिआह करब तँ आरो पहपटि बढ़त। कियो एहेन कहनिहार नै हएत जे भूखल बच्चाकेँ खाइले कहि बुझत जे बच्चा भूखल अछि आकि खेने। मुदा ई जरूर कहतै जे सतमाए खाइले दइ छथुन की नै। रंग-बिरंगक अबलट जोड़ब शुरू कए देत।

:::::::::

१४ धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस साल बाद धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेलाह जइसँ निकलब कठिन भए गेलनि। सुसम्पन्न परिवारमे जन्म भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव धर्मनाथकेँ नै भेल छलनि। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघसँ पैघ काज उपस्थित भेलासँ निपटबैत। लोप होइत जमीन्दारी बेवस्था, ढेरो सम्पति गाम-सँ-बाहर धरि रहनि। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलनि। मंदिर, स्कूल, खेत, पोखरि सभ बँटा गेलनि। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठाउँस तरे भेटलनि। रघुनाथकेँ चारि कन्या (बेटी) तीन पुत्र। दू कन्याक बिआह साझियेमे भेल छलनि। बाँकी दुनू कन्याक बिआहमे आठ बीघा खेत बिकलनि। घरक बरतन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लागि गेलनि। तैयो पहिलुका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुके भेलनि।

बच्चेसँ घर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलनि। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखन धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ परिवारक भविष्य, मात्र अनुमानसँ करैत। अखन धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बीतल। जहिना गंगामे सूर्जक प्रकाश पड़लासँ चमकैत अछि तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पष्ट झलकैत छल।

आरंभमे कम बेतन, छोट परिवार धर्मनाथकेँ रहनि। आस्ते-आस्ते धर्मनाथक परिवारो बढ़ैत आ बेतनो। पाछू-पाछू महगीयो पछुअबैत। बासी बचए ने कुत्ता खाए। मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन। परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने जे बेतनक भीतरे चलैत। मुदा संगी-साथीक बीच पैंच-पालट चलैत। कर्ज लेब आ सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझैत। हुनक सदिखन प्रयास रहनि जे परिवार मेहनती बनए। पत्नी समैक उपयोग निअमबद्ध भऽ करनि। खेबा-पीबाक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-बस्तरपर विशेष धियान राखथि। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सुइया-डोराक छोट-छीन काज अपने कऽ लैत छलि। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-

कलापसँ प्रभावित छल।

सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गामेमे सपरिवार बितबैत छलाह। छुट्टियेे मासक बेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबैत छलाह। रघुनाथ मने-मन सोचैत छलाह जे गामक अज-गज देखि धर्मनाथकेँ होइत हेतनि जे कोनो वस्तुक कमी नै मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन अछि। जत्ते खेत बिकाइत छलनि ओत्ते उपजो कमिते जाइत छलनि।

नम्हर-नम्हर घर। जकर मरम्मति आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइत छलनि। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अंडीक गाछ सौंसे घरमे जन्मल। जँ टुटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेचि लितथि तैयो कत्ते काज ससरि जैतनि मुदा जँ घरक पजेबा बिकाएत तँ बाँकिये की रहत। घरक आगू झील जकाँ पोखरि। पोखरिक चारू मोहारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनाओल। पुरान भेने चारू घाट टूटि गेल छल, जइसँ नहाइओ जोकर नै रहल छल। पजेबा गुड़कि-गुड़कि निच्चा पानिमे छिड़िआ गेल। पएरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइये छोड़ि देलक। सौंसे पोखरि समाढ़ आ कुम्ही तेना बोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल भऽ गेल। बीघा भरिक फुलवारी, जइमे सइओ रंगक फूल लगाओल छल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करैत छल से अखन गाए-महींसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मनमे विचारि आएल रहथि जे जेठ बेटीक बिआह करब। बेटी आशा बी.ए. आनर्सक परीक्षा देने छलि। कन्यादान माए-बापक लेल ओहने होइत जेहने बेटाक लेल बृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बर्ख आशा टपि गेल छलि तँए बिआह करब आवश्यक छलै। मने-मन धर्मनाथ सोचैत छलाह जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जइ संबंधमे किछु ने बुझैत छी। केना हएत? की करब? कनिका कहबनि? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल छल। हमहूँ तँ समाजमे ककरो कोनो उपकार नै केलिऐक तँए कियो हमरे किएक करत? गुनधुन करैत कोठरीसँ निकलि, असकरे टहलबो करैत आ सोचबो करैत। गामक बेरोजगार युवक सभ, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देखि कियो साइकिलपर चढ़ि तँ कियो मोटर साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिरि केश फहराबैत, वामा हाथे रुमाल साइकिलक हेण्डिलपर पकड़ि, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक

आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटैत छल। ओना धर्मनाथ मूँड़ी निच्चाँ केने चलैत मुदा अफसर आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथकेँ कोनो कड़ुआहट नै अबैत। जे प्रतिष्ठाकेँ मिसिओ डगमगबैत नै। मने-मन यएह होइन जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु थिक जे ने ककरो देने होइत छै आ ने ककरो लेने जाइते छै। ओ अपने केने होइ छै आ अपने केने जाइ छै।

गाम एला धर्मनाथकेँ सात दिन भऽ गेलनि। मुदा अखन अखन धरि बिआहक कोनो चरचो नै भेल। आठम दिन धर्मनाथ आशाक बिआहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगलथि जे अखन धरि जेहन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एत्ते पढ़ल-लिखल वर भेटव मोसकिल अछि। जँ भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नै रहत। धर्मनाथ कत्ते खर्च करताह से कहबे ने केलनि। पूछबनि केना? हमरो तँ पोतिये छी। बोल भरोस दइक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकेँ जानकारी दैत भजियबैले कहलखिन। जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचार बदलि देलकनि। जखन पहिलुका सुख-भोग मन पड़ैत छलनि तखन आँखिसँ नोर टघड़ए लगैत छलनि। मुदा पछतेनहि की होएतनि। चिड़िया तँ चुकि गेल। जतबो दिन मृत्यूक शेष छन्हि ओहो कत्ते निच्चाँ ढड़कतैन सेहो ठीक नै। सिर्फ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़काक भाँज लगलनि मुदा कुल-मूल दब।

जमा केलहा आ बिआहक लेल कर्ज मिला धर्मनाथ एक लाख रुपैया लऽ आएल छलाह। परिवारक खर्च पुरौलापर जतेक बचैत, ओ जँ जिनगीयो भरि जमा कएल जाए तैयो, आइक युगमे एकटा बेटीक बिआह पार लागब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बुझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहनि। इमान आ चरित्रकेँ बँचबैत धर्मनाथ ऊपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसाए आसानीसँ आँफिसक काज निपटा लैत छलाह। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फुड़बे ने करनि। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैत जे केयो मदति करैबला छथि आकि नै! एकाएक धर्मनाथकेँ पच्चीस-तीस साल पहिलुका बात मन पड़लनि। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ सामाजिक लोक सेहो छथि, गुरुओ छथि, दू साल पढ़ौनौ छथि, हुनका जा कऽ

कहियनि। हमरासँ तँ कहिओ हुनका मुँहा-ठुट्ठी नै भेलनि मुदा पिताजीसँ बक्क-झक्क कहिओ काल जरूर होइते रहैत छन्हि।

सायंकाल धर्मनाथ पत्नी राधाकेँ कहलखिन- ''काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जँ काकाजी -प्रो. रामरतन- भेँट भऽ जेताह तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।''
एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहलीह। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकैत छलनि, जे देखि राधाक नजरि चन्द्रमुखी आशापर गेलनि, जे अखन धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छलि। अनायास कमी बूझि पड़ए लगलनि। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैत अछि आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइत अछि, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बूझि पड़ए लगलनि। मने-मन सोचए लगलीह। यएह थिक आजुक समाज। जे बेटी समाजक बुझल जाइत अछि वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दैत। गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहलीह। राधाक खसल मन देखि आशा पुछलक- ''माए, मन किएक एत्ते खसल छोउ ऊ?''
अपनाकेँ छिपबैत बाजलि- ''नै- नै- कहाँ- क.....।''
राधा अपन बेथाकेँ छिपबए लगली मुदा मलिन मुँह आ बोलिक ध्वनि बेथाकेँ अढ़े-अढ़ निकालैत छल।

प्रोफेसर रामरतनक दरबाजा सुन्न देखि धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगलाह जे भरिसक नै छथि। मुदा बिना भाँज लगौने घमबो उचित नै। असगरे धर्मनाथ प्रो. रामरतनक दुआरपर ठाढ़ भेल रहला। थोड़े कालक बाद तीन-चारि गोटेकेँ अबैत देख, बोली अकानैत धर्मनाथक हृदैमे आशा जगलनि। एक गोटेक हाथमे दूधक लोटा रहए। प्रो. रामरतनकेँ देखिते जेना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सूर्ज हवाक सिहकीसँ छटि जाइत छैक आ भुक दऽ सूर्ज देखि पड़ैत छैक, तहिना धर्मनाथकेँ भेलनि। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकेँ गोड़ लगलनि। धर्मनाथकेँ आसीरवाद दैत बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसबैत अपने हाथ-पएर धोअए कलपर गेलाह। पत्नी चित्रलेखा लालटेन लेसि आंगनसँ नेने एलीह। चित्रलेखाकेँ देखि धर्मनाथ गोड़ लगलनि। असिरवाद दैत चित्रलेखा बाजलीह- ''भगवान, एक सए एक्कैस करथि। बौआ, अखन कतऽ छी?''
''चाची, छी तँ बड़ दूर। जनिते हेबै केरल।''
''परिवार आनन्दसँ रहै छथि की ने?''
''हँ, अपने लोकनिक दयासँ सभ आनन्द अछि''

“बच्चा?”
“तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।”
“आशा बिआह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ?”
“अपनो सएह विचार अछि। तखन तँ.......।”
“भगवान थोड़े अधलाह करताह। जे मनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकेँ देथुन।”
चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलनि, जे नोरक बुन्न बनि निकलए चाहैत छल। मुदा धर्मनाथ हाथसँ आँखि पोछि नोर सुखओलनि। मुदा बोली फुटिते धर्मनाथक हृदैक बेथा निकलए लगलनि। एकाएक धर्मनाथक मनमे एलनि जे एत्ते पैघ पदपर रहनिहारकेँ जँ आँखिसँ नोर खसैत छैक जे देशक सभसँ पैघ बुझल जाइत अछि। तँ खुशीसँ के रहैत हएत। ताबे प्रो. रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पएर धोइ खराम पटपटबैत दरबज्जापर एलाह।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा एलीह। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगलाह। प्रो. रामरतन चाहक चुस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पुछलखिन। कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा बिआहक चर्चा कएल।
प्रो. रामरतन- “ककर बाकी रहलैए जे अहाँक नै हएत।”
“चाचाजी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज थिक तँए अगम-अथाह बूझि पड़ैए।”
मुड़ी डोलबैत रामरतन कहलखिन- “हँ, ठीके कहलौं। अहाँ हमर समाजे नै छात्रो छी तँए अहाँक बेटी की हमर बेटी नै?”
प्रो. रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक हृदैमे आशाक अंकुर उदित होअए लगलनि। जहिना धारामे भसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइत छैक तहिना धर्मनाथोकेँ भेलनि। पच्चीस-तीस बर्ख पहिलुका रूप प्रो. रामरतनक धर्मनाथक हृदैमे ओहिना नाचए लगलनि। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल छला, जइठाम सँ आगूक रस्ता की हएत से बुझबे नै करैत छलाह। अपन बेथा व्यक्त करैत धर्मनाथ कहलखिन- “दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी बिआहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीति गेल।”
“सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत, आ समैपर चलिओ जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखन धरि जमीनदार खानदानमे रहलौं, जेकर

पतन भए गेल। सिर्फ ओकर ढाँचा ठाढ़ छै। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़ब बुधियारी होएत।''
''अपनेक ऊपर बिआहक भार दए रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।''
''दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जेकरे चलैत अहाँक पिताजीक संग मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहिओ कोनो अधलाह केलौं, शायद मन नै अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!'' जोशमे बजैत प्रो. रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह।

अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रो. रामरतन ऐठाम एलीह। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहथि आकि प्रो. रामरतनकेँ जोरसँ बजैत सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगलीह। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू एलीह। दरबज्जा लग, चारू गोटेकेँ देखि प्रो. रामरतन पुछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते प्रो. रामरतन उठि कऽ चारू गोटेकेँ आंगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन- ''जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबनि?''
चारू गोटेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलनि।

प्रो. रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन- ''जहिना आशा बिआहक चिन्तासँ हृदए थरथराइत छल तहिना चाचाजीक आश्वासनसँ मन हल्लुक भए गेल।''
ओ सभ भार लऽ लेलनि। हँसैत राधा कहलखिन- ''निर्बलकेँ बल राम' होइत छै। नीकक फल कखनो अधलाह नै होइत छै। थोड़े काल लए सामाजिक परिवेशमे भइओ जाइत छै मुदा ओकर परवाह मनुखकेँ नै करक चाही।''

प्रो. रामरतन दीनानाथसँ बिआहक संबंधमे सभ बात केलनि। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नै मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घराड़िओ नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भए गामेमे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मैकेनिक। आशा आ श्यामक बीच बिना दहेजक बिआह पक्का भऽ गेल।

बिआहसँ पहिने समाचार पसरि गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलनि जे एकाएक अचेत भऽ गेलाह। होश होइते सोचए लगलथि। एक दिस प्रो. रामरतनक अगुआइमे बिआह होएत जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे धर्मनाथ फेकि रहल अछि। ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन- ''जइ आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं, सभ पानिमे चल गेल।''

पत्नी कहलकनि- ''किएक एत्ते कडुआएल छी?''

''बोली कडुआएल अछि। होइत अछि जे लोढ़ीसँ कपार फोड़ि मरि जाइ।''

''एना बताह जकाँ किअए बजै छी?''

''हम बताह नै छी, करेजमे चोट लगल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बूझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नै रहब। चलू, कल्हिये दुनू परानी काशी। ओत्तै रहब। बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक। तखन जीबिये कऽ।''

बड़ीटा दुनिया छै, नै हरिअर गाछ भेटत तँ सूखलो गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।''

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलनि, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेलीह। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलै लगलनि। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत रहला। बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगलाह। रघुनाथकेँ कानब सुनि चारू कातसँ लोक दौगल आएल। डॉक्टर बजोओल गेल। जाँच कए डॉक्टर कहलखिन- ''दिमागक नस फाटि गेलनि। अखने लहेरियासराए लऽ जैअनु।''

गाममे हल्ला भए गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेलाह। जनीजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लागि गेलनि। नवकी कन्या सभ बाजए लगलीह- ''बाबाकेँ चुड़ीन लागि गेलनि..।''

धिया-पूत्ता सभ थपड़ी बजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत- ''बाबा मुइलाह पूड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।''

:::::::::

१५ सरोजिनी

मझोलका किसान भेलोपर जमीन्दारीक ठाठ-बाठ आ रुआब अखनो हरदेवकेँ छन्हिये। वएह हथिसार सन-सन घर, बीघा भरिक फुलवारी, घरक आगूमे झील सन पोखरि जेकरा चारू मोहारमे मेड़्हाओल घाट। कलम-गाछीक कमी नै। सभ रंगक आम फुटा-फुटा लगौने। सरही फुटे, कलमी फुटे। एक भागमे सभ रंगक इलची पाँच कट्ठामे। आसामक बोन जकाँ बँसबारि जइमे हजारो बाँस सुक्खल। शीशो गाछक डारि सभ मोटा-मोटा गाछे जकाँ भऽ गेल। लताम, बेल, धात्री, सपाटू, शरीफा, आँता, कटहर, बरहर इत्यादिक बगीचा सेहो छन्हिये। सालो भरि कोनो ने कोनो फल गाछमे लुबधले रहैत छन्हि। अनेको रंगक देशी-विदेशी केराक करजान। दोसराक खेतमे पएर नै देब, एहेन रुआब हरदेवक बाबाक अमलदारीमे रहनि। बनसी खेलै दुआरे पोखरिक बीचो-बीचो पुल जकाँ सेहो बनौने।

जमीन्दारी टुटलोपर बाहरसँ तँ नै बूझि पड़ैत मुदा भीतरे-भीतर फोक भऽ गेल छल। महाजनी चल गेलनि। बखारी टूटि गेलनि, नोकर-चाकर नै रहलनि, मुदा मनमे अखनो ओ टेढ़ी छन्हिये। पाँच भाँइक भैयारीमे सभ किछु बँटा गेल। अपन समांग सभ तँ अधिक पढ़ल-लिखल नै मुदा पढ़ल-लिखल नोकर रखि सभ कारोबार चलबैत रहथि। एते दिन झाँपि-तोपि निमहलनि। मुदा आब ने दोसर रुआब मानैले तैयार आ ने अपना दम जे दोसरपर रुआब करब।

बच्चेसँ हरदेव बाबाक संग कोट-कचहरी अबैत-जाइत रहल। तइ क्रममे कानून-कायदा, लड़ाइ-झगड़ाक भाँज बुझने छल। घरोपर हरदेव नियमित क्रिया-कलाप बनौने छल। भोरे उठि दतमनि कऽ कुड़ा-आचमनि कऽ भरि छाँक पानि पीब, पान खा लोटा लऽ मैदान दिस जाइत छल। घंटो भरि सिनुरिया आम-गाछक निच्चाँमे लोटा रखि सौंसे गाछी टहलि-बुलि देखैत छल। पाकल फल तोड़ि-तोड़ि गमछामे बान्हि घुमै काल घरपर नेने अबैत छल। सभ दिन टटका फल खेने दुनू परानीक शरीर बुलन्द रहै। चारिटा गाए पोसने छल। गाए तँ देहातिये छलै मुदा नम्हर कदक। एकबरना कारी। डेढ़ियापर बाहैत-बिआइत तँए सभ दिन दूधक लाट रहबे करै। सभ दिन बेरू पहर असेरी गिलाससँ दू गिलास दूधमे भाँग घोड़ि पीब हरदेव बनसी खेलए जाइत छल। बीच पोखरिमे चौखुट बनसी खेलैले जे बनौने

रहथि ओइपर जा कुरता निकालि रखैत छल। पानक सभ सामान सेहो नेने जाइत छल। एयर कंडीशन जकाँ जल हवा तहूमे झुलैत झिझड़ीदार परदा जकाँ भाँगक निशां हरदेवक हृदैकेँ झुलबैत रहै छल। हरिअर-हरिअर कुमही हवाक सिहकीक संग जलक सवारीपर सपरिवार सवार भऽ रसे-रसे पोखरिमे टहलैत छल। बहुत पहिने हरदेवक पिता पोखरिभिंडासँ ललका कमल आ बेरमा बड़की पोखरिसँ उजड़ा कमलक गाछ आनि लगौने रहथि। दुनू रंगक कमलक शोभा देखैमे अद्भुत लगैत छल। आनन्दक समुद्रमे असकरे हरदेव सभ दिन मगन भऽ झुमैत रहै छल। छोटकी माछ सभ बनसी बोर निचेनसँ खा लैत। लुक-झुक गोसाँइ होइते हरदेव बनसी समेटि रखि घुरि कऽ घर अबैत छल। घरपर आबि चाह पीब टहलैले निकलि जाइत छल। बच्चेसँ घुरन हरदेव ऐठाम नोकरी करैत छल। साते-आठ सालक जखन रहै, बाप मरि गेलै। बपटुग्गर घुरन माएक संग नम्हर जिनगी जीबैले दुखक पहाड़सँ संघर्ष करए लगल। जखन घुरन छँटगर भेल, बिआह-दुरागमन भेलै। तखन पाँच रुपैया महीनक नोकरी छोड़ि बोन्यिाती काज हरदेव ऐठाम करए लगल। घुरन आ हरदेव एकतुरिया। हरदेव सुखक बीच आ घुरन दुखक बीच जिनगी बितबैत छल। एकतुरिया रहने दुनूमे घनिष्ठ प्रेम। एकठाम रहने घुरनपर हरदेवक असीम विश्वास सेहो रहनि। जँ कहियो हरदेव कतौ बाहर जाइ छलाह तँ घुरनेपर खेती-बाड़ीक भार दऽ जाइत छलाह। घुरनक घरवाली सोमनी हरदेवक अंगनाक काज, बरतन-बासन धोनाइसँ लऽ कए पानि भरनाइ चूल्हि-चिनमार निपनाइ सभ करैत छल, जइसँ खेनाइ-पीनाइ चलि जाइत छलैक। बेटा रमेश माएक संग हरदेवक आंगनमे खाइत-खेलाइत छलै। सरोजिनी आ रमेश कहियो अटकन-मटकन खेलए तँ कहियो चोरा-नुक्की।

गामेमे स्कूल रहने रमेशक नाओं घुरन लिखा देलक। सरोजिनी सेहो स्कूल जाए लगल। पढ़ैमे रमेश चन्सगर। हरदेवक परिवारसँ लाट रहने रमेशक गरीबी छिपल। रमेश दू बर्ख सरोजिनीसँ जेठ। बच्चेसँ रमेश रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। केयो रमेशकेँ बाल-ग्रह कहैत छलै तँ कियो पछुआ लागब कहैत छलै। घुरन आ सोमनी कत्ते गहवर रमेशकेँ लऽ लऽ गेल मुदा रोग नै छुटलै। दिनानुदिन रोग बढ़िते गेलै। अंतमे निराश भऽ घुरन सोने वैदसँ रमेशक इलाज करौलक। साते दिनमे बेमारी छुटि गेलै। मुदा रमेशक शरीर खिदखिदाहे रहल।

परसूए माघक पूर्णिमा। गंगा नहाइले गामक मरद-स्त्रीगण उमड़ल। सुशीला सेहो पति हरदेवकँ चलैले कहलकनि। दुनू परानी हरदेव गंगा-नहाइले रौतुके गाड़ीसँ सिमरिया विदा भेला। हरदेव अंगनाक भार सोमनीकँ आ माल-जाल भार घुरनकँ दऽ गेलाह। सिर्फ सरोजनियेँटा रहल। सोमनीकँ सरोजिनी चाची कहैत।

चारि साल पहिने गामक स्कूलसँ निकलि सरोजिनी आ रमेश हाइस्कूलमे पढ़ैत छल। संगे दुनू गोटे स्कूल अबैत जाइत छल। रमेश आ सरोजिनी ओसारक चौकीपर बैस पढ़ै-लिखैक गप-सप्प करैत छेलीह। सोमनी आंगन बहारि बाढ़नि रखिते छलि आकि सरोजिनी पुछलक- "चाची, अगिला महीनामे मैट्रिकक परीक्षा हेतै। मैट्रिकक बाद रमेशकँ पढ़ेबै की नै?"
सोमनीक मनक आशापर गरीबीक चादरि झपने छलि। सोमनी ठाढ़ भऽ एकटक सरोजिनीकँ देखि बाजलि- "बुच्ची कहलौं तँ बड़ नीक बात। कोन माए-बापकँ बेटा-बेटीक पढ़ेबाक मनोरथ नै होइ छै मुदा खरचा जुमतै। गरीब लोक कोनो लोक होइए। सभ मनोरथ संगे जाइ छै।"
सोमनीक बात सुनि सरोजिनीक मुँहक हँसी बिला गेल। कने काल चुप भऽ बाजलि- "कहलौं तँ ठीके चाची। हमहीं अखन बाप-माएक ऐठाम छी, सुख करै छी। जँ हमरे गरीब घरमे बिआह हुअए तँ अखुनका सुख रहत।"
"जेकरा जे भाग्य-तकदीरमे लिखल रहै छै से होइते छै। रमेशक भागे खराप छै तँ सुख कतएसँ आओत।"
"चाची, गाममे तँ नोकरी नहिये हेतै, तब तँ बाहरे जाए पड़तै?"
"कियो चिन्हारेकँ संग लगा दिल्ली पठा देबै। कोठीमे कोनो काज भइये जेतै।"
"रमेश दिल्लीमे नोकरी करत। अहाँ दुनू परानी ऐठाम रहब। बड़-बेमारीमे केकरा के देखबै?"
"जेकरा जे दुख-की सुख लिखल रहै छै से आन थोड़े बाँटि लइ छै।"
सरोजिनीक नजरिमे आशाक किरण चमकि रहल अछि जखन कि सोमनी निराशाक पहाड़ तर दबाएल अछि। बच्चेसँ जुड़ल सिनेहकँ जेना वीणाक ध्वनिकँ हथौरीक चोट भग्न कऽ दैत छैक तहिना सरोजिनीक स्वरकँ सोमनीक आबाज ध्वस्त कऽ देलक।

पाँचतारा होटलमे डेरा। जहाजसँ देश-विदेशक एनाइ-गेनाइ। नीक नोकरीक संग नीक दरमहो। तइपर सँ चोरा-नुका कऽ दोहरी धंधो। ऐश-मौजक जिनगी जीबैत, पुष्ट गोर शरीर हृदयनारायणक। ने घरक चिन्ता ने

परिवारक बोझ। होटलक मालिक अंग्रेज, जिनका दुइ गोट कन्या। दुनूकेँ एक-एक होटल दऽ अपन भार हटौने। अपने अंग्रेज साहब दुनू बापुत लोहाक कारखाना चलबैत। होटल चलौनिहारि रोजी। जखन हृदयनारायणकेँ होटलमे अबैत रोजी देखै तँ आँखि गड़ा एकटकसँ निच्चाँ-ऊपर निहारैत रहए। कोठरीमे गेलापर अनेरे जा-जा रोजी हृदयनारायणकेँ पूछैत- "कोनो वस्तुक दिक्कत तँ नै अछि?"

बी.ए.पास रोजी। बीख बर्खसँ उपरे उमेर। सोनहुल केश, भुल्ल गोर। छरहरा शरीर, फुरतीसँ छट-छट करैत।

हृदयनारायण क्लबक सदस्य सेहो रहथि। मन-माफित मनोरंजन करैत। वसन्तक बहार छोड़ि पतझड़क अनुभूतिसँ अनभुआर भऽ गेल हृदयनारायण। देहाती जिनगीसँ गुजरल हृदयनारायण छल-प्रपंचसँ कोसो दूर छल। डयूटीसँ आबि कपड़ा बदलि स्नान-जलखइ कऽ, सोफापर लेटि अगिला जिनगीक संबंधमे सोचए लगल। बिआह करब, परिवार बनाएब। हृदयनारायणक कोठरीमे प्रवेश कऽ रोजी कुर्सीपर बैसैत बाजलि- "चिन्ताक पहाड़क तरमे किएक दबल छी?"

सुक्खल मुस्की दैत हृदयनारायण उत्तर देलक- "थाकल छी।"

रोजीक मुस्की भरल मधुर स्वर हृदयनारायणक हृदैमे चुभए लगल। प्रेमक अंकुर अंकुरित हुअए लगल। चिन्ताकेँ दबबैत हृदयनारायण मुस्कुराए लगल। रिंग कऽ रोजी नोकरकेँ कॉफी आनैक आदेश देलक। नोकर कॉफी-सिगरेट-सलाइ नेने आएल। जखने हृदयनारायण कॉफीक चुस्की लऽ कप रखलक आकि रोजी कपसँ कप भिड़ा पीबए लागलि। कप रखि रोजी दूटा सिगरेट सुनगौलक। एकटा हृदयनारायणकेँ हाथमे दऽ दोसर अपने कॉफीक संगे पीबए लगलीह। पाँच साल पहिने रोजी बी.ए. पास केने छलि। पसिनगर संगी नै भेटने अखन धरि अविवाहिते छलि। बिना हिचककेँ रोजी हृदयनारायणसँ पुछलक- "बिआह भऽ गेल अछि?"

"नै।"

"परिवारमे माता-पिता छथि।"

"अखन धरि बिआह किएक ने केलौं?"

"नोकरीसँ पहिने सोचैत रही जे जा धरि अपना पएरपर ठाढ़ नै भऽ जाएब ताधरि बिआह नै करब।"

"तीन सालसँ तँ नोकरियो करै छी?"

"वएह सोचि रहल छी।"

हृदयनारायणक हृदैक आँखि रोजीकेँ देखए लगल। धड़फड़ा कऽ उठि रोजी हँसैत चल गेलि। हृदयनारायणकेँ आरो गप्प करैक इच्छा छल जे अखन नै भऽ सकल। गामक पछुआएल जिनगीकेँ शहरक अगुआएल जिनगीमे बदलैक विचार हृदयनारायणक मनमे आएल। मुदा गंगाजल ताबे धरि गंजाजल रहैत अछि जाबे धरि गंगा नदीक बीच रहैत अछि मुदा वएह अथाह समुद्रमे मिललापर बदलि जाइत अछि। ऐ द्वन्द्वमे हृदयनारायण पड़ल-पड़ल सिरमापर माथ दऽ कछमछ करए लगल।

दस बजे रातिक घंटी घड़ीमे टनटनाएल। बाहरक गँहिकीक आएब बन्न भऽ गेल। मुख्य दरवाजामे ताला लागि गेल। रोजी सिगरेटक डिब्बा, सलाइ आ ह्विस्कीक बोतल नेने हृदयनारायणक कोठरीमे पहुँचि गेलि। दूटा गिलासमे ह्विस्कीक बोतलक मुन्ना खोलि ढारलक। एकटा गिलास हृदयनारायणक आगूमे बढ़ा दोसरमे अपने पीबए लागलि। दू-दू गिलास दुनू गोटे पीब सिगरेट पीबए लगल। सिगरेटक धुआँ रोजी दिस उड़बैत हृदयनारायण पुछलक- “हमर परिचए तँ बुझलौं अपन कहू?”

मुस्कुराइत रोजी बाजलि- “दू गोट होटल दुनू बहिनकेँ पिताजी देने छथि। अपने पिताजी आ भाय लोहाक मिल चलबैत छथि।”

“अखन धरि अहाँ बिआह किएक ने केलौं?”

“मनगर जोड़ीक अभावमे।”

“कत्ते दिन प्रतीक्षा करब?”

“बरिसो-बरिस, अखनो।”

“की मतलब?”

“जँ अहाँ हँ कहि दी तँ लगले भऽ जाएत।”

“पितासँ बिना पुछने?”

“अपन पसिनक उपरान्त हुनका कहि देबनि।”

“जाउ हम तैयार छी, हुनकासँ पूछि लिअनु।”

दोसर श्रेणीमे सरोजिनी आ रमेश मैट्रिक पास भेल। नीक विद्यार्थी रहितो रमेश कम अंक पौलक। उत्साह आ लगने एहेन जे रमेश पढ़ि सकल। सरोजिनी वय:संधिक सीमा पार करैत किशोरीक सीमामे प्रवेश करैत रहए। लज्जाक आगमन भऽ गेलै। किशोरीक विशेषता सरोजिनीकेँ अंग-प्रत्यंगसँ हूलकी देमए लगलै। अपन रिजल्टक जानकारी रमेश हरदेवकेँ देमए पहुँचल। ओना सरोजिनी पिताकेँ पहिने कहि देने छल।

हरदेव दलानक कुरसीपर ओङठि कऽ बैस सरोजिनीक बिआहक संबंधमे आँखि मूनि सोचैत रहथि। मैट्रिक पास बेटीक लेल बी.ए. पास बड़ चाही। घरो अपनासँ दब नै होअए। समए एहेन भऽ गेल जे खर्चक कोनो हिसाब नै रहत। जमीन्दारी चल गेल मुदा ठाठ-बाठ तँ वएह अछि। बेटाक रिजल्ट सुनि घुरन हँसैत आबि हरदेवकेँ पुछलकिन- ‘‘मालिक एना मन्हुआएल किएक छी?’’
आँखि खोलैत हरदेव बाजलाह- ‘‘नै-नै, मन्हुआएल कहाँ छी। सरोजिनीक संबंधमे सोचै छलौं। तोरो रमेश तँ बिआह करै जोगर भऽ गेलह।’’
‘‘मालिक बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बापक लेल करजे छी। देहक कोन ठेकान तँए जँ भऽ जाएत तँ ऐ बेर कऽ लेब।’’

दछिनबरिया घरमे पलंगपर पड़ल सरोजिनी अपन भविष्य दिस तकैत छलि। भैया कलकत्तासँ गाम नहिये औताह। माए-बाबू रसे-रसे बुढ़े होइत जेताह। दुनू गोटेकेँ बुढ़ाड़ीमे के सेवा करतनि? अछैते बेटा-बेटी दुख हेतनि। रमेश गुरु जकाँ पढ़बैत अछि। माए-बाप नोकर जकाँ सेवा करैत अछि। दुनू गोटेक -रमेश आ सरोजिनीक- बीच धन आ जातिक अन्तर अछि। राजा दशरथोकेँ स्त्री तीन जातिक छलथि। अधर्म कहाँ भेलनि। जिनगी हँसैत शान्तिसँ चलै यएह तँ सबहक इच्छा होइत छै। रमेश दिल्ली-बम्बइ जा कोठी आकि मिलमे नोकरी करत। आइ धरिक जे सिनेह रहल ओ टूटि जाएत।
हरदेवकेँ गोड़ लागि रिजल्टक जानकारी दैत रमेश आंगन गेल। सरोजिनी घरसँ निकलि आबि रमेशकेँ पुछलक- ‘‘कओलेजमे नाओं लिखाएब की नै?’’
‘‘पढ़ैक इच्छा तँ अछि मुदा......।’’
भगवतीक रूप जकाँ आँखि निआरने सरोजिनी कहलक- ‘‘रमेश, हम निश्चय कऽ लेलौं जे अहींसँ बिआह करब। तखने दुनू परिवारक कल्याण होएत।’’
सरोजिनीक बात सुनि रमेशक करेज डरसँ काँपए लगल। आँखिमे डर सन्हिया गेलै। मुदा सरोजिनी बजिते रहल- ‘‘दुनू गोटे एम.ए. तक पढ़ि, गामेमे हाइस्कूल बना शिक्षक बनब।’’
कँपैत हृदैसँ रमेश पुछलक- ‘‘पिताजी विरोध करताह, तखैन?’’
‘‘अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझैबनि। पुतोहु इसाइ भेलनि से बड़ बढ़ियाँ। अखन धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैत अछि, नाङटकेँ बस्त्र नै दऽ सकैत अछि, बेघरकेँ घर नै बना सकैत अछि, मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैत अछि,

लूटैत इज्जतकेँ बचा नै सकैत अछि, ओइ समाजकेँ विरोध करबाक कोन अधिकार छै?''

''सभ रहलाक बादो समाजमे मिलि कऽ रहब आवश्यक होइत छैक।''

''हँ होइत छैक। जे समाज अछि ओ हमरा अहाँ छोड़ि कऽ नै अछि। जे समाज हमरा विचारकेँ महत नै देत ओहो अपन विचार थोपि नै सकैत अछि। तँए समाज सोचऽ जे हमर कल्याण केना होएत।''

सरस्वतीक फोटोमे पहिराओल फूलक माला धड़सँ उताड़ि सरोजिनी रमेशक गरदनिमे पहिरा देलक।

:::::::::

१६ सुभद्रा

सुरूजक किरण अन्हारकेँ धकलैत, संघर्ष करैत, पाछू मुँहे ठेलि रहल अछि। जीव-जन्तुक गाढ़ निन्न पतराए लगल अछि। चिड़ै-चुनमुन्नी प्रभात बेलाक धुनमे मस्त। गाए-महींस घर-सँ-बाहर होइले डिरयाइत। एकाएक कमलनाथक ऐठाम कन्नारोहट शुरू भऽ गेल। गाएक डोरी पकड़ि रविया बाहर करैत छल आकि सुनलक। कानब सुनि रविया अकानए लगल आकि गाएक डोरी हाथसँ छूटि गेलै। गाए पड़ा गेल। गाए पकड़ैले रविया पाछू-पाछू दौड़बो करै आ कानबो अकानए। बेहटवाली कलपर पानि भरैले अबैत छलि आकि गाए हुरपेट देलकै। रस्ताक किनछेरिमे बनल खाधिमे गिर पड़लि। चोट तँ कम्मे लगलै मुदा सड़ल थाल-पानि सौंसे देह लागि गेलै। चुट्टीक धारी जकाँ लोक कमलनाथक ऐठाम जाय लगल।

एक तँ ब्लड-पेसरक रोगी दोसर दुखद समाचार सुनि कमलनाथ दलानक ओसारपर अचेत पड़ल। बेधड़क गिरने कमलनाथक अगिला दुनू दाँत टूटि गेलनि जइसँ खून बहए लगलनि। जिज्ञासा केनिहार हुनके मृत्यू बूझि आँखिसँ नोरो बहाबए आ नाक लग आंगुर दऽ, छातीपर हाथ दऽ, परेखबो करए। छातीक धुकधुकी आ साँस ठीके रहनि। मोतीहारी अस्पतालमे डॉक्टर चन्द्रकान्त कार्यरत रहथि, ओहो गाम आएल। चन्द्रकान्त अबिते कमलनाथकेँ देखि बीअनि हौंकैले कहि, बेटीकेँ कहलखिन- ''बौआ, कने बैग नेने आबह?'' बेटी दौगल आंगन गेली। टेबुलपर राखल बैग लऽ दौगल आएल। आला न्कािलि चन्द्रकान्त जाँच कए, एकटा सुइया लगा देलकनि। दशे मिनटक पछाति कमलनाथ होशमे एला। होशमे अबिते कमलनाथ कानि-कानि बाजए लगलाह- ''अन्याय भऽ गेल, जुलुम भऽ गेल। बापरे बाप, एहेन विपत्ति ककरो नै दिहक। हे भगवान हमरा कोन सन्ताप देखैले रखने छह।'' बजैत-बजैत फेर बेहोश भऽ गेलाह। आंगनमे कमलनाथक पत्नी सुनयना कपार पटकि-पटकि फोड़ि अचेत भऽ ओंघराएल। एक्के-दुइये आंगनसँ दरबज्जा धरि लोकक करमान लागि गेल। दछिनबरिया घरमे सुभद्रा बताहि जकाँ ओंघरनिया दैत छेलीह।

अगहनक बिआह-पंचमी दिन सुभद्राक बिआह इंजीन्यिर बरक संग भेल। दू भाँइक बीच एकटा बेटी रहने कमलनाथ हृदए खोलि बिआहमे खर्च केने छल। आगू पढ़ैले जमाइ अमेरिका जाइत रहथि। हवाइ जहाज दुर्घटना भऽ

गेल। यात्रीसँ चालक धरि कियो ने बँचल। वएह खबरि टेलीफोनसँ चारि बजे भोरमे कमलनाथकेँ एलनि। से सुनिते पिरवारमे, जेना पहाड़ टूटि ककरो देहपर गिरैत, तहिना भेल। खरचाक सोच नै मुदा सुभद्रा विधवाक जिनगी बिताओत सोच तेकर। अखन धरि समाजो जेकरा अधलाह बुझैत, अशुभ बुझैत।

जेहने सुभद्रा हँसमुख तेहने सुन्नरि। जोरसँ बजैत कियो ने सुनने। पढ़बोमे चन्सगर। घरक सभ काजक लूरि माएसँ सिखने। भोरे उठि फुलडाली धोय फूल तोड़ि नहा कऽ पूजा करैत। सालो भरि जे उपास होइत सभ करैत। पिताकेँ खुऔने बिना सुभद्रा मुँहमे पानियो ने लैत। भगवानकेँ कोसैत नवटोलवाली बाजलि- ''भगवानो नीकेकेँ अधलाह करै छथिन। पपियाहा सबहक बेरमे सुइत रहताह।''

ओसारक खूटा लागल ठाढ़ भेल सुशील सभ देखैत-सुनैत। किछु काल देखि गुम्मे अपना ऐठाम विदा भऽ गेल। अपना ऐठाम आबि कोठरीक चौकीपर पड़ि रहल। सुशीलक मनकेँ, जते घटना नै झकझोड़ैत तइसँ बेसी समाजक बेवहार। अखन धरि सुशीलक विचार पढ़ाइ समाप्त कऽ राँचिएमे नोकरी करैक छल। मुदा औझुका घटना विचारकेँ बदलि देलकनि। जहिना भूमकम भेलापर खाधि ढिमका बनि जाइत आ ढिमका खाधि तहिना। पिता समाज शास्त्रक प्रोफेसर रहथिन। दू तल्ला कोठा राँचीमे बनौने छलाह। दस कट्ठा बाड़िओ कीनने, जइमे तीमन-तरकारी उपजबैत छलाह। एकाएक शुशीलकेँ गामक आकर्षण आ संकल्प जागल, जे कुबेवस्थाकेँ मेटौने बिना समाजक नीक नै भऽ सकैत छैक। जेकरे चलैत ढेरो बहिन सभ पापिनी बनि समाजमे मुँह नुका-नुका जीबैत छथि। परीक्षा लग रहने दोसर दिन सुशील बससँ राँची विदा भऽ गेल।

सुशीलक मन्हुआएल मुँह देखि माए-पिता सन्न भऽ गेलखिन। बिना किछु बजने सुशील दुनू गोटेकें गोड़ लागि नहाइले गेल। माए थारी परोसलक। चिन्तित भऽ पिता कुर्सीपर बैसल, टेबुलपर केहुनीक बले मुँहपर हाथ दए सोचए लगलाह। नहा कऽ आबि सुशील खाए लगल आकि माए पुछलकनि-
''बौआ, बसमे बेसी झमार भेल जे मुँह सुक्खल अछि?''
''नै।''
''तखन मन्हुआएल किअए छी?''
''आब ऐठाम (राँचीमे) नै रहब। परीक्षा दऽ गाम चल जाएब।''

माए-बेटाक गप-सप्प कान पाथि पिता सुनैत। सुशील पढ़ाइसँ किएक विमुख भऽ रहल अछि। ऐ तारतम्यमे प्रोफेसर तरूणक दिमाग ओझराएल। रंग-बिरंगक सवाल-जबाब मनमे उठए लगलनि। सिर्फ तीन साल अपन नोकरी बँचल अछि। अखन धरिक कमाइक मकानेटा अछि। के रहत? अपन इच्छा छल जे सुशील एम.ए. कऽ ऐठाम नोकरी करत। सभ मिलि कऽ रहब। सभ विचार धूरा बनि हवामे उड़िया रहल अछि। सुशील नवयुवक अछि जे निर्णए कऽ लेत तइमे पाछू नै हटत। जिद्दी तँ ओ शुरूहेसँ रहल। जँ हम दुनू परानी राँचीमे रही आ सुशील गाममे, तखन ककर सेवा के करत? राँचीओक वातावरण जे पहिने छल ओ धीरे-धीरे अधलाह भेल जाइत अछि। सेवा-निवृत्ति भेलापर पेंशन भेटत। पिताजीक देल गाममे बहुत सम्पति अछि। ऐठामक सभ किछु बेचि गामेमे बना लेब। सुशीलोक बिआह नै ऐ साल तँ आगू साल करबे करब। गामेमे सभ गोटे मिलि रहब।

सुभद्राक समाचार रूपलाल बाबाक कानमे पड़ल। शरीरसँ असमर्थ बाबा। १९३४ई.क भूमकममे सेवाक इमानदारीक चलैत सभ गाँधीजी कहए लगलनि। लोकक बीच बाजब, गोलबन्द करब बाबा जहलमे सिखलनि। आजादीसँ पहिने बकास्त सिक्कमी जमीनक लड़ाइ लड़ि गरीबक बीच सेहो बँटौलनि। जमीन्दार सबहक विरोध ऐ रूपे रूपलाल बाबा केलनि जे सस्तेमे बेचि-बेचि सभ गामसँ पड़ा गेल। समाजमे ककरोसँ कोनो भेद-भाव नै। ने जाति-पाति ने छोट-पैघ ने ई धरम-ऊ धरमक पछड़ामे कहियो पड़लाह। सबहक ऐठाम एनाइ-गेनाइ, नीक-बेजाएक गप-सप्प करब शुरूहेसँ रहलनि। आजादीक उपरान्त जखन गाँधीजी गोलीक शिकार भेलाह, रूपलाल बाबाक मन टूटि गेलनि। अपन जीवन-यापनक लेल समाजसँ सिकुड़ि परिवारमे समा गेलाह। जवानीक सभ अरमान आ क्रिया-कलाप बूढ़ाढ़ीमे चूर-चूर भऽ गेलनि।

आनर्सक परीक्षा समाप्त होइते सुशील गाम चल आएल। बसक झमारसँ भरि दिन घरमे सुतले रहल। गामक जानकारी पएबाक लेल सुशील भोरे चाह पीब रूपलाल बाबा ऐठाम गेल। पाकल आम जकाँ जिनगीसँ लड़ैत रूपलाल बाबा दलानेपर बैस सुइया-डोरासँ धोती सिबैत। एकटा पतरे ठेंगा बगलमे राखल। आँखिक ज्योति सेहो कमि गेलनि। पएर छूबि सुशील गोड़ लगलकनि। अनचिन्हार बूझि बाबा पुछलखिन- ‘‘नै चिन्हलौं?’’

विस्तारसँ अपन परिचए दऽ सुशील आगूमे बैसल। पहिलुका सभ वृतान्त रूपलाल बाबा कहलखिन। जिज्ञासा भरल स्वरमे सुशील पुछलकनि-
"समाज कल्याणक संबंधमे अपनेक की विचार अछि?"
"बौआ, हमर नेता गाँधीजी छलाह। जाबे जीबैत रहलाह आ जे कहथिन जान-परान लगा लड़ैत रहलौं। कहिओ पाछू घूमि नै तकलौं। मुदा जखन हुनका गोली लागब सुनलौं मन टूटि गेल। जखन गाँधीजी सन त्याग-तपस्वी नेता गोलीसँ दागल गेलाह तखन समाजक कल्याण केना होएत। पढ़ल-लिखल नै छी। हुनकर लिखल पोथी जे कीनलौं ओहिना बक्सामे राखल अछि। जेकरा हाथमे देशक शासन गेल, अपन सुख-भोगक खातिर, अपना-अपना ढंगसँ गाँधी जीक विचारकेँ व्याख्या करए लगल। बेइमानी-शैतानी बढ़ैत गेल।"
"बड़ अनुभवक बात बाबा कहलौं।"
"जहलमे बड़का नेता सभ कहथिन जे गामक भीतरकेँ सभ किछु गौआँक थिक। ओकरा अधिकसँ अधिक उपजा गामक विकास करब। छोट-छोट कारोबारक जन्म हएत। आमदनी बढ़ैत जेतै। छोट कारोबार पैघ बनैत जाएत। जते पैघ कारोबार होइत जेतै गाम ओते खुशहाल होइत जाएत। छोट-छीन झगड़ा अपनेमे फड़ियाएत। सबहक धिया-पुता पढ़त-लिखत। दबाइ-दारूक जोगार सरकार करतै। स्वस्थ समाज, स्वस्थ देशक निर्माण करत। सभ सपना भऽ गेल। हृदए विदीर्ण भऽ गेल। जते दिनका दाना-पानी अछि, जीबै छी। सभकेँ सभ जाल बुनि फँसबए चाहैत अछि। शान्तक जगह अशान्त लए लेलक। प्रेमक जगह कटुता। समाज टूटि-टूटि कमजोर बनैत जा रहल अछि।"

जे विचार सुशीलकेँ आइ धरि नै आएल छल ओहिक लेल हृदैमे जमीन तैयार हुअए लगल। गुम-सुम्म सुशील एक टकसँ रूपलाल बाबा दिस देखैत रहल। जहियासँ सुभद्राक संबंधमे बाबा सुनलनि तहियासँ राति कऽ निन्न नै होइन। भादो मास जकाँ सदिखन आँखिसँ नोर झहैरते रहनि। सोगाएल स्वरमे सुशील पुछलकनि- "बाबा जइ विपत्तिमे सुभद्रा फँसि गेलि, ओइसँ उबरबाक कोनो रस्ता छै?"
"हँ अछि। जइ विपत्तिक चर्चा केलौं ओ बनौआ छी। ओकरा सुधारल जा सकैत। सुधारलासँ ओइ विपत्तिक अंत भऽ जेतै।"
"सुधारवाक की रस्ता हेतै?"

“समाजमे सबहक लेल ई विपत्ति नै अछि। किछु जातिक बीच अछि। ऐ लेल नौ-जबानकेँ डेग उठबए पड़त। मेहौता बड़द जकाँ हमहूँ सभ पाछू-पाछू चलब।”
उत्साहित भऽ सुशील पुछल- “बाबा ऐ लेल जे करए पड़त करब। अहाँक असिरवाद चाही।”
“बौआ, जेना लोक जीबैत अछि तेना हम मरि गेल रहितौं। अस्सीसँ उपरे वएस भऽ गेल। दधीचिक हड्डी जकाँ जे जरूरति होएत अखनो तैयार छी।”
“अखन जाइ छी। काल्हि खन फेर आएब।” कहि सुशील विदा भेल। सुतल जवानी रूपलालमे पुन: जागि गेलनि। देहमे नव शक्तिक संचार हुअए लगलनि। थरथर कँपैत शरीर, हाथमे ठेंगा नेने बाबा कमलनाथ ऐठाम विदा भेलाह।

सोनपुरवाली दादी चौपारिपर सोफ बिछा बारहोटा पोता-पोतीकेँ खेलबैत रहथि। कोरामे कतेककेँ रखितथि। सभ धिया-पुता खेलाइत। खेलबैले दादी एकटा छिपली आ कड़चीक टुकड़ी रखने। जहाँ कोइ कानए लगैत छल तँ दादी छिपली बजा गीत गाबए लगैत। बच्चा चुप भऽ दुनू हाथे थोपड़ी बजा दादीक संग गीत गाबए लगैत छल। दादीक लाटमे आनो-आनो गोटे अपना बच्चाकेँ आनि खेलबैत। महरैलवाली हँसमुख। सदिखन हँसिये कऽ बजैत। मुदा आइ मन्हुआएल देखि ननौरवाली चुटकी लैत बाजलि- “दीदी, बड़ मन्हुआएल छथि, भैया किछु कहलकनि?”
बिचहिमे कछुबीवाली टपकि कऽ बाजलि- “भैयाकेँ तँ दीदी खेलौना बनौने छथि, ओ की कहथिन।”
कछुबीवालीक बात सुनि महरैलवाली उत्तर देलखिन- “नै कनियाँ, सुभद्रा दाइक दुख मन पड़ि गेलि। भरि दिन अन्नो ने नीक लगल।”
सुभद्राक नाओं सुनि ठाढ़ीवाली च्यू,च्यू करैत बाजलि- “कनियाँ, तूँ सभ नव-नौतुक छह। नै बुझल हेतह। हमर जे मझिली पुतोहु अछि ओ दोती अछि। पहिलुका घरबला जे रहै ओ बौर गेलै।”

कछुबीवाली पुछलक- “कतऽ बौर गेलै?”
ठाढ़ीवाली उत्तर दैत बाजलि- “दिल्लीमे नोकरी करए गेल, से घूमि कऽ नै आएल। बेटा तँ हमर कुमार रहए। बापक मन दोती लड़कीसँ बिआह करबाक नै रहनि। मुदा विदेसरक मेलामे जे कनियाँ देखलौं, देखि कऽ मनमे गड़ि गेलि। हमरे जोरसँ बिआह भेलै। अखन ओकरेपर गिरथाइन

बनल छी। जेठकी तँ तेहेन अछि जे कहिया ने झोटिया कऽ बइला देने रहिताए।''

सोनपुरवाली दादीकेँ सभ बुधियारि आ बेसौउ बुझैत। ओ कहए लागलीह- ''कनिया तोरा सभकेँ नै बुझल हेतह। हमर बिआह ढेरबामे भेल रहए। दादी जीबिते रहथि। ओ दोसर बिआहकेँ अधलाह बुझैत। बाबू हमर बड़ विचारक। साल भरिक बाद माएकेँ कहलखिन- ''बुच्चीक दोसर बिआह कऽ देबै। जाबे अपना दुनू गोटे जीबै छी ताबे ने। जखन मरि जाएब तँ ओकर के देखतै। गाममे तँ देखिते छिऐक जे केहेन-केहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि। खानदानक नाक कटि जाएत। हम सुनलौं तँ बुकौर लागि गेल। माए पोलहा-पोलहा बुझौलक। हम हँ कहि देलिऐक। अखन देखिते छहक जे भगवानक दयासे केहेन फड़ल-फुलाएल परिवारमे सुख करै छी। भगवान सभकेँ सुख-भोग देथुन। ककरो मन कलपै नै।''

रूपलाल बाबाकेँ अबिते देखि कमलनाथ आगू बढ़ि बाँहि पकड़ि दुआरपर अनलकनि। दुनू आँखिसँ कमलनाथकेँ नोर टघरए लगलनि। कानि-कानि अपन दुखनामा बाबाकेँ सुनबए लगलनि। बबोक आँखिसँ नोरक टघार गालपर होइत चौकीपर ठोपे-ठोप खसए लगल। कनैत रूपलाल बाबा कमलनाथकेँ कहलखिन- ''कमल, समाज एहेन नाशक रस्ता धेने अछि जे ककरो नीक नै हेतैक। आइ तोरा जे भेलह कत्ते दुखद अछि। हमर नेता गाँधी जी कहथिन मर्द-औरतक बीच जे विषमता अछि ओकरा मेटबए पड़त। तखन समाज एकरंग बनत। अखनो देखै छी जे मरद तीन-तीनटा बिआह करैत अछि मुदा औरत जिनगी भरि बैधव्य भारसँ कलंकित जरैत रहैत अछि। ने कोइ देखिनिहार आ ने कोइ ओकरा मनुक्ख बुझिनिहार।''
''भाय, एकर उपाए?''
''हँ छै। लकीरक फकीर-बनब नीक नै। पैघ-पैघ समाज सुधारक समाज सुधारलनि। अखनो किछु बाँकी छै। जे हमहीं-तोहीं ने सुधारबै।''

कमलनाथक हृदयमे जे बेथाक पहाड़ बनल अछि आस्ते-आस्ते पघिलए लगल। चेहरामे चमक आ मुँहमे मुस्कान आबए लगल। उत्साहित भऽ कहलखिन- ''भाय, समाज अहाँकेँ गुरु मानैत छथि। जिनगीमे ककरो नीक छोड़ि अधलाह नै केलिऐक। हमहूँ अहाँसँ बाहर नै छी। जे कहब मानि लेब।''

कमलनाथक बदलल विचार रूपलाल बाबाकँ जुआनीक उमंग आनि देलकनि। ठहाका मारि दुनू गोटे हँसलाह। गद्-गद् हृदैसँ रूपलाल बाबा बजलाह- ''कमल, तोरा कोनो तर्दुत नै करए पड़तह। सभ भार हमरा ऊपर। हमहूँ जिनगीक अंतिम घड़ीमे जुआनिक कएल कीर्तिकँ पुन: जोड़ि जीब। समाजक बीच ढोलहो दऽ कहबै जे पढ़ल-लिखल नौजबान सुशील अछि। देखबोमे भव्य, विचारो उत्तम छै। ओकरा संग सुभद्राक बिआह होएत।''
हँसैत कमलनाथ बाजलाह- ''सुभद्रा हमरे बेटी नै समाजक थिकैक। तँए नीक-अधलाहक भार समाजक ऊपर छै।''
उठि कऽ ठाढ़ होइत रूपलाल बाबा बजलाह- ''कन्यादान हम करब''

गाममे फगुआक उमंग जकाँ रंग-अबीर उड़ए लगल। मुरझाएल सुशील एकाएक प्रफुल्लित भऽ गेल। जहिना जाड़क मासमे ठंढ़सँ गाछ-बिरिछ मरनासन्न भऽ जाइत अछि। मुदा वसन्तक बयार पबिते लहलहा उठैत अछि, तहिना समाजमे भेल।

सौंसे गामक लोक ब्रह्मस्थानमे जमा भेलाह। की मरद, की औरत, की बूढ़, की बच्चा सभमे खुशीक आनंद। समाजक बीच सुशील-सुभद्राक बिआह परस्पर माला पहिरा सम्पन्न भेल।
लोक नारा लगबए लगल- ''रूपलाल बाबा- अमर रहे-२''
''विधवा बिआह- अमर रहे२''

:::::::::

१७ सोनमा काक्का

भरि राति ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत कखनो उठि कऽ बैसै तँ कखनो पेशाब करैले बाहर निकलै। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि सोनमा काका डिबिया लेसि कुट्टी काटए लगल। घरवाली रुपनीक इलाज करबैले डॉक्टर ऐठाम जाएब छलैक। काल्हिये डेढ़ सएमे खस्सी बेचलक। सबेरे विदा हएब तखन ने समैपर पहुँचि बेर धरि घुरि कऽ आबि सकब सोचि सोनमा काका धड़फड़ करैत गाम परक काज सम्हारए लगल। घरवालाक चाल-चुलि पाबि रुपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चूल्हि लग पानि छीटि पजारलक। रोटिपक्का धिपै दुआरे चूल्हिपर चढ़ौलक। चिक्कसमे लसिये ने पकड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी बना रोटिपक्कामे देलक। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर राखल मौनीमे सँ चारिटा अल्लू निकालि चूल्हिमे घोसियेलक। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनौलक। सोनमा काका नादिमे कुट्टी दऽ पानि छीटि दुनू हाथे मिला गाएकेँ घर-सँ-बाहर केलक। लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोइ पानि नेने आएल। अपनेसँ पीढ़ी लऽ जलखइ करैले बैसल। रुपनी पतिकेँ थारी आगूमे दऽ कलपर जा हाथ-पएर धोइ आबि चूल्हिये लग बैस खाए लागलि। जलखइ खा धोती, गोल-गला आ पएरमे चट्टी पहिरि सोनमा काका रुपनीकेँ कहलक- ''कत्ते दूर जाए पड़त से नै बुझै छिऐ, फुरती करू?''
काँख तर छाता कान्हपर तौनी, धोतीक खूँटमे रुपैया बन्हलक। रुपनीकेँ हुक्काक चहटि। बिना हुक्काक भरि दिन केना कटतै तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेल। आगू-आगू सोनमा काका पाछू-पाछू रुपनी बाजार दिसुका बाट पकड़ि विदा भेल।

तिनमहला भारी-भरकम मकान देखि सोनमा काकाकेँ फाटकसँ भीतर जेबाक साहसे नै होइ। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्शाबलाकेँ पुछलक- ''बौआ, डॉक्टर साहेब ऐठाम जाएब?''
''जा-जा वएह मकान डॉक्टर साहेबक छियनि।'' रिक्शाबला हाथक इशारा दैत कहलक।
पीचसँ उतरि फाटक लग सोनमा काका जाइते छल आकि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलक। सोनमो काका पाछू-पाछू बढ़ल। लोकक करमान लगल देखि रुपनीक दिल दहलि गेल। मने-मने बाजलि-

“बाप रे बाप, एते दुखताह कतऽ सँ एलै। असकरे डॉक्टर साहेब केना इलाज करथिन।”
सोनमा काका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलक। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमा काकाकेँ कहलक- “ताबे बाहर जा बैसू। जखन नम्बर आओत तखन सोर पारि लेब।”

सोनमा काका बाहर निकलि फुलवारीमे घूमि-घमि फूल देखए लगल। रंग-बिरंगक फूल फुलवारीमे। कोनो-कोनो सुगंधित आ कोनो-कोनो बिना सुगंधेक। किआरी बनल। पतियानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैले पनिबट बनल। टहलै-बूलैले दू हाथ चाकर रस्ता। रस्तापर गदगर दूभि। पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमा काका तमाकू चुनबए लगल। चून झाड़ि तमाकू मुँहमे लऽ आगू तकलक आकि दस-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौड़ैत देखलक। कोनो उज्जर, कोनो कारी, कोनो भटरंग देखि दुनू परानी सोनमा काका देखए लगल। हवा सिहकैत। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमा काका पड़ि रहल। थोड़े-कालक बाद कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोटे डॉक्टर लग पहुँचल। रुपनीकेँ बेंचपर बैसाए डॉक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बेमारीक भाँज नै बूझि डॉक्टर साहेब सोनमा काकाकेँ पुछलखिन- “कत्ते दिनसँ बीमार छथि। की सभ होइ छन्हि?”
मिरमिरा कऽ सोनमा काका बाजल- “पौरूँका साल गाममे हैजा भेलै। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझली बेटी मरि गेल। तहियेसँ बेमारीक परबेश भऽ गेलै।”
“कतेक बाल-बच्चा अछि?”
“आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।”

डॉक्टर साहेब एकटा टॉनिक लिखि कागज दऽ देलखिन। कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पच्छिम दबाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमा काकाकेँ देखा देलक। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देखि सोनमा काका पुछलक- “भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?”
माथ कुरियबैत ओ बाजल- “की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। अंगनामे दुनू सौतिन झगड़ा करए लागलि। छोटकी बुफगर। ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटकि देलक आ मुकिआबए लगल। मुकियबैत-मुकियबैत बेहोश कऽ देलक। जाबे भैयाकेँ खबरि होइ आ आबै ताबे थारी-लोटा-नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा

गेलि। हमहूँ गामपर नै रही। जखन एलौं तँ देखलऐ। लगले एक सए रुपैया पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।''

दबाइ-फीस लगा सोनमा काकाकेँ सए रुपैया खरच भऽ गेल। रुपैया गनि देखलक तँ पचास रुपैया बँचल। मने-मन सोनमा काका सोचलक जे कहिया बाजार आएब कहिया नँइ। बिछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीनि लेलक। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सियनि उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सुखत आ सुतबो करब। जखन बाजारसँ बहराएल आकि धक् दऽ सोनमा काकाकेँ मन पड़ल जे बाजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घुरि कऽ थोड़े आगू बढ़ल आकि मुरही-कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलक। पाँच रुपैयाक मुरही-कचड़ी मिला सोनमा काका कीन्लिक। आधा अपने गमछाक खोचड़ि बना लेलक आधा धरवाली रुपनीकेँ देलक। रुपनी खोंइछामे लऽ लेलक। दुनू गोटे रस्तो चलै आ खेबो करै। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमा काका मिला देने रहए। थोड़े दूर आगू बढ़ल तँ मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़लै। कडू मिरचाइ रहने सोनमा काकाकेँ हिचुकी उठलै। दुनू आँखिसँ नोर सेहो गिरए लगलै। जहाँ हाथसँ नोर पोछलक आकि आँखियोमे लागि गेलै। पानिक कतौ पता नै। सोनमा काका सुसुएबो करै, आँखिसँ नोरो चुबै आ हिचुकबो करै। मील भरि जखन बढ़ल तँ रस्ताक बगलेमे उतरबारि भाग इनार देखलक। इनार देखिते सोनमा काकाकेँ हूबा भेल। इनरक चारू कात सिम्टीक लहरा बनल। चारि-पाँच गोटेकेँ पानि भरैत देखि हिचकैत सोनमा काका कहलक- ''बुच्ची, कने पानि पिआबह, कडू लागल अछि।'' बीचेमे हिचुकी उठलै। हिचुकैत आ सुसुआइत सोनमा काकाकेँ देखि पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसबो करै। करिया डोलमे पानि भरि सोनमा काकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमा काका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहरिमे बैस खाए लगल। करिया भूल्लीकेँ कहलक- ''हे गै पितरिआ आँखिवाली बाबाकेँ देखि-देखि हँसै छीही?''
आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक- ''हे गै जरसी गाए, अनके टेटर देखै छीही। रुपनी-दादी अखनो दुनू गोटे हाट-बाजार घूमैले जाइत अछि''
बिच्चेमे नेङरी बहिरीकेँ कहलक- ''अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठिआए दही। नहेबो ने केलौं हेन।''

सोनमा काका पानि पीब तमाकू चुनबए लगल। रुपनी बीड़ी लेसि पीबए लागलि। दुनू गोटे रस्ता धेलक। अपना गामसँ कोस भरि पाछूए दुनू परानी सोनमा काका रौदमे गरमा गेल। रस्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देखि सुसताए लागल। भोलबा, पहिनेसँ सुसताइत छल, देखि सोनमा काका पुछलक- "तूँ कात्तऽ सँ अबैत छेँ भोला?"

उठि कऽ बैसैत भोलबा उत्तर देलक- "तेल पेड़बैले गेल छलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ कतए लऽ गेल छेलहक?"

"की कहबौ भोला। तीन सालसँ विपत्तिये-विपत्तिमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुचिया माए तरे-तर खियाइत जाइत अछि। पहिने होइ छलै जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै। मुदा डॉक्टर लग गेलौं तँ बेमारी ठहरल।"

"देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे परान रहै छै ताबे तक सेवा करक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह ततबे काल ई दुनियाँ। स्वर्ग-नर्क सभ एतै छै।"

"बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहैत छै।"

"काका हमर विचार अछि जे दोसर बिआह कऽ लएह। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छै।"

"भोला तूँ चौल करै छेँ। बुढ़ाड़ीमे दोसर बिआह कऽ गरदनिमे ढोल बान्हब। जाबे थेहगर छी कहुना-कहुना दिन कटिये जाएत। बादमे बुझल जेतै।"

तीनू गोटे गाम दिस चलल। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलक। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ सुनै जे हल्ला कथीक होइ छै। ओना गामे छिऐ, कोनो ने कोनो हल्ला होइते रहैत छै। हल्ला सुनि डेगो नम्हर दैत बढ़ल। गाममे प्रवेश केलक तँ हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलै। कियो कहै 'नीक भेलै' तँ कियो कहै 'अधलाह भेलै।' तीनू गोटेकेँ कोनो भाँजे ने लगै। रस्ताक दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देखलक। तीनू गोटे रस्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पुछलक। मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि तीनू गोटेकेँ बैसैले कहि कहए लगलै- "बजैत लाज होइए। मुदा जब पूछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचन काका छल। कहयो ककरो अधलाह नै केलक, आ ने ककरोसँ कहिओ मुहाँ-ठुठी भेलै। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौआँकेँ खुआबैत छलाह। कोनो चीजक कमी नै। बेचारे मरलाह आकि तेहन चालि-चलैन बेटा धेलक जे सभ सम्पति बोहा देलक। घैला-घैले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियबै। घराड़ियो

नै बचलै। बापक राखल नाओं रामकिसुन रहै जेकरा सभ बतहा कहए लगलै। वएह मुइल तँए कोइ नीक कोइ अधलाह कहै छै।"
सोनमा काका मुनेसरसँ पुछलक- "परिवारमे के सभ छै?"
"एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छै। ओहो मइटुग्गर अछि। समदौआ बहु जे छलै ओ महीना दिन पहिने भागि गेलै। अन्न-अन्नकँ बतहा मुइल। अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत, ने कपड़ा छै। लगमे बैस बेटा कनै छै।"
मइटुग्गर सुनि रुपनीक आँखिमे नोर आबि गेलै। सोनमा काकाक हृदए पसीज गेलै। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेलै। सोनमा काका मुनेसरकँ कहलक- "भाय साहेब मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ, चरबाहियो कऽ कऽ जीबे करतै।"

सोनमा काकाक विचार सुनि मुनेसरक मन बदलि गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल- "सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जँ कोनो जोगार हेतै तँ अंगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबै।"

रामकिसुन बतहा बेटाक नाओं भुखना। जहिना पूब मुँहे बतहा सुतल तहिना अछि। भुखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। कत्ते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलै। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सूखि जाइत छैक तहिना मुनेसरक क्रोध भुखनाक दशा देखि सूखि गेल। हृदए पिघलि गेलै। डेन पकड़ि मुनेसर भुखनाकँ उठा कहलक- "बच्चा अखनसँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।"
मुनेसरकँ देखि टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमा काकाकँ जे बीस रुपैया बचल छल ओ डॉड़सँ निकालि कपड़ा लए देलकै। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जरना आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिलि बतहाकँ जरौलक। समाज समुद्र होइत छै। अधलाहसँ अधलाह आ नीकसँ नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइत छै।

गरमी मास रहने सोनमा काका भोरे हाँसू-छिट्टा लऽ घास लए विदा भेल। कने आगू बढ़ल तँ मोनमे एलै जे भुखनाकँ ऐठाम आनि बेटीक संग विआहो कऽ देबै आ रखियो लेब। घुरि कऽ आबि हाँसू-छिट्टा रखि छाता लेलक। आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकँ कहलक- "भाय, हमरो बेटा नै अछि, एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे भुखनाक बेटीसँ बिआह कऽ जमाइ बना रखी। अहू बच्चाकँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकँ।"

हँसैत मुनेसर कहलक- ‘‘तेलोसँ चिक्कन। अखने भुखनाकेँ नेने जाउ।’’

सोनमा काका भुखनाकेँ संग केने अपना ऐठाम आएल। गाममे जते घरहटिया अछि सभकेँ सोनमे काका सिखौने अछि स्कूल जकाँ सोनमा काका घर बन्हैक एक-एकटा काज करैक लूरि सभकेँ सिखौने तँइ सभ काका कहैत।

:::::::::

१८ दोती बिआह

पचास वर्षीए प्रोफेसर उमाकान्त दोहरा कऽ बिआह कइये लेलनि। केना नै करितथि? संयमी रहने पचास बर्खक चेहरा पैंइतीस-चालीससँ ऊपर नै बूझि पड़ैत छन्हि। पत्नीक मुइने घर सुनसान लागए लगलनि। चौघारा कोठरी सभ ढन-ढन करैत रहनि। अपना छोड़ि ने दोसर भैयारी आ ने कियो आन परिवारमे रहनि। दुइएटा सन्तानो! जेठ बेटी प्रोफेसर पतिक संग बनारसेमे रहै छथिन। दुरागमनक पछाति आइ धरि मात्र तीन बेर माए-बापसँ भेँट करए एलीह। बेटो तहिना। डॉक्टरीक अंतिम साल, बंगलोर मेडिकल कओलेजमे पढ़ैत छथिन। सालक दुर्गापूजाटा मे गाम अबैत छथि।

किरिण फुटितहि तीनू बकरी घरसँ निकालि बाहरक खुट्टीमे बान्हि, कटहरक पात आगूमे दऽ बगलमे बैस अपने फुड़ने असकरे बैसल बहिरी बाजए लगलीह- ‘‘घोर कलयुग! घोर कलयुग आबि गेल। जते दिन ई दुनियाँ चलैए, चलैए, नै तँ धरती फाटत। सभ ओइमे चलि जाएत। सुआइत लोक कहै छै जे मनुक्ख तते पपियाह भऽ गेल अछि जे खिआइत-खिआइत चुट्टी-पिपरी जकाँ भऽ गेल। हमरा सभकेँ भगवान पार लगौलनि जे एतेटा मनुक्ख भेलौं। आबक लोक थोड़े एते-एतेटा हएत। तेहेन हएत जे लग्गी लगा-लगा भट्टा तोड़त।’’

ओना बिआहसँ दू दिन पहिनहिसँ स्त्रीगणक बीच गुन-गुनी शुरू भऽ गेल छलैक मुदा कियो खुलि कऽ नै बजैत छेलीह। मुदा आइ सबहक मुँह खुजि गेलनि। टोलक बीच सरकारीक तीनियेटा चापाकल अछि। बाकी पाँचो अपन-अपन अंगनेमे गरौने छथि, जइपर आन-आन नै जाइत। तीनूमे सँ एकटाक हेडे खोलि तड़िपीबा सभ बेचि कऽ ताड़ी पीब गेल। दोसराक फील्टरे फुटि गेल छै, जइमे पानिसँ बेसी गादिये अबैत अछि। खाली चौराहा परहक कल बँचल अछि। मुदा ओहो कोन जनमक पाप केने अछि जे भरि दिनमे कखनो आराम नै भेटैत छै। चारू दिससँ पनिभरनी बाल्टी-घैल लऽ आबि-आबि चारू दिससँ घेरि बेरा-बेरा पानि भरैत रहै छै। तँए गप-सप्प करैक नीक अवसरो आ जगहो फइल।
चिक्कारी मारैत मझौरावाली सोनरेवाली दिस देखि कऽ बजलीह- ‘‘साओनक लगनक गीत अबै छन्हि, दीदी?’’

मुस्की दैत सोनरेवाली उत्तर देलखिन- ‘‘जहिना एक्के लोढ़ीसँ सिलौटपर मिरचाइयो पीसल जाइत अछि आ मिसरीओ, तहिन ने डहकनो फागुनोक लगनमे गाओल जाइत अछि आ साओनोमे।’’

दुनू गोटेक चिकारीमे गप्प सुनि बेलौंचावाली बजलीह- ‘‘अपना भैंसुरकेँ नै देखै छहुन जे काठपर जाइ बिना दुइर भेल जाइ छथुन आ तइपर पुट्ठा खलीफा घर लऽ अनलखुन। से बड़बढ़ियाँ। बड़ चिक्कन। आ प्रोफेसर भैयाकेँ अखन की भेलनिहेँ। मारे दरमहो कमाइ छथि आ उमेरे कत्ते हेतनि। तीस-पैंतीस बर्खसँ बेसी थोड़े भेल हेतनि।’’

मझौरावालीक पच्छ लैत मुँह चमकबैत मोहनावाली बाजलि- ‘‘जानिऐ कऽ तँ पुरुख छुद्दर होइए। तइमे उमाकान्ते जँ छुद्दरपना केलनि तँ कोन जुलुम भऽ गेलै।’’

मोहनावालीक कडुआएल गप सुनि बेलौंचावालीक मन जरए लगलनि। तुरुछि कऽ बजलीह- ‘‘सभ पुरुख तँ छुद्दरे होइए मुदा मौगी तँ सभटा गिरथाइने होइए। सएह ने। सत-सतटा मुनसा देखैए मौगी आ छुद्दर होइए पुरुख। हिनके पुछै छियनि जे प्रोफेसर भैयासँ नीक अपन घरबला छन्हि?’’

घरबलाक नाओं सुनि मोहनावाली काँख तरक घैल निच्चाँमे रखि आगू बढ़ए लगलीह। मुदा तइ बीच साठि बर्खक झबरी दादी जोरसँ बजलीह- ‘‘मरदक कमाएल खाइ जाइ छह आ गरमी चढ़ै छह तँ कलपर झाड़ैले अबै छह। एक्को दिन कोइ उमा बौआकेँ भानसो कऽ दइ छहुन आकि एक लोटा पानियो भरि कऽ दए अबै छहुन। मुदा उल्लू जकाँ मुँह दुसल सभकेँ होइ छह। बेचारा नोकरीपर सँ अबै छथि, अपने हाथे बरतन-बासन धोइ, पानि भरि भानस करै छथि से बड़बढ़ियाँ! मुदा बिआह कऽ लेलनि से बड़ अधलाह।’’

झबरी दादीक गप ओते मोहनावाली नै सुनथि जते तरे-तर बेलौंचावाली जरैत रहथि।

छअ मास पूर्व प्रोफेसर उमाकान्तक पत्नी स्वर्गवास भऽ गेलनि। जा धरि जीबैत छलथिन ताधरि घरक कोनो भार प्रोफेसर साहेबकेँ नै बूझि पड़ैत छलनि। जहिना कोसीक धार अनवरत बहैत रहैत अछि तहिना उमाकान्तोक परिवार अपना गतिसँ छअ मास पछाति धरि चलैत छलनि। ओना दस बर्ख पूर्व धरि माए-पिताक नजरिमे उमाकान्त बच्चे आ पत्नी कनियेँ छलथिन। घरक भार दुनूमे सँ किनकोपर नै छलनि। सोलहो आना माइये-बाबू सम्हारैत

छलथिन। पढ़नाइ-पढ़ौनाइ उमाकान्तक आ दुनू साँझ भानस केनाइ पत्नीक काज छलनि।

पत्नी मुइलाक उपरान्त उमाकान्तकेँ घर-आंगन सून-मशान बूझि पड़ए लगलनि। चौघारा घरक आंगन, नम्हर दरबज्जा, तइ बीच असकरे उमाकान्त रहै छथि। परिवारकेँ डमैत देखि उमाकान्तक मनमे बेचैनी बढ़ए लगलनि। जहिना भूमकमक समए धरतीक संग-संग ऊपरक सभ किछु काँपए लगैत अछि तहिना मनक संग-संग उमाकान्तक बुधि-विवेक डोलए लगलनि। हृदए चहकए, मन मसकए लगलनि। मसकैत-मसकैत एहेन चिरक्का भऽ गेलनि जे उपयोग करै जोकर नै रहलनि। अनायास धैर्यक सीमा बालुक मेड़ि जकाँ ढहए लगलनि। ढहैत-ढहैत सहीट भऽ गेलनि। सहीट होइते बरखा पानि जकाँ रास्ता बनबए लगलनि, जइसँ नव-नव विचार जनमए लगलनि। नव-नव विचारकेँ जनैमते आँखि उठा आगू तकलनि तँ मेला-जकाँ दुनियाँ बूझि पड़लनि। सभ रंगक देखिनिहार। सभ तरहक वस्तुक दोकानपर एका-एकी एबो करैत आ जेबो करैत। अपन-अपन धुनिमे सभ बेहाल। दोसर दिस देखैक ककरो समए नै। अपने ताले सभ बेताल, जइसँ ककरो-ककरो आँखिसँ नोरो खसैत आ कियो-कियो ठहक्को मारैत। अनका दिससँ नजरि हटा उमाकान्त अपना दिस मोड़लनि तँ जिनगीक लेल संगीक जरूरति पड़लनि। मन पड़लनि पत्नीक मृत्यू। मृत्यूक उपरान्त सोग परगट करैले तँ बहुतो एला मुदा की सबहक नोरमे एक्के रंगक वेदना रहनि? एक घटना रहितो एक रंगक विचार आ वेदना कहाँ छलनि? भरिसक सभ भाँज पुरबैले आएल छलाह। मुदा प्रोफेसर हरिनारायणक नोर किछु आरो बजैत छलनि। कि हुनकर नोर पत्नीक प्रति छलनि आकि पढ़ैत बच्चाक प्रति छलनि आकि हमर विधुर जिनगीक प्रति छलनि। मनपर भार पड़लनि। भारक तर मन दबेलनि, जइसँ सोचै-विचारैक रास्तो अवरुद्ध हुअए लगलनि। मुदा तरमे दबल मन कहलकनि- “समाजक लोक की कहत?” फेर मनमे उठलनि, की कहत समाजक लोक! जते लोक तते विचार। जहिना ताड़ीक गंधसँ ककरो उलटी होइत छैक तँ कियो सुगंध बूझि आत्म-तुष्टि करैत अछि। बूढ़-बुढ़ानुस परम्परानुसार कहताह जे संयुक्त परिवारमे व्यक्ति-विशेषक वेदना परिवारक बीच हराए, फुलाएल फूल जकाँ हँसैत अछि, जइसँ अभाव कोनो वस्तु नै रहि जाइत अछि। फेर मनमे एलनि जे जइ कओलेजमे शिक्षक रूपमे छी, बेटा तुल्य विद्यार्थीकेँ जिनगीक बाट देखबै छी ओ कि कहत? मुदा कोनो घटनो तँ अनिवार्य नै होइत आकस्मिको होइत छै। जे सबहक संग घटबे करत? घटियो सकैत अछि, नहियो घटि सकैत

अछि। मन ओझड़ेलनि। किछु कालक बाद मनमे एलनि जे जे मनुख ऐ धरतीपर जन्म लैत अछि ओ मृत्यूपर्यन्त हँसैत जीबए जाहैत अछि। से कहाँ भऽ रहल छै। पहिलुका जकाँ परिवारो नै रहल। असकर जीबो कठिन अछि। दोसराक जरूरति सदति काल पड़ैत अछि। भलहिं जिनगीक क्रिया निमाहि लेब मुदा मनक बेथा के सुनत। सभ ठाम ने तँ लोक कानि सकैत अछि आ ने हँसि सकैत अछि। परिवार तँ हँसै-कनैक जगहे छी। जँ से नै भेटए तँ गुड़-घाव जकाँ तरे-तर सड़नि करैत रहत। जते सड़नि करत तते शरीरसँ गंध निकलबे करत, जइसँ कष्टो हएत आ औरुदा घटत। जखने औरुदा घटत तखने जिनगी सिकुड़त। जते जिनगी सिकुड़त तते मृत्यू करीब आओत। फेर मन ओझरा गेलनि। मन ओझराइते नजरि घुमौलनि तँ कओलेजक इतिहास विभागक प्रोफेसर हरिनारायणपर पड़लनि। हरिनारायणे बाबूटा एहेन जिज्ञासु रहथि जनिका आँखिसँ हृदैक वेदना, पहाड़पर सँ खसैत झरनाक पानि जकाँ अनघोल करैत रहनि जे 'बाप रे, अन्याय भऽ गेल।' उमाकान्त ठूठ गाछ सदृश भऽ गेलाह। जइमे फूल-फड़क संग छाहरियो अलोपित भऽ जएतनि। अपने जानटा लऽ कऽ पत्नी नै गेलखिन। असीम वेदनाक पहाड़ सेहो माथापर पटकि गेलखिन। सभ किछु छिड़िया जेतनि। केना समेटि पओताह उमा भाय! की एकरे जिनगी कहबै?''

चेतना शून्य उमाकान्त दुनियाँक बाजारमे हरा गेलाह। चारू दिसक बाट बन्न बूझि पड़ए लगलनि। केम्हर जाएब? रस्ते नै। कि ओ खरहोरिक ओहन गाड़ल कड़चीक सदृश भऽ गेलाह जइसँ कोनो क्रिया नै भेनौ आन ओगरवाह बुझैत अछि। अनायास मनमे जगलनि जे दुनियाँमे कियो अप्पन नै। जा धरि आँखि तकै छी ताधरि दुनियों अछि, नै तँ ओहो नै अछि। अपनहि करनीसँ कियो दुनियाँकेँ सुन्दर बनबैत अछि आ कियो अधलाह। आगू जीबैक लेल संगीक जरूरति सभकेँ होइत छै। आनक अपेक्षा हरिनारायणबाबू, लग बूझि पड़ै छथि। अखने हुनका ऐठाम जा अपन मनक बात कहबनि।

उमाकान्तकेँ देखिते दुनू हाथसँ दुनू बाँहि पकड़ि हरिनारायण अरिआति कऽ अपन कोठरीमे बैसाए पत्नीकेँ पानि नेने अबए कहलखिन। वामा हाथमे लोटा दहिना हाथमे पानिसँ भरल चमकैत स्टीलक गिलास उमाकान्त दिस बढ़ौलखिन। पत्नी विहीन उमाकान्त नजरि निच्चाँ केने हरिनारायणक पत्नी-शोभाक हाथसँ गिलास लऽ पानि पीबए लगलाह। मुदा दू घोंटक बाद पानि कंठसँ निच्चाँ धसबे ने करनि। दोसर गिलास भरैक लेल शोभा बामा हाथक

लोटा दहिना हाथमे लैत उमाकान्तपर नजरि गारने। ने उमाकान्त मुँहसँ गिलास हटबैत आ ने पानि पीबैत। उमाकान्तक बेथा हरिनारायण बूझि गेलखिन। शोभा हाथक लोटा अपन हाथमे लैत कहलखिन- "अहाँ चाह बनौने आउ। भायकेँ हम पानि पिआ दइ छियनि।" चाह बनबैले शोभा कीचेन रूम चलि गेलीह।

मुँहमे गिलास सटल उमाकान्तक मनमे आबए लगलनि। जँ कहियो हरिबाबू हमरा ऐठाम जेताह तँ किनका चाह बनबैले कहबनि। उमाकान्तकेँ विचारमे डूबल देखि हरिनारायण कहलखिन- "भाय, अपनेसँ हम छोट छी मुदा एकरा धृष्टता नै बूझि दिलक धड़कन बुझू। अपने बेसी दुनियाँ देखलिऐक मुदा.......।"

चैंकि कऽ उमाकान्त पुछलखिन- "मुदा की?"

आइसँ पहिने मनुख जते असुरक्षित जिनगी बितबैत छल ओइमे बहुत कमी आएल अछि। सोलहन्नी सुरक्षित तँ नै मुदा पहिलुका अपेक्षा सुरक्षित भेल अछि। ओना खतरा पहिनेसँ अधिक भऽ गेल अछि। मुदा बदलल रूपमे। पहिलुका रूपमे सुरक्षित भेल अछि। जइसँ जिनगीक नमती सेहो बढ़ि रहल अछि। ओना पूर्वज शतायुकेँ सही औरुदा बुझै छथिन। मुदा इहो बुझिनिहार तँ छथि जे चालीस कऽ घपचालीस बुझै छथि। ओहो ओहिना नै बुझै छथि। अखनो चालीस बर्खसँ ऊपर कत्ते गोटे छथि जे पूर्ण स्वस्थ छथि। मुदा किछु बर्ख पूर्व धरि अस्सी बर्खसँ ऊपर गोटि-पङरा पहुँचैत छलाह। से आब आधासँ बेसी पहुँचए लगल छथि। तँए, मोटा-मोटी नब्बेकेँ आधार बना पुछलखिन- "अपनेक आयु कतेक अछि?"

आयु सुनि उमाकान्त विस्मित भऽ गेलाह। हृदए बमकैत रहनि मुदा मुँहसँ बोली निकलबे नै करनि। किछु काल बिलमि कहलखिन- "पचास बर्ख।"

पचास बर्ख सुनि हरिनारायण उछलि कऽ बजलाह- "आधासँ किछु अधिक भेल अछि मुदा आधा तँ बाँकिये अछि। आधाक लेल.......।"

नम्हर साँस छोड़ि, उमाकान्त आँखि उठा कखनो हरिनारायणपर देथि तँ लगले नजरि निच्चाँ कऽ धरती देखए लगथि। मुस्कुराइत हरिनारायण कहलखिन- "अपने दोसर बिआह कऽ लेल जाउ। जरूरी नै जे सभ औरत कुल्टे होइत अछि। एहनो औरतक कमी नै जनिकामे मानवीय संवेदना गंगाक धार जकाँ सदिखन उमड़ैत रहैत छन्हि। नारीक पहिल गुण मातृत्व थिक, जेकरा प्रबल बनेबाक लेल पुरुषक सहयोग जरूरी अछि। जखने

अनुकूल परिस्थिति नारीक प्रति बनत तखने दुनियाँक रंग-रूप बदलल-बदलल बूझि पड़त।''

चाह पीब, विदा होइत उमाकान्त कहलखिन- ''अहाँक विचारसँ सहमत छी मुदा काजक भार अहाँपर।''

दुनू गोटे -उमाकान्त आ हरिनारायण- दू गामक। मुदा कोसे भरिक दूरी दुनूक बीच छन्हि। अपने गामक पच्चीस बरखक यशोदियाक संतप्त जिनगी हरिनारायणक सोझमे छन्हि। सोलह बर्खक देहरिपर जखन यशोदिया पहुँचलि, अट्ठारह बर्खक गुणेश्वर, फूलक सुगंधकेँ भौरा जकाँ झपटि लेलक। जिनगीक हरिअर-हरिअर प्रलोभन देबाक संकल्प करैत, लोक-लाजसँ बँचैक लेल, गाम छोड़ि दिल्ली चल गेल। मुदा दिल्लीक सड़कपर जखन दिन-राति बितए लगलै तखन यशोदियाकेँ छोड़ि गुणेश्वर निपत्ता भऽ गेल। असकर यशोदिया बौआए लगलीह। हारि-थाकि यशोदिया एकटा कोठीक शरणमे गेलि। आठ बर्खक पशुवत् जिनगी यशोदियाकेँ बदलैक लेल बाध्य केलक। नव बाट ताकए लागलि। अपनाकेँ मृत बूझि एक राति सभ किछु छोड़ि पड़ा कऽ गाम आबि गेलि। गाम आबि हरिनारायणक पएर पकड़ि ताधरि कनैत रहलि जा धरि ओ बाँहि पकड़ि मनुक्खक जिनगी जीबैक भरोस नै देलखिन।

हरिनारायण परिवारमे यशोदिया रहए लगलीह। यशोदियाक मनमे तँ चैन आबि गेल मुदा हरिनारायणक बेचैनी बढ़ए लगलनि। समए पाबि, बिलटैत दू जिनगीकेँ जोड़ि एक परिवारकेँ लहलहाइत देखलनि। मनमे खुशी अएलनि।

अखन धरि उमाकान्त यशोदियाकेँ प्रोफेसर हरिनारायणक बहिन बुझैत छलाह। यशोदियाक असली परिचए नै छलनि तँए मनमे खुशी रहनि जे सभ्य परिवारक लड़की घरमे औतीह, जइसँ पहिलुके जकाँ फेर परिवार अपन पटरीपर आबि आगू मुँहे ससरए लगत।

दिन -लग्न- बेरागन छोड़ि हरिनारायण उमाकान्तकेँ पुछलखिन- ''अखन तँ बिआहक समए नै अछि तखन.....।''
''एक-एक दिन पहाड़ लगि रहल अछि। बिआहक जे कोनो बंधन अछि से काँच सूतसँ बान्हल जाइत अछि। जइसँ सदिखन टुट-फाट होइत रहैत अछि। तँए दुनूक -पुरुष-नारी- हृदैक योग हेबाक चाही?''

हरिनारायणक प्रश्नसँ उमाकान्त गुम्म भऽ कहलखिन- ''समए आ परिस्थितिकेँ देखैत.....।''

उमाकान्त यशोदियाक बीच साओने मासमे बिआह भऽ गेल।

::::::::

१९ पड़ाइन

पछुलका बाढ़िमे खेतक फसल तँ धुआइये गेल जे मालो-चाल गामसँ उपटि गेल। अपनो दुनू बड़दो आ महीसो मरि गेल। जहिना जंगलक जानवरकँ मेघसँ खसैत पाथरक चोट छटपटबैत तहिना ऐ साल आन-आन किसानक संग अपनो भेल। बाधसँ लऽ कऽ घर धरिक दशा सहाज करै जोकर नै रहल। बाढ़ि अबिते खेतक धान डूबि गेल। मोटाइत-मोटाइत पानि अंगना-घरमे सलाढ़ लगि गेल। नारक टाल पानिक बेगमे भसि गेल। भुसकाँर खसि पड़ल जइसँ गहूमक भूसी भसिया गेल। आश्रमक घरक संग-संग मालो घरमे पानि पहुँचि गेल। जहिना लाठीपर लाठी खाइत दशा होइत, तहिना भेल।

चढ़िते कातिक आगिला खेतीक लेल सभ सूर-सार करए लगल। मुदा खेतीक तँ प्रमुख अंग बड़द छी। बिना बड़दे खेत जोताएत केना? अपनेटा गामक एहेन दशा नै, परोपट्टाक एक्के रंग दशा। किसानक बीच एक्के रंग समस्या पसरि गेल, जइसँ बचल-खुचल माल-जालक दाममे आगि लगि गेल। बड़दक दाम दोबर-तेबर भऽ गेल। एक तँ भेटैबला नै दोसर पैकार सभ जे बाहरसँ आनि-आनि बेचै ओकरो वएह हवा।

अपन इलाका छोड़ि दोसर इलाकासँ बड़द कीनि अनैक विचार भेल। मुदा असगर-दुसगर आननाइयो भारी बूझि पड़ल। गाममे गप्प चलेलौं। एक्के-दुइये आठ-नओ गोटेक विचार भेल। जोड़ा कीननिहार तीन गोटे भेलौं। बाकी छबो- गोटे पल्ले-पल्ला कीननिहार। हुनका सबहक विचार जे एकटा बड़दसँ हर नै जोतल जाएत मुदा जोड़ा लगा लेलासँ भजैती नीक रहत। बेजोड़ बड़द रहने एकटाकेँ बेसी भीड़ होइ छै आ एकटाकेँ कम, जइसँ साले भरिमे बड़द टूटि दाम बुरा दइ छै।

तेसर दिन नवो गोटे लौकहावाली गाड़ी झंझारपुर हॉल्टपर पकड़लौं। साढ़े बारह बजे लौकहा स्टेशन उतरि मेन रोड छोड़ि धनबदहेक उत्तर मुहेँ रस्ता पकड़लौं। कखैन सीमा टपलौं से बुझबे ने केलिऐ। एक्के रंग बाध आ बाधक उपजा। नम्हर-नम्हर बाध, खेतमे लहलाहइत धान। दुधाएल धानक सीस जइसँ जहिना धानक गाछक रंग तहिना सीसोक। ऊँचगर-चौड़गर खेतक आड़ि, जइपर फुलाइतो आ छीमियो भेल राहड़ि। टाट जकाँ राहड़िक गाछ खेत सबहक परिचए करबैत। अपन सभ जकाँ चनकी

राहड़िक गाछ नै, मझोलका गाछ। खेसारी छिटैत एक गोरेकेँ पुछलिऐ तँ कहलक जे ऐ दिगारमे बेसी पये (पाया) राहड़ि होइ छै। धानोक संग-संग अगहनेमे कटाइ छै। सोहरी लागल घुरछा-घुरछे फड़ल। छीमियो नम्हर। कोला-कोली गिरहस्त खेसारी, मसुरी छिटैत। आड़ि सभपर जेरक-जेर ढेरबासँ सियान धरि घसवाहिनी घास छिलैत। उपजा देखि माटि निहारलौं तँ सोलहन्नी खस्सिआइ माटि (कारी माटि) बूझि पड़ल। माटि देखि मन गद्‌गद् भऽ गेल। मुदा अपन इलाका मन पड़िते मन तिता गेल। कमला-कोसीपर खौंझ उठल। दुनू तेहेन हेहर अछि जे इलाकाक माटिकेँ बिगाड़ि देलक। बालु भरि खेतकेँ बलुआह बना देलक। रस्ताक पछबारि भाग एकटा नमगर-चौड़गर परतीपर पचासो महींस चरैत देखि मन खुशी भऽ गेल। चरवाह सभ महींसकेँ अनेर चरैले छोड़ि अपने सभ खेलाइत। खेलो अजगुत ठेंगा-ठेंगा। कनी अटँकि देखए लगलौं। एकटा सीमा -चेन्ह- देने। ओइ सीमापर सँ रागक तर देने उनटि कऽ दुनू हाथे ठेंगा फेकैत। जेकर ठेंगा जते दूर जाए ओ ओते सुरक्षित। जेकर लग रहै ओ हारै। जे हारै ओकरा घुघुआ -पीठ- पर चढ़ि ठेंगा लग तक जाए। फेर दोहरा कऽ खेल शुरू होइ। गोबरबिछनी सेहो बैस कऽ खेल देखैत। कोनो धड़फड़ी रहबे ने करै। तीनिये चारि गोरे रहै, पथियामे कत्ते अँटतै। जहिना एकाधिकार पूँजीपतिक कारोबार निचेनसँ चलैत, कोनो प्रतियोगिता रहबे ने करैत, तहिना पचास महींसक गोबरक बीच तीनू-चारू गोबरबिछनी। मुदा एकटा देखलिऐ जे एक बेर एकटा महींस धानक खेत दिस बढ़ए लगलै तँ एक गोरे माने एकटा ढेरबा गोबरबिछनी उठि कऽ महींस घुमा देलकै।

कोसक अन्दाज आगू बढ़लौं तँ हाट लगल देखलिऐ। समैयो चाइरिक करीब भऽ गेल। मनमे भेल जे कोनो ठेकानल जगहपर थोड़े जाइ कऽ अछि जे अबेर हएत। जखन एलौं तँ देखैत-सुनैत जाएब। हाट देखए बढ़लौं। गमैया हाट। कट्ठा डेढ़ेक परतीपर लगल। तीन-चारि पल्लाबला दू-तीनटा अन्न-पान्निक दोकानदार, दस-बारहटा तीनम-तरकारीक, एक-एकटा माछ-मासुक दूटा झिल्ली-कचड़ी-मुरहीवाली, एकटा मन्हिारा, एकटा माटिक बर्त्तन, एकटा छिट्टा-पथियाक, एकटा चाहक दोकान आ एकटा पान-बीड़ीक। मुदा खरीदारी बढ़ियाँ होइत। अन्दाज केलौं तँ बूझि पड़ल जे जते कीननिहार अछि ओतबे समानो आ बेचिनिहारो। चाहक दोकानपर बैस चाह दइले दोकानदारकेँ कहलिऐ। चूल्हिक छाउर झाड़ि, डोमौआ बीअनिसँ हौंकि, चूल्हिपर केटली चढ़ौलक। दोकानदारसँ पुछलिऐ- ‘‘हाट सभ दिन लगैए?’’

दोकानदार उत्तर देलक- ''ऐ पचकोसीमे चारिटा हाट लगै छै। सोम आ शुक्रकेँ ई हाट लगैए। रवि आ बुधकेँ विस्टौल लगै छै, मंगल आ वरसपतिकेँ चिकना आ शनि-मंगलकेँ परसा।''

चाह बनल। सभ कियो पीब दोकानदारकेँ पाइ दऽ विदा भेलौं। अपने गाम जकाँ गामो, अपना सबहक तँ पोखरि-इनार या तँ बालुमे भथा गेल वा मरने भऽ गेल अछि, ओइ सभमे अखनो अछिये। गोटि-पङरा ईंटाक घर। रस्ता-पेरा कच्चिये। उत्तरे-दछिने गाम सभ। जइसँ आगि-छाइसँ सुरक्षित। जँ कतौ पुरबा-पछबामे आगि लगबो कएल तँ कम घर जरल। जहिना गाम उत्तरे-दछिने तहिना अंगनो सभ। अपने सभ जकाँ लोकोक बगए-बानि आ बोलियो। जइसँ अनभुआर जकाँ बूझिऐ ने पड़ै। गोसाँइ लुक-झुका गेलाह। जहिना पछबा सबेर-सकाल अपन बोरा-बस्तर समेटि लैत तहिना ने परदेशियोकेँ सबेर-सकाल ठर पकड़ि लेबाक चाही। मनमे उठिते अँटकैक गर लगबए लगलौं। एक गोटेसँ पुछलिऐ- ''कोन गाम छी?''

''रोहितपुर।''

मुदा कोनो निश्चित गाम तँ जेबाके नै छल जे दोहरा कऽ पूछितिऐ। तइ काल एक गोरेकेँ दोसर गोरे सोर पाड़लक- ''मधेपुरबला हौ, हौ मधेपुरबला। कनी एम्हर आबह।''

मधेपुर सुनि मन चौंकल। मुदा लगले असथिर भऽ गेल। नाम-गामक कोनो ठेकान अछि। एक-एक नामक कतेक लोको आ कतेक गामो होइए। मुदा मनमे तैयो घुरियाइते रहि गेल। मधेपुरबलाक घर पुबारि भाग रस्ताकातेमे। घास झाड़िते मधेपुरबला उत्तर देलक- ''हाथ लागल अछि, लगले अबै छी।'' कहि घास झारब छोड़ि मधेपुरबला उत्तर मुहेँ विदा भेल। लगमे अबिते पुछलिऐ- ''कोन मधेपुर रहै छी?''

गामक नाओं सुनि बाजल- ''अहाँ सभ कतऽ रहै छी?''

कहलिऐ- ''हमहूँ मधेपुरे रहै छी। तँए पुछलौं।''

मधेपुर सुनि ओ चौंक गेल। जेना किछु भेट गेल होइ तहिना। मुस्कुराइत बाजल- ''झंझारपुरसँ पूब-दछिनक जे मधेपुर छै, ओही मधेपुर रहै छी।''

अपन मधेपुर सुनि हमहूँ हँसैत बजलौं- ''हमरो सबहक घर तँ ओही मधेपुर अछि।''

हमरा सबहकेँ दरबज्जापर बैसबैत बाजल- ''लगले अबै छी। ओइ बेचारा ऐठाम पाहुन सभ आओत डेढ़िया परक टाट लगाओत ओकरे गर धरौने अबै छी। हमर भाग जे गौआँ-घरूआ सभ एलाह।''

अपन भेटैत ठर देखि कहलियनि- ''हँ, हँ भेल, आउ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छै।''

काजक बोझसँ अपनाकेँ लदल देखि चेथरू रस्तेपर सँ सोर पाड़ि पत्नीकेँ कहलक- ''लगले अबै छी। ताबे अहाँ एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा आनि पएर धोयले दियनु।'' कहि चेथरू आगू बढ़ल। भरि बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा नेने चमेली दरबज्जापर आबि पुछलखिन- ''बौआ, अहाँ सबहक घर कतऽ अछि?''
कहलियनि- ''मधेपुर।''
जहिना अनचोकमे देहपर खढ़ो गिरिते लोक चौंक जाइत अछि तहिना मधेपुर सुनि चमेली चौंक गेलीह। आधा मुँह झपैत बजलीह- ''ऑक्सी महादेव मंदिरसँ थोड़बे हटि कऽ हमरो नैहर अछि।''
चमेलीक बात सुनि दूबीक मुँहसँ छोड़ैत नव पत्ती (पात) जकाँ हृदैमे भेल। अपन तीस बर्ख पहिलुका जिनगीमे ओ -चमेली- डूबि गेलीह। मुँह शिथिल भऽ गेलनि, जइसँ किछु आगूक बकार नै निकललनि। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथिक लेल घरवारीक रहब अनिवार्य बूझि खूँटा जकाँ ठाढ़ रहली। बेरा-बेरी हमहूँ सभ पएर धोय-धोय चौकीपर बैसए लगलौं। जहिना देवालयमे दर्शकक नजरि एकाएकी मुरती सभपर पड़ैत तहिना चमेलीक आँखि हमरा सभपर नाचए लगलनि।
घुमि कऽ अबिते चेथरू पत्नीकेँ कहलखिन- ''जलखइ नेने आउ। रस्ताक झमाड़ल सभ छथि। भूख लगल हेतनि।''
हमहूँ सभ बेरा-बेरी कुर्रा कऽ बैसलौं। चंगेरा भरि मुरही, नोन-मिरचाइ आंगनसँ आनि चमेली बीचमे रखि देलनि। जलखइ देखि चेथरू बजलाह- ''अहाँ सभ जाबे जलखइ करब ताबे छिड़ियेलहा काज सभ समेटि लइ छी।'' कहि एकटा छिट्टा आ हँसुआ नेने बाड़ी दिस चेथरू आ आंगन दिस चमेली बढ़लीह। कातिक मास रंग-बिरंगक तरकारीसँ सजल चौमास। बिना तजबीज केनहि चेथरू आठो-नवो रंगक तरकारीक छिट्टा आंगनमे रखि, लगमे आबि बैसलाह। बैसिते कहलियनि- ''अपन इलाकाक जेहना खेती-पथारी उपटि गेल तहिना मालो-जाल। मुदा बिना बड़दे खेती केना करितौं। तँए एलौं। सुनै छी जे ऐ इलाकाक लोक अपना इलाकाबलाकेँ कहै छथि जे अपन कमाएल रुपैया लऽ कऽ एलौं आकि बाप-दादाक, से ठीके छिऐ?''
हमर बात सुनि चेथरू तरे-तर हँसए लगलाह। मुदा अपनाकेँ दुनू ठामक पाबि कनी काल गुम रहि बजलाह- ''खिस्सा-पिहानी अहिना लोक जोड़ती-जोड़ि बना लइए। एहनो-एहनो बात हुअए। कोने धरती कर्मभूमिसँ धर्मभूमि बनैत अछि। देखै छी जे गामोमे दिल्ली-बम्बइसँ घुमि कऽ आएल कनियाँ सभ अतिथि-अभ्यागतकेँ ओतुक्के चालि-ढालिसँ स्वागत करै छथि तँ एहनो

सभ छथि जे केरल-मद्रासमे रहितो गाम-घर जकाँ स्वागत करै छथि। हम-अहाँ भैयारी भेलौं। तँए भैयारी जकाँ दुख-धंधाक गप-सप्प करू।''
चेथरूक विचारसँ मन खनहन भऽ गेल। हृदए बाजि उठल जे सहारा भेटल। अखन तँ धान फुटबे कएल, जखन पाकत तँ बीओ-बालि लऽ जाएब। ऐठामक बड़दो अपना ऐठामक बड़दसँ सक्कतो होइ छै आ बेसी दिन जीबो करै छै। अपना ऐठामक माल गदियाह भऽ गेल। ऐठाम ठनक जमीनक माल निरोग अछि। चुप्पा-चुप्पी देखि पुछलियनि- ''अहाँ केना ऐठाम आबि गेलौं?''
हमर बात सुनि चेथरूक मन पसिझि गेलनि। गपकेँ आगू नै बढ़ा बजलाह- ''भानसो भऽ गेल हएत। अहूँ सभ थाकल छी। जखन बड़द कीनए एलौं तँ हेबे करत। कोनो की अनतऽ एलौं। अपन घर छी। पाँच दिनमे इलक्को घुमा कऽ देखा देब। मन मोताबिक बड़दो कीनि देब।''
चेथरूक बात सुनि हुँहकारी भरैत बजलौं- ''हँ, हँ, से तँ ठीके। देस-कोस ने बदलैए। मनुक्ख तँ मनुक्खे रहैए कि ने।''
खेला-पीला बाद संगी सभ नीनसँ सुति रहलाह। मुदा अपना नीने ने हुअए। आधा घंटा बाद चेथरू खा-पी, मालक घरक घूर सरिया, खाइले दऽ बड़का बाटीमे शुद्ध तोड़ीक तेल नेने आबि बजलाह- ''सुति रहलौं।''
आरो गोटेक साँसे कहैत जे सुतल छी। बजलौं- ''नै, जगले छी।''
हमरा लग आबि चेथरू तेलक बाटी बढ़बैत कहलनि- ''थाकल-ठहिआएल छी, पएरमे तेल औंसि लिअ।''
दहिना हाथ तेलमे डुबा बजलौं- ''भऽ गेल। एकरे मिला लइ छी। रखि दियौ।''
एकेठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलियनि- ''ऐठाम एना कत्ते दिन भेल?''
कनी काल चुप रहि चेथरू बजलाह- ''जहिना बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक (टिप्पणि दुआरे) बेटा-बेटी जनमोक ठेकान नै रहैत तहिना हमहूँ छी। अंदाज पच्चीस बर्खसँ उपरे भेल हएत?''
''ऐठाम बेसी नीक लगैए आकि ओइठीन (मधेपुर)?''
''प्रश्न सुनि चुप भऽ गेला। जहिना दुबट्टी-तिनबट्टीपर पहुँचि अपन रस्ता लोक हियाबए लगैत तहिना चेथरूओ हियाबए लगला। उठि कऽ तमाकू थुकड़ि आबि बैस बाजए लगलाह- ''जतऽ बसी वएह सुन्दर। भने अखन दुइये भाँइ जागल छी। अपन गाम मन पड़ैए तँ छाती दहलि जाइए। बाबाक रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। बाबाक कहल सभ बात तँ मन नै अछि मुदा गोटे-गोटे मन अछि। कहने छलाह जे केना अपन गाम बसल आ अखन

धरि केना परिवार चलैत रहल। दैवी चक्र एहेन चलल जे बिगड़ैत-बिगड़ैत एते बिगड़ि गेल जे वास होइ जोकर नै रहल।"

कहैत-कहैत हिचुकी उठए लगलनि। गरा -कंठ- बझए लगलनि। चुप होइत देखि पुछलियनि- "से की? से की?"

आंगुरसँ अपन मौसाक घर दिस देखबैत बजलाह- "हमरा अबैसँ पहिने ऐठाम मौसा एला।"

मौसाक नाओं सुनि पुछलियनि- "ओ किअए एला?"

चेथरू- "आब तँ अपने नै छथि बेटा छन्हि। वएह ऐठामक गाम-परधान छी। ओकरा दुआरपर पाँचटा धरम बखारी (धान रखैबला) छै। सौंसे गौआँ बेर-बेगरता लए धान जमा केलक। साले-साले बढ़बैत गेल। अखन तते जमा भऽ गेल अछि जे जेकरा (गामक लोककेँ) जते बेगरता होइ छै ओ ओते लइए आ पीठक-पीठ आपस करैए।"

मुँहसँ निकलि गेल- "वाह! अच्छा, ओ किअए एला?"

चेथरू- "मौसाकेँ अनटेटल गप आ अन्ट-सन्ट काज पसिन्न नै छलनि। सोभावे ओहने छलनि। जेकरा चलैत चारि-पाँच बेर गौआँ सभ मारलकनि। अंतिम मारिमे बेसी चोट लगलनि। मन टूटि गेलनि। जहिना एक घटनासँ कियो बैरागी बनि जाइत तँ कियो अपराधी, कियो निरमोही बनि घर-परिवार छोड़ि दैत तँ कियो सिंह सदृश गर्जन करैत रहैत अछि। तहिना गामक मोह छोड़ि खेत-पथार बेचि चलि एला।"

"अहाँकेँ की भेल?"

"कोनो एक्के गाम ओहन अछि। हमर गाम तँ आरो बेसी बिगड़ि गेल। एक दिस महाजनक अतियाचार तँ दोसर दिस खेत-पथारक बेइमानी-शैतानी। बलजोरी अपन नम्हर खेतमे छोटका खेतक आड़ि तोड़ि जोइत लैत। तहिना चोराइयो आ देखाइयो कऽ खेतक जजात गाए-महींससँ चरा लैत। आम तोड़ि लैत, दोसराक माए-बहिनक इज्जत-आबरूपर हाथ बढ़बैत तँ आगि-पानि ढाठि भगैक लेल उड़ी-बिड़ी लगबैत। सिन्ह काटि-काटि घरक वस्तु-जात लऽ भगैत तँ बिना किछु बजनौ दसटा बात-कथा कहि दैत।"

चेथरूक बात सुनि, जहिना भूम्हुर आगिक धुआँ निकलैत अछि तहिना लहड़ल हृदैक गर्म सांस निकलल। पुछलियनि- "शुरूमे (एलापर) तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?"

"नै। अपना तीन कट्ठा खेत रहए। दू सए रूपैये कट्ठा बेच लेलौं। घरो बेच लेलौं। खाली अपन देहक कपड़ा आ रुपैया लऽ कऽ मौसे ऐठाम एलौं। वएह दस कट्ठा खेतो कीनि देलनि, एकटा घरो बना देलनि आ कहलनि जे जइ चीजक बेगरता हुअ, से लिहह। घरक बिचला खूँटा जकाँ

ठाढ़ भऽ गेला। आब तँ अपने सभ किछु भऽ गेल। जाबे सासु-ससुर जीबै छलाह ताबे सासुर जाइ छलौं, मामा-मामी धरि मात्रिक। बहिन-बहनोइ ऐठाम जाइते छी। ओहो सभ अबिते अछि।''
चेथरूक बात सुनि मन औनाए लगल। कछ-मछी आबि गेल। कहलियनि-
''नीनसँ देह भसिआइए। बड़ राति भऽ गेल। अहूँ सुतैले जाउ।''
''एतै ने हमहूँ सूतब।''

पाँच दिन मेहमानी केलौं। छठम दिन बड़द नेने गामक रस्ता धेलौं।

:::::::::

२० कत्तौ नै

चारि-पाँच बर्खसँ जनकपुरक बिआह पंचमी देखैक विचार मनमे उठैत रहल मुदा माए कहैत छेलीह- ''अखन बाल-बोध छह कतौ हरा-तरा जेबह।''
माइक बात नीक नै लगाए। हुअए जे जहिना गाम-घरमे लोक नै हराइए तहिना ओतौ किअए हराएत? ई नै बुझियै जे ओइठीन दूर-दूरक लोक देखए अबैए, जइसँ भीड़-भाड़ बढ़ि जाइ छै। भीड़े-भाड़मे बालो-बोध आ चेतनो हराइत अछि। चौदहम बर्ख टपिते पनरहम शुरूहेँमे अगहन इजोरियाक पंचमी आएल। गामक लोकमे मेला देखैक सुन-गुनी शुरू भेल एक्के-दुइये सौंसे गाम पसरि गेल। एक गामक कोन बात सगतरि भेल। हमहूँ सुनलौं। माइक बात मन पड़ल। भलहिं भोट खसबै जोकर नै भेलौं मुदा बालो मजदूर जोकर तँ नै रहलौं। हराइयो जाएब तँ की हेतै? अपन खेबा-खरचा ने तीन्हिये दिनमे सधि जाएत मुदा तैयो तँ कमाइत-खटाइत, खाइत पीऐत दस दिन पछातियो तँ आबिये जाएब। आशा जगल। बिसबास बढ़ल। माएकेँ कहलियनि- ''गामक लोक उनटि कऽ जा रहल छथि, हुनके सभ सेने हमहूँ जाएब।''
माए किछु बजली नै। एतबे बजली- ''नुआ-बस्तर खीच लिहह।''
माएक बात सुनि बिसबास भऽ गेल। मनमे उठल- टिकुला बीआ जकाँ थोड़े खिच्चा छी, भलहिं पाकल जकाँ सक्कत आँठी नै भेलौं मुदा कोशाएल जकाँ तँ जरूर सकता गेल छी।

अगुआएल-पछुआएल दुआरे गामक बीच यात्रीक गिनती नै भेल। ओना गिनतीक महत बुझबो ने करिऐ। गामक सिमानपर पहुँचिते अगिला यात्री रुकि कऽ पछिला सभकेँ हाथक इशारासँ शोरो पाड़थिन आ आँखि उठा-उठा देखबो करथि। हमहूँ पहुँचलौं। पतराइत रस्ता देखि गिनती हुअए लगल। मर्द-औरत मिला सत्ताइस गोरे भेलौं। गिनतीमे सभसँ उमेरगर सुचिता दादी रहथि। बजलीह- ''सभ कियो सुनि कऽ कान धड़ब। तीर्थ-वर्त करए जाइ छी तँए रस्ता-पेरामे ककरो कोनो चीज बौस नै छूबै, झूठ-फूस बाजि ककरो ठकबै नै। भाए-बहिन जकाँ सभकेँ बुझबै आ कियो अगुआ-पछुआ जाएब तँ ठाढ़ भऽ कऽ संग करैत चलब।''
दादी गप्पक असरि भेल। सभसँ कम उमेरक रही। बिना कहने-सुनने कफलाक टहलू बनि गेलौ। दादी सुचिताकेँ कहलियनि- ''दादी, अपन कम्मे

समान एक अढ़ैया चूड़ा आ कपड़ा झोरामे अछि, अहाँकेँ भारी लगैत हएत, लाउ नेने चलै छी।"

बात सुनि दादी छिट्टा भरि असिरवाद दैत अपन मोटरी देलनि। मोटरीक संग दादी अपन पुरना खेरहा सभ कहैत चलए लगलीह- "बौआ, अहिना कुशेसर जाइत रही। तीन बर्खसँ नियारैत रही घरमे गाइक घी पड़ल रहै। केना चौदह कोस डेढ़े दिनमे चलि गेलौं से बुझबे ने केलिऐ। तइ दिनमे समरथाइयो रहए।"

"कतऽ-कतऽ गेल छिऐ दादी?"

कनी काल गुम रहि मन पाड़ि बाजए लगली- "अपन गामक तीनू स्थान- दछिनमे कुशेसर, पूबमे सिंहेसर आ उत्तर- पच्छिम जनकपुरक बीचमे पड़ैए। कनिये रस्ताक तड़पट हेतै। हँ, तँ कहए लगलियह, अहिना आठ-नओ गोटेक कफलामे सिंहेसर स्थान विदा भेलौं। अखन तँ चढ़न्त जाड़ अछि मुदा शिवरातिक समए जाड़ फटए लगैत छैक। सबहक विचार भेल जे घोघरडीहा तक टेनसँ जाएब, फेर सुपौल तक पएरे जाएब आ सुपौलसँ बस पकड़ि जाएब।"

बिच्चेमे पुछलियनि- "कोसी धार सेहो टपए पड़ल हएत कि ने?"

"हँ, हँ। पहिने टेनक बात सुनि लएह। जखन गाड़ीमे चढ़लौं तँ खाली सीट सभ देखलिऐ। दुनू कातक सीट मिला कऽ तीन-चारि गोरे बैसल रहै। हमरो सभकेँ जगह भऽ जाएत। मुदा तेहन ऐंठल सभ रहै जे नहिये बैसए देलक। पुरुख सभसँ मुँह केना लगैबतौं। सभ स्त्रीगणे रही।"

"किअए ने बैसए देलक?"

"तेहन-तेहन छुद्दर पुरुख सभ भऽ गेल अछि जे ककरोमे पुरुखपाना छइहे नै। अपना अइठीनक पुरुख अनको माए- बहिनकेँ अपन बुझैत अछि। ओइ इलाकाक थोड़ै बुझै छै। ठाढ़े भेल घोघरडीहा तक गेलौं। निच्चामे बैसबो करितौं से तते सिकरेट-बीड़ीक अधजरुआ टुकड़ी आ चिनियाँ बदामक खोंइचा रहै जे बैसैक परपन नै भेल।"

"मोटरी की केलिऐ?"

"मथेपर रखने गेलौं। ऊपरका सीटपर गेंड़ा जकाँ दूटा मुनसा सुतल रहै किन्नो नै मोटरी रखए देलक। जखन कोसी धारमे नओपर चढ़लौं तखन फेर घटवारक संगे कहा-कही हुअए लगल। मुदा बाबापर सुरति लगा कहुना पहुँचि गेलौं।"

स्टेशन पहुँचिते गप-सप्प बन्न भेल। गाड़ी आएल। सभ कियो चढ़ि गिनती कऽ जयनगर पहुँचलौं। जयनगर प्लेटफार्म यात्रीसँ भरल। तिल रखैक

जगह नै। मुदा एते बिसबास भऽ गेल जे एते दूर देखलो भइये गेल। आब तँ बालो-बोध नहिये छी जे बिसरि जाएब। जँ कहीं छुटियो जाएब आकि हराइयो जाएब तैयो घुरि कऽ गाम चलिये जाएब।

नेपालक गड़ियो छोट आ इंजिनो कमजोर मुदा तैयो निच्चा-ऊपर लादि यात्रीकेँ पहुँचाइये दैत अछि। गाड़ीमे चढ़ै-दुआरे कत्ते यात्री एक स्टेशन पएरे चलि उनटामे चढ़ि पहुँचैत छथि। मुदा सीमा कखैन टपलौं से बुझबे ने केलौं। लोको एक्के रंग आ बोलियो तहिना। जनकपुर पहुँचि गेलौं।
यात्री देखि मन उधिआ गेल। मन मानि गेल जे ऐ भीड़मे कतौ जरूर हराइये जाएब। मुदा लोकक भीड़मे लोक अपनाकेँ हराएल केना बुझत। सभ तँ लोके छी। सबहक मुँहमे बोलो अछिये। सभ तीर्थे करए आएल छथि तखन हराइक प्रश्न कत? मुदा तैयो मन थरथराइते रहए। फेर भेल जे हराएब तखन ने, आ जँ नै हराइ। तइले अनेरे चिन्ता किअए करै छी। खाइत-पिबैत एक फेरा लगबैत तीन बजि गेल। बिआहक प्रकरण तँ रातिमे हएत मुदा बिआह होइक कारण तँ धनुष टुटब अछि। तँए पहिने धनुखा जाएब उचित हएत। घुमैत-फिरैत एक ठाम बैस सभ विचारए लगलौं। बिआह प्रकरण देखए एलौं अखन धरि बरिआतियो पछुआएले अछि। पछुलके धरमशल्लामे अॅटकल अछि। ऐठाम अबैमे चारि-पाँच घंटा लागत। से नै तँ अपनो सभ ताबे धनुखासँ भऽ आबी। एक स्वरमे विचार भेल। बसक भाँजमे विदा भेलौं। सभ आगू-आगू हम आ दादी पाछू-पाछू। यात्रीकेँ देखबैत दादी बजलीह- “बौआ, तूँ ने अखन तक दोसर कोनो स्थान (तीर्थ) नै गेल छह। मुदा हम तँ बहुत ने देखने छिऐ।”
एते बात सुनिते मनमे भेल जे दादी कोनो ठेकनगर बात कहए चाहैत छथि। हुँहकारी दैत कहलियनि- “हँ से तँ ठीके। अखन हमरा भेबे की कएलहेँ, जनमि कऽ ठाढ़ भेलौंहेँ।”
आगू दादी बजलीह- “देखहक ई स्थान भगवान राम आ सीताक छियनि। अयोध्यावासी राम आ मिथिलाक जनकक कन्या सीता तँए दुनूक मिलन स्थल छी। तँए देखै छहक जे सभ रंगक यात्रियो अछि आ स्त्रीगण-पुरुखमे बेराओल हेतह जे पुरुख बेसी अछि आकि स्त्रीगण। तहिना देखै छहक जे सभ रंगक मुँह-कानबला यात्री अछि। ककरो मान-अपमानक बात अछि। मुदा आन-आन स्थानमे से कहाँ देखबहक। जहिना एकचलिया लोक तहिना एकचलिया चालि।”

मैक्सीपर बैस सभ धनुखा विदा भेलौं। घंटा भरि लगैत-लगैत धनुखा पहुँचि गेलौं। गाड़ीक ड्राइवर आ खलासी उतरि देखबए विदा भेल। मंदिरक हाताक भीतर पहुँचिते ड्राइवर बाजल- "भगवान राम जे धनुष तोड़लनि ओ तीन टुकड़ी भऽ गेल। एक टुकड़ी एतै खसल। सएह स्थान छी। देखै छिऐ धनुषेक टुकड़ी छिऐ कि ने?"

दर्शन केलौं। सबहक विचार भेल जे बिना किछु खेने-पीने आ सनेस नेने कोनो जाएब। हमहूँ चाह पीब पान खेलौं आ हनुमानी बद्धी कीनि कऽ गरदनिमे पहिरि लेलौं। किरिन डुमि गेल। मुदा ककरो धड़फड़ी नै। किएक तँ घंटा भरि जाइमे लागत आ आठ बजेमे बरियाती दुआर लागत।

गाड़ी चलल। करीब चारि माइल आगू बढ़ल आकि अपने ठाढ़ भऽ गेल। पंचमीक चान, ओसेसँ घेराएल। झल-अन्हार। गाम-घर कतौ ने देखिऐ। बीच पाँतरमे गाड़ी रुकल। ड्राइवरो आ खलासियो रिन्च-हथौरी निकालि ठोक-ठाक शुरू केलक। हमहूँ सभ गाड़ीसँ उतरि देखए लगलिऐ। ठोकि-ठाकि ड्राइवर गाड़ीमे बैस चलबए चाहे तँ चलबे ने करै। फेर उतरि कऽ ठोकै मुदा फेर ओहिना होय। समए बीतल जाए। मोबाइल देखि ड्राइवर बाजल- "आठ बजल।"

दुआर लागबक समए बूझि सुचिता दादी बजली- "कतऽ एलौं, तँ कतौ ने?" मन हुअए जे कहिऐ- पाइ घुमा दैह। दोसर गाड़ीसँ चलि जाएब। इजोरियो डूबि गेल। दिसम्बरक अंतिम समए तँए जाड़ो बढ़ैत जाए। मुदा सभकेँ ओढ़ना रहबे करै, ओढ़ि लेलौं। होइत-हबाइत भोरमे गाड़ी ठीक भेल। घुमि कऽ जनकपुर एलौं। ताबे बिआहक सभ प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल छल। रतुका जगरनासँ यात्रियो सभ ओंघाएल। हमहूँ सभ तहिना रही।

यात्री सभ ट्रेन पकड़ि घुमए लगलाह। हमहूँ सभ नहा कऽ एक बेर सौंसे मेला घुमि, डोरि-सिन्नुर आ सनेस कीनि आबि खेलौं आ गाड़ी पकड़ैले विदा भेलौं। भरि बाट दादी रटैत रहली- "कतए एलौं, तँ कत्तौ नै। कतए एलौं, तँ कत्तौ नै। कतए एलौं, तँ कत्तौ नै।"

:::::::::



जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म ५ जुलाइ १९४७। गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (दीर्घकथा संग्रह-शंभुदास; लघुकथा संग्रह १.गामक जिनगी, २. अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि; आ तरेगन -बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह); नाटककार [(१.मिथिलाक बेटी, २.कम्प्रोमाइज, ३.झमेलिया वियाह आ ४.पंचवटी (एकांकी-संचयन)]; उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत) आ कवि (१.इन्द्रधनुषी अकास, २.गीतांजलि आ ३.राति-दिन)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी, लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ क मूल पुरस्कार, आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; आ बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल बाल साहित्यक विदेह सम्मान २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।
